चन्दु मेनन

टी० सी० शंकर मेनन

H
891.48123
C 361 M

भारतीय साहित्य के निर्माता

H
891.48123
C361M

चन्दु मेनन

लेखक
टी० सी० शंकर मेनन

अनुवादक
ला० सहदेव

साहित्य अकादेमी

Chandu Menon : Hindi translation by L. Sahdev of T. C. Sankara Menon's monograph. Sahitya Akademi, New Delhi (1981), SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15·00

© साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

Library IIAS, Shimla
H 891.48123 C 361 M
00087464

प्रथम संस्करण : १९८१

H
891.481 23
C361M

प्रधान कार्यालय :
साहित्य अकादेमी
रवीन्द्र भवन, ३५, फ़िरोज़शाह रोड, नई दिल्ली-११०००१

क्षेत्रीय कार्यालय :
ब्लाक V-बी, रवीन्द्र सरोवर स्टेडियम, कलकत्ता-७०००२९
२९, एल्डाम्स रोड, तेनाम पेट, मद्रास-६०००१८
१७२, मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग, दादर, बंबई-४०००१४

SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15·00

87464
26-6-86

मुद्रक : रूपक प्रिंटर्स, दिल्ली-११००३२

समर्पण

अपने माता-पिता की
पुण्य-स्मृति में

साहित्यकुशलन टी० के० कृष्ण मेनन
और
साहित्यसखि टी० सी० कल्याणि अम्मा

विषय-सूची

	लेखक की ओर से	७
१.	चन्दु मेनन	९
२.	मलाबार का सामाजिक ढांचा	२३
३.	मलयालम के प्रारम्भिक उपन्यास	३१
४.	इन्दुलेखा	३७
५.	इन्दुलेखा—एक अध्ययन	४४
६.	शारदा	५७
७.	शारदा—एक अध्ययन	६६
८.	इन्दुलेखा और शारदा	७३
९.	समापन	८१
	टिप्पणियाँ	९१
	संदर्भ ग्रंथ	९४

लेखक की ओर से

मैं साहित्य अकादेमी का आभारी हूँ, जिसने मुझे चन्दु मेनन के विषय में यह पुस्तक लिखने का निमन्त्रण देकर सम्मानित किया।

वह एक रोचक व्यक्ति थे, वतौर एक लेखक, अधिकारी और वतौर एक इन्सान। जब हम उनके बारे में जानना शुरू करते हैं, तो हम में से कुछ लोग उनके बारे में और जानना चाहेंगे। लेकिन जब हम इस दिशा में पूछताछ प्रारम्भ करते हैं तो हमें निराश होना पड़ता है, क्योंकि उनके बारे में अधिक जानकारी प्राप्य नहीं है। खैर, अब शायद बहुत देर हो गई है। वैसे भी चन्दु मेनन की मृत्यु हुए सत्तर वर्ष बीत चुके हैं। इतने समय बाद अब उनके बारे में किसी नई जानकारी के मिलने की कोई उम्मीद नहीं है।

अतः इस पुस्तक में लिखे उनके जीवन के इतिहास में ऐसी कोई नई बात नहीं है जो पहले छप न चुकी हो। इसका आधार वे सूचनाएं हैं जो उन पुस्तकों से मिली हैं जिनके नाम इस पुस्तक के अन्त में दिए गए हैं और जो अब भी प्राप्य हैं। सिवाय दो के बाकी सभी मलयालम में हैं और उनका लाभ सिर्फ मलयालम जानने वाले पाठक ही उठा सकते हैं।

चन्दु मेनन ने सिर्फ एक पूर्ण उपन्यास लिखा **इन्दुलेखा** और दूसरा उपन्यास **शारदा**, जिसे वह तीन भागों में लिखना चाहते थे, का सिर्फ एक ही भाग लिख पाए। इन्दुलेखा मलयालम में १८८९ में प्रकाशित हुआ, और इसका अंग्रेजी अनुवाद १८९० में प्रकाशित हुआ, जिसे 'नागरिक सेवा' के श्री जान विलोबाई फ्रांसिज ड्यूमर्ग ने अनूदित किया था। **इन्दुलेखा** मलयालम का पहला ऐसा उपन्यास है जिसे पढ़कर एक अंग्रेज व्यक्ति उसका अनुवाद करने की उत्कंठा को रोक नहीं पाया। मैं अक्सर सोचता हूँ कि इतने वर्षों में मलयालम में जो इतने सारे उपन्यास लिखे गए हैं, क्या उनमें से कोई भी ऐसा उपन्यास है जिसने किसी अंग्रेज या अन्य किसी विदेशी को अनुवाद करने के लिए इतना प्रेरित किया हो। चन्दु मेनन ने ड्यूमर्ग को **इन्दुलेखा** की एक प्रति के साथ एक अत्यन्त ही रोचक पत्र लिखकर भेजा था। अनुवाद के साथ ही वह भी प्रकाशित हुआ है। अपनी

प्रस्तावना में ड्यूमर्ग कहता है कि चन्दु मेनन ने अंग्रेजी अनुवाद काफी ध्यान से पढ़ा और इच्छानुसार फेरवदल भी किए। अतः यह कहा जा सकता है कि अनूदित संस्करण को लेखक की सहमति प्राप्त थी। इस पुस्तक में इन्दुलेखा के उद्धृत अंश ड्यूमर्ग के अनुवाद से लिए गए हैं। इस अनुवाद का दूसरा संस्करण १९६५ में मातृभूमि पब्लिशिंग कम्पनी, कालिकट, केरल ने प्रकाशित किया था।

जहाँ तक मेरी जानकारी है **शारदा** का अंग्रेजी में अनुवाद नहीं हुआ है। अतः मैंने यह आवश्यक समझा कि जहाँ तक चन्दु मेनन ने यह कहानी लिखी है उसका सारांश इस पुस्तक में दे दिया जाए। अतः पुस्तक में दिए गए **शारदा** के हिस्से मूल मलयालम से मेरे द्वारा अनुवाद किए हुए हैं और अगर कोई भी हिस्सा मूल रचना के साथ न्याय करने में असमर्थ है तो उसका दोषी मैं हूँ।

जब इस पुस्तक की पाण्डुलिपि मैंने तैयार कर ली तब महाराजा कालेज, एरणाकुलम के प्रोफेसर पी० बालकृष्णन नायर ने काफी ध्यान और सब्र के साथ उसको पूरा पढ़ा, हालांकि यह आसान काम नहीं था। हम दोनों के बीच हुआ विचार-विमर्श मेरे लिए काफी लाभदायक रहा, विशेषतः पाठकों का दृष्टिकोण समझने की दृष्टि से। बाद में टंकित पाण्डुलिपि का अवलोकन श्री पी० डी० एन० मेनन (केरल उच्च न्यायालय के अवकाशप्राप्त न्यायाधीश) एवं श्री वी० वी० के० मेनन (केरल राज्य सरकार के अवकाशप्राप्त चीफ सेक्रेटरी) ने किया और इस विनिबन्ध को बेहतर बनाने के लिए आप सबने जो महत्वपूर्ण सुझाव दिए उसके लिए मैं आप सबका आभारी हूँ।

देवी निवास
थेवारा रोड
कोचीन-१६

टी० सी० शंकर मेनन
१४ दिसम्बर, १९७१

लम्बे उद्धरणों के लिए पाद टिप्पणियों में दिए गए पृष्ठ संकेत, ड्यूमर्ग के **इन्दुलेखा** के अनुवाद के दूसरे संस्करण के हैं जिसे मातृभूमि पब्लिशिंग कम्पनी लिमिटेड, कालिकट-१, केरल ने प्रकाशित किया है।

चन्दु मेनन

'तुमने मेरा उन दोस्तों से परिचय कराया
जिन्हें मैं जानता भी नहीं था।
तुमने मुझे उन घरों में जगह दी
जो मेरे अपने नहीं।
तुमने उन्हें जो दूर थे।
करीब ला दिया और
अजनबी को
भाई बना दिया।'

—टैगोर

प्रस्तुत है कहानी एक मार्गदर्शक की, जिसके मलयालम साहित्य को एक नई दिशा प्रदान की।

मलयालम केरल के लोगों की भाषा है जहां पढ़े-लिखे लोगों की प्रतिशत संख्या (दिल्ली को छोड़कर) भारत के सभी राज्यों से अधिक है। मलयालम भारत की चौदह भाषाओं में से एक है और संस्कृत तथा तमिल से करीब से जुड़े हुए भी अपनी अलग विशिष्टता लिए है। आधुनिक मलयालम भाषा युगों के ऐतिहासिक विकास का फल है। इसने अपना आज का स्वरूप सत्रहवीं शताब्दी में हासिल किया जिसे सामने लाने का श्रेय तुंचन्तु एळुन्तच्छन् को है जो 'मलयालम साहित्य के पिता' माने जाते हैं। आज का मलयालम साहित्य लेखन की प्रत्येक विधाओं जैसे कि गद्य, कविता, नाटक इत्यादि में समृद्ध परम्पराएं लिए है और जो लगातार प्रगति की ओर अग्रसर है।

अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य की तुलना में मलयालम साहित्य के आपेक्षिक स्तरों की जानकारी हेतु शायद यह उल्लेखनीय होगा कि १९६९ में जो पहली वार 'भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्रदान किया गया, तो इसका श्रेय मिला महाकवि जी० शंकर कुरुप के एक मलयालम कविता संग्रह को। ज्ञानपीठ पुरस्कार किसी भी भारतीय भाषा की सर्वोत्तम लेखनी को दिया जाने वाला सर्वश्रेष्ठ भारतीय पुरस्कार है। इसके अलावा, अपनी विशेपता और विशाल आकर्पण के कारण कई मलयालम रचनाओं (गद्य एवं कविता) का अंग्रेजी एवं अन्य भाषाओं में अनुवाद किया जा चुका है।

ऐसे अनुवादों में (जो शायद प्राचीनतम भी हैं) मलयालम उपन्यास 'इन्दुलेखा' का अंग्रेजी अनुवाद है जो १८९० में किया गया। मूल मलयालम रचयिता थे राय वहादुर चन्दु मेनन और अनुवादक एक अंग्रेज नागरिक जे० डब्ल्यू० एफ० ड्यूमर्ग ।'इन्दुलेखा' के रचयिता कोई व्यावसायिक लेखक न होकर अदालत के एक अधिकारी थे जिन्होंने अपनी पत्नी और चन्द दोस्तों के मनोरंजन हेतु ही इस कहानी की रचना की। खैर, जल्द ही यह कृति उस समय की अत्यंत लोकप्रिय रचना हो गई और पारखियों ने समझ लिया कि 'इन्दुलेखा' मलयालम साहित्य के लिए वेशकीमती भेंट है।

२

लेखक के पिता श्री एडप्पाडि चन्दु नायर (१८०५-१८५७) भी न्यायिक अधिकारी थे। उनका जन्म पिणरायि अंशम् के केलालूर देसम में हुआ जो उत्तर केरल के कोट्टयम तहसील का एक उपभाग है। इस इलाके में स्कूली सुविधा दुर्लभ थी। किन्तु चन्दु नायर ने मलयालम में शिक्षा ग्रहण की और अंग्रेजी भाषा का भी थोड़ा वहुत ज्ञान अर्जित किया।

वह तलश्शेरी की कलेक्टरी में सरकारी सेवार्थ प्रविष्ट हुए। वरिष्ठ अधिकारियों ने उनकी उत्कृष्ट योग्यताओं एवं प्रतिभा को पहचाना और उन्होंने तरक्कियां हासिल कीं। १८३७ में वह मजिस्ट्रेट बने। तीन वर्ष बाद वह तहसीलदार हो गए और मलावार की कई जगहों पर काम किया।

उन्होंने दो शादियां कीं। उनकी दूसरी पत्नी कोडुंगल्लूर के पास ही चिट्रेपन्तु परिवार की पार्वती अम्मा थीं। इनसे उन्हें पांच सन्तानें हुईं। चन्दु मेनन

सबसे छोटे थे। उनका जन्म ९ जनवरी १८४७ को हुआ।*

दस वर्ष बाद, १८५७ में मधुमेह (डायब्टीज) में ५२ वर्षीय चन्दु नायर को मौत ने बांहों में भर लिया।

जब चन्दु नायर तळश्शेरी में तहसीलदार थे। तो उन्होंने वहीं जमीन ले ली और स्थायी घर बना लिया। इस सम्पत्ति का नाम था ओय्यारत्तु। चूंकि चन्दु मेनन यहीं पल कर बड़े हुए, शायद इसी से उनका नाम औय्यारत्तु चन्दु मेनन पड़ गया।

वह केवल दस वर्ष के थे जब उनके पिता का देहान्त हो गया। उनका पालन-पोषण मां पार्वती अम्मा की माता के आंचल में हुआ। बालक चन्दु ने अपनी प्रथम शिक्षा कोरन गुरुक्कल नामक एक पड़ोसी से प्राप्त की। उसके बाद पंडित कुंजम्बु नम्बियार उनके अगले गुरु बने जिन्होंने उसे संस्कृत कविता, नाटक और व्याकरण की शिक्षा दी। साथ ही शुरू में एक स्थानीय स्कूल से अंग्रेजी की शिक्षा पाई और बाद में श्री के० कुंजन से अंग्रेजी का ज्ञान पाया जो उस समय तळश्शेरी सिविल कोर्ट में अंग्रेजी अनुवादक थे और धीरे-धीरे उप-न्यायाधीश बने। चन्दु ने स्कूली शिक्षा 'बसेल मिशन पारसी मेमोरियल स्कूल' में प्राप्त की। इसी दौरान उन्होंने अप्रतित लोक-सेवा की परीक्षा उच्च श्रेणी में उत्तीर्ण की। साथ ही उसने अपनी पढ़ाई जारी रखी। १८६४ में उसकी मां का निधन हो गया। उस समय वह दसवीं कक्षा में पढ़ता था। और उसने स्कूल छोड़ दिया।

*श्री पी० के० बालाकृष्णन चन्दु मेनन पर अपनी पुस्तक में उनका जन्म १८४५ में हुआ बताते हैं (पृ० २१३, संस्करण १९७१)। श्री पी० के० परमेश्वरम नायर ने अपने 'मलयाला साहित्य चित्र म' में कहा है कि उनका जन्म १८४६ में हुआ (पृ० ११८, संस्करण १९५८)। 'शारदा' उपन्यास के साथ ही संलग्न चन्दु मेनन की संक्षिप्त जीवनी में श्री पाला नारायणन नायर ने मलयालम तथा अंग्रेजी दोनों सम्वतों के अनुसार विवरण देते हुए 'बाईसवां धनु, १०२२ (१८४६)' को उनकी जन्म तिथि बताया है (पृ० २२३, एन० बी० एस० संस्करण १९५९)। चन्दु मेनन के एक मित्र एवं जीवनी लेखक ने केवल धनु माह की बाईसवीं तिथि, संवत् १०२२ का हवाला दिया है। इस तिथि को ही विश्वसनीय माना जाना चाहिए क्योंकि इसे चन्दु मेनन के व्यक्तिगत मित्र ने दिया है। ऊपर दी गयी मलयालम तिथि के अनुरूप अंग्रेजी तिथि है ९ जनवरी १८४७।

३

चन्दु मेनन सत्रह वर्ष की आयु के हुए। उन्होंने सोचा कि अब उन्हें काम ढूंढ़ना चाहिए। उन्होंने तळश्शेरी में ही 'छोटे मामलों की कचहरी' में क्लर्क की नौकरी के लिए दरख्वास्त दे दी। न्यायधीश श्री टी० आर० शार्पे जिन्होंने चन्दु की योग्यताओं का जायज़ा लेने हेतु साक्षात्कार किया, उनसे बेहद प्रभावित हुए। तुरन्त ही चन्दु मेनन की नियुक्ति तळश्शेरी सिविल कोर्ट में छठे क्लर्क के पद पर कर दी गई। वहां लगभग तीन वर्ष काम कर चुकने पर उनकी असाधारण योग्यताओं ने उस वक्त के सब-कलक्टर लोगन साहब का ध्यान आकर्षित किया। लोगन ने स्वयं के लिए उनकी सेवाएं प्राप्त करने की इच्छा व्यक्त की। तबादले की मंजूरी मिल गई और लोगन ने चन्दु मेनन को अपने दफ्तर में तीसरे क्लर्क का पद सौंपा। वहां जल्द ही वे प्रथम क्लर्क बने और १८७१ में कालिकट सचिवालय में हैड मुंशी का पद हासिल किया। कहते हैं कि 'मलाबार डिस्ट्रिक्ट मैनुअल' (जो एक उत्कृष्ट ग्रंथ माना जाता है) को तैयार करने में चन्दु ने लोगन की काफी सहायता की।

न्यायाधीश शार्पे यकीनन अपने रंगरूट की प्रगति पर निगरानी रखे हुए थे। यहां तक कि जब वह १८७२ में जिला न्यायाधीश की हैसियत से कालिकट आए, तो उन्होंने चन्दु मेनन को बुलाया और सिविल कोर्ट में हैड क्लर्क नियुक्त कर दिया।

१८७५ चन्दु मेनन के लिए बहुत महत्वपूर्ण साबित हुआ क्योंकि अब उन्हें क्लर्की की जिंदगी से छुटकारा मिल गया। उसके काम से खुश होकर इस वर्ष सरकार ने उन्हें पट्टाम्बी में कार्यकारी मुंसिफ बना दिया और अविलम्ब इसी पद पर स्थायी भी कर दिया। मंचेरी, पालघाट ओट्टप्पाळम और कालिकट आदि कई जगहों पर उन्होंने मुंसिफ का ओहदा सम्भाला। १८८६ से १८९२ तक वह परप्पनंगाडी में जिला मुंसिफ बना रहा और यहीं, १८९० में आपने अपना महान् उपन्यास 'इंदुलेखा' प्रकाशित किया। मेनन ने जहां कहीं भी काम किया, अपने वरिष्ठ अधिकारियों का प्रशंसा पात्र बने रहे। हम एक तरह से यह भी अनुमान लगा सकते हैं कि लोगन और शार्पे चन्दु मेनन की सेवाएं पाने हेतु प्रतिस्पर्धी थे। जब कि कई अन्य लोग, जैसे ड्यूमर्ग और डेविड्स उनके बुद्धिमत्तापूर्ण कार्य के प्रशंसक थे। याद रहे कि वे चन्दु मेनन से कहीं वरिष्ठ अधिकारी थे। वे अंग्रेज थे

और वे दिन थे ब्रिटिश साम्राज्यवाद के जिसकी कोई मिसाल नहीं हो सकती। इन अधिकारियों द्वारा चन्दु को पसंद किए जाने की मात्र यह वजह नहीं थी कि वे दूसरों की अपेक्षा वेहतर क्लर्क या श्रुतलेखक थे। वल्कि उन्हें चन्दु मेनन के अंदर अपार विद्वत्ता, पैनी नजर और साथ ही विलक्षण वुद्धि, चतुर मूल्यांकन की क्षमता, विचारों की मौलिकता एवं अभिव्यक्ति की सहजता आदि गुणों का आभास मिला होगा। उन्होंने जरूर अपने कार्यकौशल का प्रदर्शन करते हुए सफल जिला मुंसिफ एवं वेहतरीन विद्वान और मलाबार में कानून और रीति-रिवाजों के व्याख्याता का सवूत दिया होगा। क्योंकि १८६० में जव 'मलाबार विवाह आयोग' की नियुक्ति हुई तो सर टी० मुत्तुस्वामी और सर सी० शंकरन नायर जैसे प्रतिष्ठित व्यक्तियों के साथ-साथ चन्दु मेनन को भी इसका सदस्य मनोनीत किया गया। आयोग को मरुमक्कन्तायम* परिवारों की वैवाहिक पद्धति एवं उसमें जरूरी संशोधनों के वारे में रिपोर्ट देने का काम सौंपा गया था। १८६१ में जब रिपोर्ट आई तो अधिकांश सदस्यों ने इस पद्धति में सुधार का समर्थन किया। लेकिन चन्दु मेनन ने इससे असहमति प्रकट करते हुए अपने नोट में लिखा कि समय से चले आ रहे रीति-रिवाजों और रूढ़ियों को बदलना ठीक नहीं। उन्होंने मरुमक्कत्तायम परिवारों* की वैवाहिक पद्धति का विस्तृत विश्लेषण दिया और कहा कि इसे बरसों पुराने स्थानीय रीति-रिवाजों की पवित्रता एवं प्रामाणिकता हासिल है और अगर किसी सुधार की जरूरत है तो वह वस यह कि इस पद्धति को वाकायदा कानूनी तौर से मान्य एवं प्रतिष्ठित समझा जाए। हालांकि कई मसलों में सर शंकरन नायरन और चन्दु मेनन के विचारों में मतभेद था, लेकिन सर मुत्तुस्वामी अय्यर के विचारों से चन्दु मेनन के विचारों की एक आम सहमति झलकती थी। असहमति की वह टिप्पणी जो काफी चर्चा का विषय वनी, समस्याओं के प्रति चन्दु मेनन के स्वतंत्र दृष्टिकोण, विचारों की दृढ़ता एवं आत्मविश्वास का परिचायक थी। यहां पर यह भी उल्लेखनीय है कि मद्रास सरकार ने भी इस पद्धति में सुधार के वजाय इसे कानूनी मान्यता प्रदान करने का सुझाव दिया था।

चन्दु मेनन की योग्यताओं की कदर करते हुए सरकार ने १८६२ के अंत तक तिरुनेलवेली में उप-न्यायाधीश बना कर भेज दिया। यहीं उन्होंने अपने दूसरे उपन्यास 'शारदा' की शुरुआत की जिसे वे पूरा नहीं कर पाए। कुछ ही महीनों बाद, १८६३ में उप-न्यायाधीश के पद पर स्थायी घोषित करके उन्हें मेंगलौर

स्थानान्तरित किया गया। वहां रहते अभी देर नहीं हुई थी कि उन्हें लकवे का प्रहार हुआ और छुट्टी लेनी पड़ी। तभी 'शारदा' की रचना में विघ्न आन पड़ा। फिर काम पर लौटते ही उनकी नियुक्ति १८९६ में कालिकट में कर दी गई।

मलयालय साहित्य में चन्दु मेनन की ख्याति और प्रतिष्ठा के आधार स्तम्भ बस 'इन्दुलेखा' और 'शारदा' ही हैं। उनके साहित्यिक प्रदर्शन की सीमा यहीं खत्म नहीं होती। वे केरल वर्मा वलिय कोविल तम्पुरान की कविताओं के भरपूर प्रशंसक थे। यहां तक कि उन्होंने तम्पुरान के 'मयूर सन्देशम' को भूमिका के साथ अपने खर्चे से प्रकाशित किया और उसकी प्रतियां अपने मित्रों में वांटीं। कुंजि शंकरन नम्वियार की 'नरि चरित्रम' (टाईगर हिस्ट्री) नामक एक कविता का प्रकाशन भी उन्होंने अपने पैसों से किया और उसके लिए प्रस्तावना लिखी। अपने सिद्धात के अनुसार वे कभी अखबारों में नहीं लिखते थे। श्री पी० के० परमेश्वरन नायर की 'आधुनिक मलयालम साहित्य' से हमें उनकी अन्य साहित्यिक सरगर्मियों के वारे में जानकारी मिलती है। उनके दो अंग्रेजी भाषण, एक 'प्राचीन काल में न्याय व्यवस्था' के वारे में है और दूसरा 'सर टी० मुत्तु-स्वामी अय्यर मेमोरियल कमेटी' के तत्वावधान में दिया गया था। दोनों पुस्तकाकार प्रकाशित हुए हैं।

सभी उच्चाधिकारीगण जानते थे कि चन्दु मेनन एक विलक्षण प्रतिभा वाले और कुशल अधिकारी थे। 'पीटर सिद्धांत' के लिए एक अपवादस्वरूप उन्नति के हर कदम के साथ वे अपनी क्षमता की छाप छोड़ते जाते। यह भी पता चला है कि १८९२ में इंग्लैण्ड के प्रधानमन्त्री डब्ल्यू० ई० ग्लैडस्टोन से चन्दु मेनन को एक पत्र मिला। चन्दु मेनन ने अपने उपन्यासों 'इन्दुलेखा' और 'शारदा' के प्रकाशन से मलयालम साहित्य; और तद्द्वारा भारत की जो सेवा की है उसके प्रति महारानी विक्टोरिया की प्रशंसा इस पत्र में व्यक्त की गई थी।

भारत सरकार ने १८९७ में उन्हें राय वहादुर की उपाधि से सम्मानित किया। १८९८ में मद्रास विश्वविद्यालय ने उनकी योग्यताओं को सम्मान देते हुए कानून की डिग्रियों के लिए परीक्षक नियुक्त किया। तत्पश्चात् उन्हें विश्वविद्यालय का फेलो मनोनीत कर सम्मान दिया।

मेनन की मृत्यु अप्रत्याशित रूप से ७ सितम्बर, १८९९ को हुई। बृहस्पतिवार का दिन था और दोपहर का समय। उस रोज और दिनों की अपेक्षा वे

थोड़ा पहले ही कचहरी से घर लौटे। कुछ नाश्ता किया और आरामकुर्सी पर बैठे विश्राम कर रहे थे। एक पुराने वकील मित्र उनसे मिलने आए थे। वे लोग किन्हीं कानूनी मुद्दों पर बातचीत कर रहे थे। मेनन ने कुछ अस्वस्थ-सा महसूस किया और वह अपने सोने के कमरे की ओर जाने को हुए। किन्तु रास्ते में ही उनके कदम लड़खड़ा गए और अचानक पास ही के एक पलंग पर लेट गए। बस इतना ही···और एक महान जीवन की यात्रा यहीं समाप्त हो गई।

४

वह अपने परिवार में अपनी पत्नी और छह बच्चों को छोड़ गए। उनका विवाह १८७२ में हुआ था। तब वह पच्चीस वर्ष के थे। कन्जोली परिवार की तेरह-वर्षीय लक्ष्मी कुट्टी अम्मा उनकी पत्नी बनी। लक्ष्मी कुट्टी के पिता वाराचल परिवार के कृष्ण मेनन मध्य केरल में इरिंजालकुडा स्थित कूडल-माणिक्कम मंदिर से संबद्ध अधिकारी थे और मां कन्जोली परिवार की लक्ष्मी अम्मा थीं। चन्दु मेनन और लक्ष्मीकुट्टी अम्मा के पांच पुत्र और एक पुत्री थीं। जब लक्ष्मीकुट्टी अम्मा का देहान्त हुआ, वह लगभग ६७ वर्ष की थीं। वह सुसंस्कृत और साहित्य में रुचि रखने वाली महिला थीं। संगीत का अच्छा ज्ञान था। चन्दु मेनन के प्रति प्रेमपूर्ण स्नेह और उनकी रुचियों एवं प्रतिभा की उपयुक्त समझबूझ से वे अपने पति के लिए समुचित और प्रेरणाप्रद साथी साबित हुईं। मलयालम साहित्य-प्रेमी उसे 'श्रेष्ठ व्यक्ति' या 'दोस्त' या फिर 'अत्याचारी' के रूप में जरूर याद रखेंगे जिसकी अत्यन्त सम्मोहक किन्तु अप्रतिरोध्य अनुनय ने उसके पति को एक मनोहर उपन्यास 'इन्दुलेखा' लिखने को मजबूर किया। ड्यूमर्ग (इस उपन्यास के अंग्रेजी अनुवादक) को लिखे एक पत्र में चन्दु मेनन ने इस उपन्यास के लिखने के कारणों का जिक्र करते हुए कहा: "पहला अंग्रेजी शैली में अपनी मातृ भाषा में लिखा गया उपन्यास पढ़ने की मेरी पत्नी की अदम्य इच्छा।

अपने दोस्तों एवं परिवार वालों से चन्दु के सम्बन्ध सौहार्दपूर्ण थे। दिल-चस्प और मन को छू लेने वाले मेनन का व्यक्तित्व अत्यन्त मोहक था। नैतिक एवं शारीरिक दोनों दृष्टियों से वे बड़े आकर्षक थे। गौर वर्ण मेनन, कद में छः

फुट से भी ज्यादा किन्तु सन्तुलित विशालकाय शरीर लिए हुए थे। मेरे सामने तस्वीर में सफेद पगड़ी पहने जिससे उनकी लम्बाई करीब छः इंच बढ़ गई है, खुला कोट पहने हैं, हालांकि टाई नदारद है। टाई की कमी के अतिरिक्त कुछ और है जो उनकी पोशाक में असंगत-सा है। उन्होंने न केवल कोट को बटनों से बांध रखा है, बल्कि कमर को एक फीते से कस रखा है। किसी अक्लमन्द ने फिकरा कसा है कि जो पतलून को पेटी और गेलिस दोनों से जकड़ कर रखता है वह निराशावादी होता है। हमारे चन्दु मेनन महोदय कोट में (जो पतलून से ज्यादा गौण वस्त्र है) बटनों के साथ कमरबन्द भी कसे रहते हैं। लेकिन वे कतई कठोर निराशावादी नहीं थे। तस्वीर में उन आंखों और होंठों से सख्ती और दृढ़ निश्चय जरूर झलकते नजर आ सकते हैं। लेकिन कहीं गहरे में विनोद-शीलता का भण्डार भरा है उनमें, जो उच्चकोटि के परिहासों से फूट-फूटकर बह निकलता है। परिहास चाहे उनके खिलाफ रचे हों चाहे उनके द्वारा। उत्तम विनोदवृत्ति के बिना 'इन्दुलेखा' जैसी दिलचस्प कहानी लिख पाना उनके लिए असम्भव ही होता। उनके कुछ विनोदी चुटकुलों का रसास्वादन केवल मलयालम भाषा जानने वाले ही कर सकते हैं। जैसे एक बार एक मित्र ने चन्दु मेनन से उनकी पुत्री के बारे में पूछा। वे बोले कि उसे उन्होंने 'पाट्टम्' पर दे दिया है। उनकी बेटी का विवाह 'पाट्टत्तिल्' परिवार के न्यायमूर्ति नारायना मेनन से हुआ था। मलयालम में 'पाट्टम्' का अर्थ होता है 'किराया'। चन्दु मेनन का मतलब अपनी बेटी को 'पाट्टत्तिस् परिवार की वधू बनाने से था या कि उसे 'किराए' पर देने को ? कुछ भी कह लीजिए। जैसे आपकी मर्जी !

उनके मजाकों के ऐसे भी कई उदाहरण हैं जो शब्दों से खिलवाड़ के परे हैं और इनका आनन्द मलयालम न जानने वाले भी उठा सकते हैं। हमें यह तो मालूम ही है कि चन्दु मेनन का शरीर काफी लम्बा-चौड़ा था। उनकी एक बड़ी-सी तोंद भी थी। एक बार किसी दर्जी के यहां से एक लड़का उनके कोट का नाप लेने आया। मेनन की कमर के घेरे को देखते हुए उस लड़के को अकेले उसका नाप लेने में दिक्कत नजर आई तो उसने मेनन से कहा, "श्रीमन आप जरा टेप का सिरा यूं पकड़कर रखिए, मैं दूसरी तरफ से घूमकर आता हूं।" अगर उनकी जगह कोई और होता जिसका परिहास की दुनिया से कोई सरोकार न हो, तो उसके मुंह पर एक तमाचा जड़ देता। लेकिन चन्दु मेनन के साथ ऐसा नहीं था और वे लड़के के भोलेपन को समझ गये। जब उन्होंने उस लड़के की निष्कपट

प्रार्थना सुनी तो वे हंसते-हंसते लोट-पोट हो गये। और उन्होंने उस लड़के को एक रुपये का इनाम भी दे डाला।

लेकिन एक अन्य ब्राह्मण आगन्तुक के भाग्य में यह नहीं वदा था। उसे आर्थिक मदद चाहिए थी। उसने चन्दु मेनन को वताया कि वह संगीतकार है और वायलिन वजाना जानता है। "चलिए, कुछ सुनाइए।" चन्दु मेनन ने कहा। आगन्तुक जव दो या तीन गीत गा चुका तो वे अचानक बोले, "वस, अव वायलिन।" संगीतकार महोदय अभी वायलिन के सुर साधने में लगे थे कि मेनन ने उन्हें वायलिन अलग रखने को कहा और पूछा कि उनका घर कहां है। आगन्तुक ने जगह का नाम वताया। मेनन का अगला सवाल था, "वहां के लिए रेल से कितना किराया लगता है?" "चौदह आने।" उन सज्जन ने जवाव दिया। मेनन ने अपने नौकर को वुलाकर आदेश दिया, "इस ब्राह्मण को चौदह आने दे दो।" नौकर चला गया लेकिन शीघ्र ही लौटकर सूचना दी कि छुट्टे पैसे नहीं हैं। तब मेनन ने उसे एक रुपया लेकर उस संगीतकार के साथ जाने को कहा और हिदायत दी कि छुट्टे पैसे कराकर इस ब्राह्मण को ठीक चौदह आने दे दे। मेनन की विनोद वृत्ति का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि उन्होंने उस संगीतकार की योग्यताओं का मूल्य आंकने में चौदह आने से अधिक एक पाई की भी भूल नहीं की।

उनकी विनोदशीलता में कभी-कभी साहस का पुट भी मिलता है। 'ढोलकिए का मुकदमा' चन्दु मेनन के नाम से जुड़ा एक मशहूर किस्सा है जो काफी सनसनीखेज सिद्ध हुआ। इसकी वजह उस मुकदमे की तफ़सील न होकर चन्दु का मुकदमे से निपटने का निराला ढंग ही था। जिन दिनों चन्दु मेनन कालिकट में उपन्यायाधीश थे, एक सज्जन श्री डेविड्स वहां के जिला न्यायाधीश हुआ करते थे। वे दोनों अपनी-अपनी कचहरियां वरावर सटे हुए कमरों में लगाया करते थे। डेविड्स के वारे में यह प्रसिद्ध था कि जव उनकी कचहरी लगी हो तो वातावरण में शान्ति होनी चाहिए और किसी भी कीमत पर कचहरी की कार्यवाही की प्रतिष्ठा पर कोई आंच नहीं आनी चाहिए। इस मामले में वे वड़े तुनुकमिजाज और दृढ़ थे। गुस्सा उन्हें सहज-सुलभ था और सभी कर्मचारी उनसे खौफ खाए रहते। चन्दु मेनन ने सोचा कि उन्हें सवक सिखाना चाहिए और वे वस किसी मौके की ताक में ही थे कि एक दिन उनकी कचहरी में एक मुकदमा आया। किसी ढोलक वजाने वाले को शिकायत थी कि एक समारोह में उसने

ढोलक वजाई और मालिकों ने उसे दूसरी श्रेणी के ढोलकिए के हिसाव से दाम दिए जवकि और सभी जगह उसे प्रथम श्रेणी के पैसे मिलते थे। मेनन की वुद्धि खटाखट काम कर गई। 'ढोलकिए को मिले इन्साफ और डेविड्स को सवक।' मुकदमे की जवानी कार्यवाही विधिवत् समाप्त करने के वाद उन्होंने आवेदक को आदेश दिया कि वह यहीं, इसी वक्त अपनी कला का पूरा प्रदर्शन करे। ढोलकिए का कला प्रदर्शन, काम में व्यस्त डेविड्स की शान्ति को चीर गया और वे चिढ़ गए। मेनन ने उनसे कहा, "मैं फैसला देने से पहले उसके कला-कौशल के वारे में संतुष्ट होना चाहता था।" विनोदशील डेविड्स इस स्पष्टीकरण से ज़ोर से हंसने लगे और मेनन की प्रशंसा करते हुए वोले, "तुम निराले जज हो।"

इस घटना का महत्व समझने के लिए इस पर थोड़ा विचार करने की आवश्यकता है। एक चिड़चिड़ा यूरोपियन जज पूरी संजीदगी और शान से अपने कमरे में कचहरी लगाए वैठा है जिसे जरा-सी हलचल और सरसराहट तक गवारा नहीं। दूसरी तरफ मात्र एक भारतीय उप-न्यायाधीश विना किसी वात की परवाह किये वगल के कमरे में कानों को चीर देने वाले ढोल का प्रदर्शन करवा रहा है। दुनिया भर में न्यायपालिका के इतिहास में ऐसी घटना न घटी होगी। याद रहे कि उस वक्त ब्रिटिश राज के शान्तिपूर्ण दिनों में ऐसी घटनाएं भारतीयों की ओर से होने वाली शरारतें थीं। इससे हम चन्दु मेनन की हिम्मत और स्वतन्त्र खयाली का सही अन्दाज लगा सकते हैं। यकीनन, उन्होंने जो तरक्कियां और खिताव हासिल किए, इसका कारण जी-हजूरी नहीं था।

एक वार किसी रईस परिवार में माननीय अतिथि भोजन का आनन्द ले रहे थे। वातचीत का रुख अधिकारियों के भ्रष्टाचार की ओर हो गया था। किसी ने वस यूं ही कह दिया कि भई सभी अफसर घूस खाते हैं। अतिथियों की ओर से अलग-अलग मतों की वौछार होने लगी। मेनन ने यह सव सुना। अचानक उनकी ऊंची पूरी प्रभावशाली आकृति अपनी जगह से उठ खड़ी हुई। मेनन चिल्ला कर बोले, "यहां देखिए, जिसने कभी रिश्वत नहीं ली, ओय्यारत्तु चन्दु।" और फ़िर अचानक वैठकर फौरन पूरी संजीदगी से अपने सामने रखे पकवान पर जुट गए। कुछ क्षण के लिए अतिथिगणों को लज्जा और स्तव्धता ने घेर लिया। उन्होंने देखा कि चन्दु मेनन खूव मजे से खाने पर ऐसे हाथ साफ करने में मशगूल हैं जैसे कुछ हुआ ही नहीं। अचानक उस स्थिति के परिहास का प्रकाश उन पर छा गया और वहां हंसी के फव्वारे छूट पडे। अपने मजाक की डोर अतिथियों के हाथ

लगते ही मेनन का शरारतपूर्ण कनखियाना और उनके होंठों की रेखाओं से बहती शरारतपूर्ण मुस्कान की कल्पना कर पाना कठिन नहीं है।

चूंकि वह स्वयं साफ दिल थे, इसलिए दूसरों से भी यही अपेक्षा करते थे। चन्दु मेनन से मिलने आए एक नौजवान आगन्तुक की कथा है। यह नौजवान दिखने में सामान्य और काफी अच्छे कपड़े पहने था किन्तु चन्दु मेनन के लिए एकदम अजनबी था। जब मेनन ने उसे बैठने का आग्रह किया तो वह फौरन बैठ गया हालांकि आम तौर पर सुसंस्कृत आचरण वाला कोई भी नौजवान पहले शायद थोड़ा हिचकिचाता। मेनन ने जब उसके आने का कारण पूछा तो उसने सीधे कहा, "मैं आपके पास यह प्रार्थना लेकर आया हूं कि अगर आप मुझे चरित्र प्रमाणपत्र दे सकें तो मैं आपका आभारी हूंगा।" एक अजनबी से इस प्रकार की प्रार्थना को गुस्ताखी कहा जा सकता था और मेनन को गुस्सा आ सकता था। लेकिन उन्होंने उस नौजवान से बात की, जरूरी सवाल आदि पूछे और उसका काम कर दिया। इस पर किसी दोस्त ने उनसे पूछा कि बिना जान-पहचान के आप किसी को ऐसा प्रमाणपत्र कैसे दे सकते हैं। वे और क्या कहते, बोले : "यह यह कितना स्पष्टवादी है। देखो, बातों को इसने कितने निष्कपट और सरल ढंग से रखा और वह पूरे विश्वास के साथ मेरे पास आया था कि मैं उसका काम कर दूंगा।"

उन्होंने जज डेविड्स के कंजूसपन का मजाक उड़ाकर उस संगीतकार को उदार धन का आनन्द लेने दिया। पर मासूम दर्जी के लिए उदारता और साफ-दिल नौजवान के प्रति सहानुभूतिपूर्ण आचरण था उनका। उनकी साहित्यिक कृतियों में दिए विवरणों में उनकी साफदिली और हास्य प्रतिभा का पता चलता है। 'शारदा' में 'वकीलों का क्लब' नामक एक मशहूर दृश्य है। वहाँ जमा हुए वकीलों के मुंह से वे उन बड़े-बड़े उपन्यासों का मजाक उड़ाते हैं जिनसे भावात्मक आकर्षण तो होता नहीं पर हाँ जटिल कथानक से पाठक उलझ कर जरूर रह जाता है। वह अक्सर केरल वर्मा वलिय कोयिल तम्पुरान द्वारा अंग्रेजी से मलयालम में अनुवादित 'अकबर' नामक एक डच उपन्यास पर खूब फिकरे कसा करते थे। केरल वर्मा ने अपने अनुवाद में कठिन संस्कृत पदों से ओत-प्रोत मलयालम भाषा का प्रयोग किया है, शायद एक महान सम्राट के बारे में लिखी गई पुस्तक की शान बढ़ाने के लिए। हालांकि एक सामान्य आदमी के लिए वो भले ही बोझिल लगे या उनकी समझ से परे रहे। जबकि चन्दु मेनन यह मानते थे कि

उपन्यास की सही भाषा वही है जो पढ़ने में सरल और प्रसिद्ध हो। कहते हैं कि वे केरल वर्मा की पुस्तक खोल कर बैठ जाते और किसी मित्र को उसमें से पढ़ कर कुछ वाक्य सुनाते हुए अक्सर हंसने लगते और अज्ञानता का बनावटी लबादा ओढ़े पूछते, "अच्छा, इस शब्द का अर्थ क्या है?" उनका मत था कि "अकबर की प्रत्येक मलयालम प्रति के साथ एक प्रति संस्कृत-मलयालम शब्दकोश की संलग्न होनी चाहिए। याद रहे कि उस समय केरल वर्मा केरल के 'साहित्य चक्रवर्ती' और अपने समय के मलयाली लेखकों में वरिष्ठतम थे। लेकिन उन्हें केरल वर्मा की कविताओं से अत्यधिक प्रेम था। विशेषकर 'मयूर सन्देशम' से। घर में शाम को आराम के समय वह 'मयूर सन्देशम' और उनकी अन्य प्रिय कविताओं की पंक्तियों के पाठ का भरपूर आनन्द लेते। वह कहते थे कि केरल वर्मा की कविताओं से उन्हें अपार सुख मिलता है जैसे अंधेरे में गुम हो जाने के बाद कहीं से रोशनी की बाढ़ चली आई हो। इससे पता चलता है कि चन्दु मेनन की एक खास साहित्यिक रुचि थी। साथ ही उनमें हास्य प्रतिभा भी थी। वह उदारता से अच्छी चीजों की प्रशंसा करते, लेकिन व्यक्ति के कारण नहीं, और जो उनके स्तरों से परे की चीज हो तो उसकी खूब भर्त्सना भी करते। वह ऐसा इसलिए कर पाए क्योंकि उनके पास एक दृढ़ विश्वास और साहस था।

इसके अलावा 'इन्दुलेखा' को लोगों के सामने रखते वक्त उनकी नम्रता भी देखने लायक है। उन्होंने भूमिका में लिखा, "मैं नहीं जानता कि मेरे देश के लोग इस किस्म के काम के प्रति क्या रवैया रख पाएंगे। जो लोग अंग्रेजी नहीं समझते, उन्हें इस ढांचे की कहानियाँ आदि पढ़ने का अवसर तो मिला नहीं होगा; पता नहीं इस प्रकार के साहित्य को पढ़ने में आनन्द ले पाएंगे अथवा नहीं।" उन्होंने यह माना: "हालांकि इस किताब के माध्यम से मैं सफल उपन्यासों के लिए आवश्यक किसी कलात्मक उत्कृष्टता का दावा नहीं कर रहा हूँ और यदि मेरे पाठकगण मेरे बारे में ऐसा समझें तो मुझे बेहद दुःख ही होगा।" हमें यह न भूलना चाहिए कि 'इन्दुलेखा' जिस गति से बिकी, वह उस समय की मलयालम पुस्तकों के लिए एक रिकार्ड था।

उनकी इस नम्रता में कहीं भी शर्म अथवा निष्क्रियता की छाप तक नहीं थी। कहा जाता है कि जब वह मात्र 'जूनियर क्लर्क' थे तो वह कम दक्षता और कम उत्साह वाले अपने साथियों के मुकाबले अपना दिन भर का सारा काम कहीं पहले ही निपटा लिया करते थे। शान्ति से वह बैठे-बैठे अपने वरिष्ठ अधि-

कारियों के जाने की प्रतीक्षा करते। उसके वाद वह अपनी मेज का तवला वनाकर कथकली गीत गाते। इससे उन धीमी गति से काम करने वाले क्लर्कों को असुविधा होती, जो अभी तक काम में माथा-पच्ची कर रहे होते। इस पर कुछ तो तंग आकर अपना काम वन्द कर देते और कुछ चन्दु मेनन की इस कर्कशता में शामिल हो जाते। हाँ, पर कोई भी उन्हें नापसन्द नहीं करता था और सभी इस शरारती के प्रति उदारता दरशाते। वह निष्क्रियता और संकोच नहीं वल्कि जिन्दादिली और सक्रियता से परिपूर्ण थे।

पाठक जान गए होंगे कि चन्दु मेनन कथकली साहित्य से परिचित थे। संस्कृत, मलयालम और अंग्रेजी साहित्य पढ़ना भी उनके शौक में शामिल था। उन्हें किताबें पढ़ने का अच्छा-खासा चस्का था। उन्हें अपने कुछ निकटस्थ दोस्तों का साथ वड़ा ही प्रिय था। वे दोस्त भी चन्दु मेनन की बातचीत करने, पाठ करने, तवला और कहानी सुनाने की अद्‌भुत कला का खूब आनन्द लेते। हालांकि उन्हें संस्कृत का अच्छा ज्ञान था और इस भाषा की काफी कद्र भी करते लेकिन साथ ही इसकी कमियों का एहसास भी उन्हें था। उनके विचार में संस्कृत एक यशस्वी भाषा थी लेकिन इसका प्रयोग अधिकांशतः इतिहास के पन्नों में छिपे हमारे गौरव को जानने के लिए और अलंकृत, रूमानी अभिव्यक्ति सीखने के लिए किया जाना चाहिए। वह मानते थे कि अंग्रेजी का ज्ञान अत्यावश्यक है यह जानने के लिए कि दुनिया में क्या-क्या हो रहा है जो वदलते हालात में वेहतर जीवन की जानकारी के लिए जरूरी है।

चन्दु मेनन को कथकली से वेहद प्यार था। वह इसके हिमायती भी थे और पारखी भी। जव भी आस-पास के मन्दिरों में कोई मण्डली आती तो वह उन्हें अपने घर वुलाकर प्रदर्शन कराते। उन्हें कुछ नाटकों के कुछ दृश्य वेहद प्रिय थे। वह अक्सर मण्डलियों से उन्हीं का अभिनय करने को कहते। यदि प्रदर्शन के दौरान कहीं भी संगीत अथवा अभिनय का स्तर चन्दु मेनन के वांछित स्तर से मेल न खाता तो वह पल भर की देरी न करते। सीधे अभिनेताओं को बन्द करने के लिए कहते और उनके पैसे आदि चुका कर उन्हें वापस भेज देते। और अगर कहीं प्रदर्शन अच्छा होता तो वह उन्हें पूरा समय देते और अन्त में दिल खोल कर इनाम भी देते। कुन्जु कर्त्ता नामक कथकली के नर्तक उनके प्रिय थे। कुन्जु थोड़े सनकी भी थे। वह आदतन असंगत वातें छेड़ते। आगे क्या कहेंगे, कह पाना असम्भव होता। 'ग्रीन रूम' में उनके हाथों को बांध कर रखना पड़ता था ताकि

वह अपने मेक-अप से छेड़-छाड़ न करे। लेकिन उसके वाद जव वह दर्शकों के सामने आता, तो एकदम वदले हुए इन्सान के रूप में। असल में प्रदर्शन शुरू होने से वस जरा पहले ही उसे नाटक और उसके पार्ट की जानकारी दी जाती। फिर भी उसका चरित्र-चित्रण उत्कृष्ट वनता था और अभिनय श्रेष्ठ। चन्दु मेनन के मन में कुन्जु कर्त्ता के लिए प्रशंसा ही प्रशंसा भरी थी। एक वार उसका प्रदर्शन देखते हुए वह वोल उठे, "जरा रोको।" फिर उन्होंने राजकीय दिन की कीमत का हिसाव लगाया और उसके वरावर चांदी के रुपए उसी वक्त गिनकर कुन्जु कर्त्ता की हथेली पर रख दिए। कर्त्ता की प्रतिभा की भरपूर प्रशंसा करने वाले चन्दु मेनन के मन में उस अनुभवी कलाकार के वेमानी सनकीपन को अनदेखा करने की उदार भावना भी थी।

जव उनका देहान्त हुआ तो लोगों को लगा कि उनके वीच से वहुमुखी प्रतिभा वाला हंसमुख एवं एक उत्तम इन्सान उठ कर चला गया। ऐसा इन्सान जिसके लिए उनके मन में आदर था, स्नेह था।

वर्ष वीतते गए और उनकी किताबों ने उन्हें उन दोस्तों के करीव ला दिया जिन्हें वह जानते नहीं थे। उन घरों में भी स्थान मिला जो उनके अपने नहीं थे। दूर के लोग भी करीव आ गए और जो अजनवी थे, भाई हो गए।

"दुनिया के इस मेले में
जो मुझे मिला निमन्त्रण
मेरा जीवन धन्य हुआ
आँखों ने देखा
कानों ने सुना
इस मेले में अपना
संगीत छेड़ना
ही मेरी भूमिका थी
और जो कुछ भी मैं कर सकता था
मैंने किया।"

—टैगोर

मलाबार का सामाजिक ढांचा

"विभिन्न पात्रों के माध्यम से मैंने विभिन्न सामाजिक स्तर के नायर लोगों और नम्बूदरियों तथा पट्टर ब्राह्मणों आदि का चित्रण किया है।"

(चन्दु मेनन के एक पत्र से उद्धृत)

चन्दु मेनन की कथाओं की घटनाओं और चरित्रों के वेहतर विश्लेषण के लिए मलावार के समसामायिक सामाजिक ढांचे के वारे में थोड़ी-सी जानकारी देना जरूरी है। जहाँ अलग-अलग जातियों के लोग हैं, मलाबार के ब्राह्मण हैं जिन्हें **नम्बूदरी** भी कहा जाता है, **पट्टर** अथवा तमिल ब्राह्मण हैं, और तुलु ब्राह्मण जो **एम्ब्रान** के नाम से भी जाने जाते हैं। इसके अलावा अ-ब्राह्मण भी हैं जैसे कि **नायर** जाति के लोग जो काफी महत्वपूर्ण गुट है, वे हैं **वारियर** और **कणियान**। अ-हिन्दू भी उस जनसंख्या का एक वड़ा हिस्सा है लेकिन चन्दु मेनन की कथाओं में उनकी भूमिका क्षीण ही है।

नम्बूदरी ब्राह्मण उच्चतम जाति के माने जाते हैं। शायद ये परशुराम के साथ आकर केरल में वसे हुए लोग थे। पौराणिक गाथा के अनुसार परशुराम ने समुद्र से केरल का उद्धार किया और पहले नम्बूदरियों को बसाया। उन्नीसवीं शताब्दी में वहाँ के लोग अधिकांशतः रईस जमींदार जीवन का आनन्द लेते हुए और भविष्य की चिन्ताओं से वेफिक्र। पेशे के नाम पर वे ज्यादा से ज्यादा मन्दिरों में पुजारी का काम करते या फिर किसी शाही या सामन्ती खानदान से सम्वद्ध होते। उनका मुख्य पेशा धर्म, ज्ञान और आनन्द होता। उनके निवास स्थान को **इल्लम** कहा जाता था जो मेहमाननवाज़ी और मनोरंजन प्राप्ति के केन्द्र थे। **पाठशालाओं** अथवा स्कूलों में, जो **इल्लम** से सम्बद्ध होते थे, संस्कृत और धार्मिक ग्रन्थों की निःशुल्क शिक्षा दी जाती थी और **ऊट्टुपुराओं** अर्थात् भोजनालयों में मुफ्त खाना दिया जाता था। मनोरंजन हेतु एक कथकली मण्डली या निपुण '**पाठकम्**'[1] होता। कुछ नम्बूदरी संस्कृत के अच्छे विद्वान थे। इसके

१. कहानी कहने की कला।

अलावा उनकी और रुचि न के बराबर थी। इसलिए सादगी उनके जीवन का अंग बन गयी और दूसरों के लिए मजाक उड़ाने का स्रोत। हास्य की उनकी एक अपनी ही परम्परा भी थी। चूंकि नम्बूदरी एक कुलीन जाति मानी जाती थी दूसरी जाति के लोग, जैसे नायर, उनसे बात करते वक्त एक खास भाषा का प्रयोग करते। इतना ही नहीं उनसे सम्बन्ध रखना एक गौरव की बात समझते। 'इन्दुलेखा' में रईस पूवल्ली तरवाड कहता है, "नम्बूदरीपाद महान हैं, हालांकि बेवकूफ हैं और इससे विवाह करना हमारे परिवार के लिए गौरव की बात होगी।" नम्बूदरी जाति के लोग सहर्ष ही दूसरी जाति की औरतों को अपनी पत्नी बना लेते थे। क्योंकि उस समय उन लोगों के लिए ऐसे मेल-जोल में कोई उत्तरदायित्व नहीं रहता था। सिर्फ बड़े लड़के को ही अपनी जाति में विवाह करने का सौभाग्य मिलता। आज सब कुछ बदल चुका है और नम्बूदरी जाति के लोग विभिन्न पेशों में लगे हैं। भारत में भी और बाहर भी, और उनकी औरतों (अन्तर्जनम्) को भी पहले से कहीं अधिक आजादी और अधिकार प्राप्त हैं।

'शारदा' का तुलु एम्ब्रान जो कोप्पुण्णी अच्चन के रोष से भागते हुए शंकरन को भोजन देता है, वह ब्राह्मण है। तुलुनाड केनरा में स्थित है। इन्हें लगभग नम्बूदरियों का-सा सम्मान प्राप्त था। पर पूरी तरह से नहीं जैसा कि सूरी नम्बूदरीपाद की शादी में दी गई दक्षिणा की राशि से पता चलता है, 'सभी ब्राह्मणों को चार-चार आने और नम्बूदरियों को आठ-आठ आने दिए जाएंगे।' **एम्ब्रान** मलाबार में आकर बस गए और मन्दिरों में पुजारी बन जीविकोपार्जन करने लगे। **पट्टर** जाति के लोगों को ऐसे अवसर बस गिनती भर को ही मिलते।

पट्टर तमिल जिलों के ब्राह्मण थे। **पट्टर** संस्कृत शब्द **भट्ट** का बिगड़ा हुआ रूप है। हालांकि कुछ **पट्टर** कई पीढ़ियों से केरल में रहते आए हैं लेकिन उनकी घरेलू भाषा तमिल ही है और उनका पहनावा भी, विशेष तौर पर औरतों का, तमिलनाडु के लोगों जैसा ही है। ये लोग नौकरी अथवा व्यापार की तलाश में आए और सामन्ती परिवारों में खाना बनाने, मैनेजरी, व्यापार अथवा साहूकारी का काम करने लगे। कुछ ने नायर औरतों से वैवाहिक सम्बन्ध बनाए। वे उत्साह और लगन के साथ काम करने की क्षमता से पूर्ण थे। दौलत जमा करने की इच्छा से कुछ ने अनुचित ढंग अपना लिए जिससे उनकी बदनामी भी हुई। इस सबके बावजूद इस जाति ने कई उच्च कोटि के विद्वानों एवं पेशेवरों जैसे संगीतकारों, वकीलों, डाक्टरों और प्रशासकों को जन्म दिया।

तिरुमुलपाड क्षत्रिय होते हैं। 'शारदा' में कोप्पुण्णी का प्रतिद्वन्द्वी राम वर्मा इसी जाति का है। मूलतः ये प्रतिष्ठावान सामन्ती मुखिया थे लेकिन राजाओं की तरह इनके पास प्रादेशिक प्रशासन का अधिकार नहीं था। फिर भी समृद्ध तिरुमुलपाडों के निवास स्थानों को महलों की संज्ञा दी जाती थी। कम से कम अभी कुछ अर्सा पहले तक।

शारदा का ही शंकर वारियर **अम्बलवासी** जाति से है। इस जाति का पेशा मन्दिरों में नौकरी करना है। वारियरों का काम होता है मन्दिरों की सफाई करना, देवताओं की मूर्तियों के लिए फूलों के हार तैयार करना आदि। ये अक्सर पुजारी के सामान्य सहायक की भूमिका अदा करते हैं। आम तौर पर ये सरल और अपरिष्कृत होते हैं। अधिकांश अम्बलवासियों को संस्कृत का थोड़ा-बहुत ज्ञान होता है, और कुछ विद्वान भी हैं और ज्योतिर्विद्या में दक्ष भी।

मलावार में नायरों का एक खास महत्व है। अक्सर मलावार अथवा केरल का जिक्र आते ही नायर जाति का ध्यान हो आता है। ये लोग हिन्दू हैं और अ-ब्राह्मण हैं। हालांकि अज्ञानवश कुछ लोग इनकी प्रतिष्ठा की तुलना तमिल जिले के शूद्रों से करते हैं पर वास्तव में वे उनसे कहीं भिन्न हैं।

इनकी सामरिक परम्परा है। मलावार में ब्रिटिश आधिराज्य से पहले कई सामन्ती मुखिया थे और उनमें आपसी मनमुटाव कायम था। अक्सर झड़पें होती रहतीं और नायर जाति के लोग उन सरदारों के (जिनमें से कई स्वयं नायर थे) सैनिकों का काम करते। जब वे युद्धभूमि में नहीं होते थे तो खेतिहर भूमि में होते। इन सब पेशों से उनमें स्वतन्त्रता के प्रति जोश का विकास हुआ और साथ ही सहकारिता और स्वाभिमान ने उनके मन में प्रमुख स्थान ले लिया।

शक्तिशाली केन्द्रीय प्रशासन और शान्ति के साथ नायर जाति के लोगों का जीवन ढंग भी बदला। उन्होंने अपनी विलक्षण शक्ति का हल, कलम और औजार चलाने में बखूबी प्रयोग किया। शायद पुरोहिताई को छोड़कर उन्होंने सभी पेशों में दक्षता हासिल की। साधारणतया बुद्धि सम्पन्न और सर्वतोमुखी होने के कारण उन्होंने हर क्षेत्र में निपुणता दिखाई। हालांकि आज की स्वतन्त्रता की आत्मा ने केरल को सही नेतृत्व प्रदान करने में अड़चन पैदा कर दी है और स्वाभिमान के निजी अथवा अतिरंजित विचारों से, किसी हद तक नायर जाति की आर्थिक प्रगति की गति को बांधे रखा है। मेनन, नायर और पिल्लै आदि कुछ नाम हैं जो नायर समुदाय में आते हैं जैसे रड्डी, सिंह, खान दूसरे समुदायों में।

नायरों की सामाजिक जिन्दगी की एक विशेषता है मरुमक्कत्तायम व्यवस्था अर्थात् मातृसत्तात्मक व्यवस्था। इसके अनुसार नायर परिवार का एक **तरवाड** है। याने एक सम्मिलित परिवार जिसमें एक पूर्वजा और उसकी स्त्रीवंश परंपरा आती है जिसमें उनके बेटे-बेटियां भी शामिल हैं। सम्पत्ति का उत्तराधिकार और उपभोग मातृसत्तात्मक है। तथापि इसका वास्तविक नियन्त्रण और कार्यभार परिवार के ज्येष्ठ पुरुष-सदस्य के हाथ में ही होता है। उसे **कारणवन** कहते हैं। कानूनन **कारणवन** सम्पत्ति इस विश्वास के साथ ही रखता है कि वह महिला सदस्यों और उनके वंशजों (पुत्री श्रेणी के) का रख-रखाव करता रहेगा। वह परिवार के प्रत्येक सदस्य का प्राकृतिक अभिभावक होता है। उसे अकेले को तरवाड सम्पत्ति को अलग करने का कोई अधिकार नहीं होता।

आम तौर पर जिन छोटे सदस्यों को विशेषाधिकार दिए जाते हैं उन्हें **अनन्तरवन** कहा जाता है। वे हैं दायाधिकार (जो वरिष्ठता के आधार पर दिए जाते हैं) जिसका फैसला तरवाड के **कारणवन** द्वारा होता है, कारणवन द्वारा सम्पत्ति के अनुचित उपयोग पर आपत्ति करने का अधिकार; सम्पत्ति की सुरक्षा का ध्यान रखने का अधिकार ताकि उसका उपयोग लगातार तरवाड के फायदे के लिए होता रहे। पर रख-रखाव से यही अभिप्राय है कि उनकी न्यूनतम जरूरतों की पूर्ति होती रहे, भले ही तरवाड के पास अपार सम्पदा क्यों न हो। यहाँ तक कि कारणवन छोटे सदस्यों की शिक्षा के लिए भी वाध्य नहीं होता। अक्सर इस कुलपति के मस्तिष्क में स्वार्थ-संघर्ष चलता रहता। तरवाड के सभी सदस्यों की देखभाल और उनकी जरूरतों को पूरा करने का कार्यभार उसके सुपुर्द रहता। साथ ही अपनी बीवी और बच्चों का भी। मरुमक्कत्तायम तरवाडों के कनिष्ठ सदस्यों की यह भावना कि कारणवन अपनी बीवी और बच्चों की भलाई के लिए तरवाड सम्पत्ति का बड़ा हिस्सा अनुचित रूप से खर्च करता है, अक्सर झगड़ों का आधार बनती रहती। कभी-कभी इस झगड़े का कारण छोटों के साथ पक्षपात या अमानवीय प्रशासन भी होता। कई ऐसे कारणवन थे जो सबके हितैषी थे और ऐसे भी जो बुरे होते हुए भी हमेशा बुरे नहीं थे।

इस व्यवस्था की आलोचना की गई है क्योंकि जीवन की जरूरतों के प्रति आश्वासन और आरामतलब मर्द परिवार की सम्पदा का आनन्द लेने में इस कद्र खो जाते हैं कि काम करने की लगन और जोखिम उठाने की हिम्मत क्रमशः क्षीण

हो जाती है जिसके बिना प्रगति और सम्पन्नता असम्भव है। ठीक ही कहा गया है कि "धन सम्पदा से वंचित इंग्लैण्ड के छोटे बेटों ने ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना की।" इस कथन में चाहे कितना ही सच क्यों न हो पर तरवाड व्यवस्था के बारे में नोबेल पुरस्कार विजेता पर्ल बक ने लिखा था : "परिवार पर किसी एक व्यक्ति का सम्पूर्ण नियन्त्रण, उसकी सुरक्षा और आश्रय अत्यन्त आवश्यक है; अन्य कोई ऐसा राज्य अथवा कल्याण-संस्था नहीं हो सकती, जो बच्चों एवं बूढ़ों का सही पालन कर सके।"

विशिष्ट तरवाड भवन की बनावट चतुर्भुज आकार की होती है जिसे नालु-केट्टु कहते हैं। इसके बीचों-बीच आँगण (नडुमुट्टम) होता है। परम्परानुसार भवन का कुछ भाग औरतों, मर्दों और कारणवन के लिए सुरक्षित रखा जाता है। पुराने समृद्ध तरवाडों के पास अपने ऊट्टुपुरा (जहाँ यात्रियों को मुफ्त खाना दिया जाता है) दफ्तर और परिवार के देवी-देवताओं के लिए अलग मन्दिर होते थे और किसी-किसी की अपनी कलरी भी (जहाँ शस्त्रों की शिक्षा दी जाती है)। इन्दुलेखा में कारणवन के पास दो या तीन विशाल दुमंजिले मकान हैं। एक तालाब, कई स्नान-घर, एक मन्दिर, ब्राह्मणों के लिए भोजनालय सहित कई अन्य संस्थान भी हैं। शंकरन जब शारदा के तरवाड जाता है तो उनके विभिन्न प्रकार के विशाल भवनों को देखकर चकरा जाता है। साफ-सुथरे पानी से भरा तालाब इतना बड़ा था कि दूसरी ओर बैठे लोगों को पहचानना असम्भव था।

नहाने के तालाब का विशेष महत्व था क्योंकि नायर लोग व्यक्तिगत स्वच्छता पर काफी जोर देते हैं। मर्द, औरत या बच्चा हर किसी को दिन में एक बार स्नान करना ही पड़ता है, आमतौर पर डुबकी लगाकर। इसके अलावा आमतौर पर सबको हफ्ते में दो बार तैल स्नान (तेल का खूब उबटन करके नहाना) करना अनिवार्य है। इन्दुलेखा में ऐसे कई संकेत हैं जिनमें तालाब के किनारों पर बने स्नानघरों और कमरों आदि का जिक्र है। यहाँ से तालाब तक जाने के लिए सुविधाजनक सीढ़ियाँ होती हैं तथा औरतों और मर्दों के लिए अलग-अलग कमरे होते हैं।

उन दिनों समृद्ध तरवाड सामाजिक जन-जीवन का केन्द्रबिन्दु होते थे। परिवार के कई सदस्य और उनके सम्बन्धी अपने-अपने कर्तव्यों के पालन के लिए क्रियान्वित रहते थे। मर्द, औरतें, नौकर-चाकर अपनी जिम्मेदारियाँ निभाने हेतु दौड़-धूप करते घूमते थे। पुजारी मन्दिर में व्यस्त रहता; मैनेजर और कभी-कभी

वकील जायदाद के बारे में बातचीत करने के लिए कारणवन से मिलने चले आते और पट्टेदार और कृषक अपनी समस्याएँ लिए हुए अहाते में मजदूर आदेशों का इन्तजार कर रहे होते या उनके पालन में लगे रहते। फेरी वाले सब्जियाँ या अन्य सामान बेचने आते; दोस्त एवं जान-पहचान के लोग समाचारों के आदान-प्रदान हेतु आते। दस्तंदाजों और दीन-हीनों का रोटी अथवा भीख के लिए ताँता लगा रहता। अर्थात मन्दिर सहित घर का प्रत्येक भाग, ऊटूटुपुरा और स्नानघरों तक में विभिन्न लोगों की झड़ी-सी लगी रहती, चाहे काम के लिए अथवा गपबाजी के लिए। "शाम के समय मन्दिर, तालाब के आसपास और पूंचोलक्करा इडम[1] में उमड़ आई भीड़ की रेल-पेल का विवरण कर पाना बहुत मुश्किल है।" अक्सर कथकली, पाठकम् या ओट्टन तुल्लल के प्रदर्शन अथवा किसी शास्त्री द्वारा किसी धार्मिक ग्रन्थ के व्याख्यान से वातावरण की उत्तेजना बढ़ जाती। पूवल्ली तरवाड में पुरातन साहित्य की कोई कमी न थी। जब इन्दुलेखा सूरी नम्बूदरीपाद से कहती है कि पिछले कुछेक वर्षों से उनके घर में एक भी कथकली प्रदर्शन नहीं हुआ तो वह आश्चर्यचकित हो जाता है और कहता है, "चार पांच वर्ष ! ऐसे समृद्ध परिवार में चार-पांच वर्षों से एक भी नाटक नहीं हुआ। मैं तो बस मात खा गया।"

तरवाड की तस्वीर उस हाते अथवा जागीर का जिक्र किए बिना अधूरी ही रह जाएगी जिसमें ये सारे मकान बने होते थे और तरवाड जीवन व्यतीत होता था। लगभग अच्छे समृद्ध परिवारों के घरों का यह हाता जिसके चारों ओर बाड़ अथवा दीवार उठी रहती, दो या तीन एकड़ जगह घेरे होता। इसी क्षेत्र में परम्परागत ढंग से अर्थात् तच्चुशास्त्र (भवन निर्माण कला) के नियमानुसार पारिवारिक मन्दिर, रहने के स्थान, पशुशाला और तालाबों आदि का निर्माण किया जाता। तालाबों का प्रयोग स्नान एवं सिंचाई के लिए किया जाता था। इसके अतिरिक्त पीने और खाना आदि बनाने में इस्तेमाल के लिए दो या तीन कुएं और होते थे। इनमें से एक विशेष रूप से मन्दिर के लिए भी हो सकता था। मुख्य घर से कुछ गज की दूरी पर एक साफ-सुथरी तुलसी की क्यारी बनी होती थी। यहाँ घर की किसी स्त्री द्वारा संध्या समय तेल का दिया जलाना आवश्यक होता था। सामने बगीचे में अंगूर की बेलें खिली होतीं और फूलों के गुच्छे जैसे

१. पूंचोलक्करा इडम—एक तरवाड (घराने) का नाम है।

जूही, जपाकुसुम, 'चे भी', 'मन्दारम' आदि और तालाबों में कुमुदनी और कमल लगे होते थे जिन्हें मन्दिरों में इस्तेमाल किया जाता या जिन्हें स्त्रियाँ प्रयोग में लाती थीं। अगल-बगल के बगीचों में और पीछे की तरफ वल्लरियाँ तथा पौधे लगे होते। जैसे लौकी, ककड़ी, भिण्डी, अरवी, अदरक, हल्दी, मिर्च वगैरह और इनकी उपज घर की दिन प्रतिदिन की जरूरतें पूरा करने के लिए काफीहोती। हाते में अच्छी खासी मात्रा में फलों आदि के पेड़ भी लगे रहते जैसे आम, कटहल, इमली, सहजन, नारियल, केले आदि के मौसम आने पर इन सब्जियों और फलों को एकत्रित किया जाता था और इनका कुछ हिस्सा तत्कालीन इस्तेमाल में लाया जाता था तथा कुछ हिस्से को सुखाकर या उनका अचार बनाकर भविष्य के इस्तेमाल के लिए रख लिया जाता था। तरवाड के धान के खेत भी हाते के आस-पास ही फैले होते थे।

आजकल, अधिकांश तरवाड माता-पिता और बच्चों के छोटे एकक में विभाजित हो विखर गये हैं तथा एक वास्तविक तरवाड परिवार किसी पर्यटक के लिए केवल जिज्ञासा का विषय वनता जा रहा है।

मिस्टर डब्ल्यू० ड्यूमर्ग ने अपने इन्दुलेखा के अनुवाद में नम्बूदरियों तथा नायरों का कुछ विवरण दिया है।

चान्तु पणिक्कर जो बड़े निपुण अन्दाज से शारदा के प्रतिद्वन्दी मुकदमेबाजों को खुश कर देता है, वह है एक कणियान पानिक्कर ! वह हिन्दू तो है, पर जाति के अनुसार अछूत है। वह कलरी पणिक्कर, जिसका व्यवसाय शस्त्रों की शिक्षा देना है, से अलग है, कणियान पणिक्कर ज्योतिषी है और दूसरे लोगों की तरह मलयाली लोग ज्योतिष की भविष्यवाणी को वहुत मानते हैं। इसलिए मलावार के जन-जीवन में कणियान एक विशेष महत्व रखता है। हर काम में उसकी सलाह ली जाती है मामला चाहे व्यापार का हो, या शादी, खेती, मुकदमे, मुण्डन वगैरह-वगैरह। कहते हैं कि **कणियान शब्द गणकन** (गिनती करने वाला) का अपभ्रंश रूप है। मैं यह जरूर कहूँगा कि इनकी कुछ भविष्यवाणियाँ इस हद तक सही होती हैं कि आदमी आश्चर्यचकित होकर रह जाए। लेकिन अन्य व्यवसायों की तरह कणियानों में भी चालबाज होते ही हैं···जैसे चान्तु पणिक्कर।

ऐसे ही विभिन्न परम्परागत जातियाँ चन्दु मेनन के मलाबार में निवास करती थीं। यहाँ तक कि नई पीढ़ी का प्रतिनिधि माधवन भी कानों में झुमके पहनता था और सिर पर सामने की ओर एक लम्बी चोटी रखता था। इनमें कुछ

लोग अच्छे थे, कुछ थोड़े धूर्त और कुछ सही मायने में वैन्ति पट्टर जैसे दुष्ट थे। हालात ने जैसे-जैसे उनके वीच की दूरी कम की, तो उनकी कथनी और करनी ने उनके गुणों के आधार पर अलग-अलग प्रतिक्रिया की। इसमें कोई शक नहीं कि मलावार के घरेलू और सामाजिक जीवन पटल पर विभिन्न एवं आकर्षित रेखाएँ अंकित हैं। चन्दु मेनन के उपन्यासों में रूढ़िगत लोगों की मुलाकात आधुनिक लोगों से होती है और एक संघर्ष का जन्म होता है जिसका कोई समाधान नहीं हो पाता। मतलव यह कि कुछ पुरानी परम्पराओं के लोग नए मानकों के सामने टिक नहीं सकते तथा उन्हें नई चुनौतियों के साथ समझौता करना शायद अनिवार्य होगा।

चन्दु मेनन ने अपने उपन्यासों में उन उपादानों एवं प्रभावों का जिक्र किया है जो उस समय के मलावार के सामाजिक ढाँचे को वदलने में सहयोगी सिद्ध हो सकते थे।

मलयालम के प्रारम्भिक उपन्यास

चन्दु मेनन मलयालम साहित्य के एक अन्वेषक और उसे एक नया मोड़ देने वाले भी थे। इस धारणा का मूल्यांकन करने के लिए मलयालम भाषा के कुछ प्रथम उपन्यासों की संक्षिप्त समीक्षा सहायक होगी। मलयालम भाषा का प्रथम उपन्यास सन् १८८७ में सामने आया—कुन्दलता जिसकी रचना अप्पु नेडुंगाडी ने की। अंग्रेजी साहित्य से परिचय से पाठक को लगेगा कि कुन्दलता की कुछ घटनाओं एवं पात्रों की रचना काफी हद तक शेक्सपियर के **टेम्पेस्ट** तथा **सिम्बलाइन** और स्काट के **ईवानहो** की घटनाओं और पात्रों की याद दिलाती है। बस ये कि **कुन्दलता** में उनका भारतीयकरण कर दिया गया है। अतः कहानी में जगहों के नाम भारतीय हैं जैसे धर्मपुरी, कलिंग, कुन्तल; इसी प्रकार पात्रों के नाम भी जैसे तारनाथन, कपिलनाथन और कुन्दलता। ये स्थान कहाँ हैं अथवा घटनाएँ कब घटीं इसके बारे में कोई जानकारी नहीं मिलती। लगता है कि 'एक बार किसी देश के किसी कोने में' ही यह घटना घटी होगी। पात्र गैर-मलयालमभाषी हैं; स्थान भी मलाबार नहीं, कई घटनाएँ वास्तविक नहीं हैं या फिर केरलीय जीवन व संस्कृति से कोई सम्बन्ध नहीं। हाँ, भाषा जरूर मलयालम है। केवल इसी वजह से यह मलयालम के प्रथम उपन्यासों की श्रेणी में आता है।

उसके बाद आया **इन्दुलेखा**, सन् १८९० में। चन्दु मेनन ही का **शारदा** (प्रथम भाग) १८९२ में प्रकाशित हुआ। इस अन्तराल में सी० वी० रामन पिल्लै ने अपना मशहूर उपन्यास 'मार्त्ताण्ड वर्मा' मलयालम साहित्य को भेंट किया। यह एक ऐतिहासिक उपन्यास है और करीबन दो सौ साल पहले हुए ट्रावनकोर के महान राजा वीर मार्त्ताण्ड वर्मा के जीवन से सम्बन्धित है। बेशक सभी घटनाएँ केरल में ही घटती हैं और पात्र भी केरल के ही हैं। भाषा भी है मलयालम है लेकिन आम बोलचाल की-सी नहीं। इस ऐतिहासिक उपन्यास का मुख्य आकर्षण है समय की दूरी जो पूरे दृश्य पर जादू कर जाती है। **मार्त्ताण्ड वर्मा** एक उच्चकोटि का उपन्यास है जो राजा और सामन्ती घरानों से सम्बन्ध रखता है, जिसमें अठारहवीं शताब्दी के दूसरे भाग में ट्रावनकोर में हुई विश्वासघात और वफादारी

की घटनाओं की तस्वीर है। लेखक रामन पिल्लै की जीवनी से पता चलता है कि वह मलयालम साहित्य के आधार स्तम्भ थे और व्यावसायिक भी। उन्होंने 'मार्त्ताण्ड वर्मा' लिखने से पहले इस सम्बन्ध में चर्चा करने में पर्याप्त समय लिया। फिर लिखने में और सुधारने-संवारने में भी समय लगाया। लेखक के व्यवसाय, लिखने के लिए हालात, विषय-सामग्री और भाषा आदि की दृष्टि से देखा जाए तो **मार्त्ताण्ड वर्मा** उपन्यास **इन्दुलेखा** से भिन्न है। कुछ आलोचकों ने स्काट के **ईवान्हो** और **मार्त्ताण्ड वर्मा** के बीच समानताओं का जिक्र किया है। उदाहरण के तौर पर श्री बालाकृष्णन ने लिखा है कि सी० वी० (रामन पिल्लै) ने एक ऐतिहासिक उपन्यास लिखना शुरू किया और जाने या अनजाने वह **ईवान्हो** के सांचे में ढल गया। जबकि चन्दु मेनन ने 'हेनरियटा टेम्पल' के आधार पर एक उपन्यास लिखना शुरू किया लेकिन उन्होंने एक नए सामाजिक उपन्यास की रचना की। इसमें उपन्यासकार रामन पिल्लै अथवा उनके उन्पयास का अनादर नहीं किया जा रहा। रामन पिल्लै एक कुशल उपन्यासकार हैं और मार्त्ताण्ड वर्मा एक महान् उपन्यास। यह कहने का अभिप्राय केवल इतना है कि चन्दु मेनन भी एक प्रतिभासम्पन्न उपन्यासकार हैं और **इन्दुलेखा** एक अनूठे और नए ढंग का उपन्यास है।

एक और उच्च श्रेणी का उपन्यास है **अकबर**, जिसके लेखक हैं केरल वर्मा वलिय कोयिल तम्पुरान। लगता है इसे उन्होंने १८८० में लिखा था। इसमें केरल का कुछ भी नहीं था, सिवाय भाषा के। और भाषा भी आम बोल-चाल की प्रसिद्ध मलयालम नहीं थी,-संस्कृत का अधिक प्रयोग किया। चन्दु मेनन ने कहा कि इस भाषा को समझ पाना जरा मुश्किल ही है। यह एक मौलिक उपन्यास नहीं सिर्फ एक अनुवाद या बल्कि यह कहा जाए कि मौलिक रचना का अशुद्धी-करण था। अकबर मूलतः डच भाषा में लिखा गया जिसका अंग्रेजी में अनुवाद किया गया और फिर इस अनुवाद का मलयालम में अनुवाद किया गया।

अभी हमने कहा कि **इन्दुलेखा** १८९० में छपा। चन्दु मेनन ने कहा है : "मैंने यह किताव ११ जून को लिखनी शुरू की और १७ अगस्त १८८९ को इसे पूरा किया।" शायद पुस्तक की छपाई और प्रकाशन आदि में थोड़ा ज्यादा समय लग गया। **इन्दुलेखा** के दूसरे संस्करण की भूमिका में चन्दु मेनन लिखते हैं कि "इस किताव के पहले संस्करण की सभी प्रतियां जो जनवरी १८९० के शुरू में बिकनी शुरू हुईं, ३० मार्च १८९० तक बिक गईं।" आज भी किसी मलयालम उपन्यास

की इतनी मांग शायद ही हो, और उस जमाने में तो यह लाजवाब रही होगी। उन दिनों यह उपन्यास एक नया ही अनुभव था और कुछ आलोचकों का कहना है कि **इन्दुलेखा** आज भी मलयालम साहित्य में एक अनूठी रचना है।

ट्रावनकोर के एक महाराजा को **अकबर** का अंग्रेजी अनुवाद पसन्द आ गया और उन्होंने केरल वर्मा वलिय कोयिल तम्पुरान को इसका मलयालम में अनुवाद करने को कहा ताकि मलयाली लोग इसे पढ़ सकें। इस प्रकार **अकबर** का मलयालम अनुवाद हुआ। **इन्दुलेखा** की जन्म कहानी कुछ और ही है। चन्दु मेनन ने स्वयं इसके कारणों का उल्लेख किया हैं। दरअसल उन्होंने कोई दूसरी ही किताब शुरू की थी। जब उन्होंने अंग्रेजी उपन्यास पढ़ना आरम्भ किया तो उनके कुछ मित्रों को, जो अंग्रेजी नहीं जानते थे, उन्हें चन्दु मेनन से कहानी सुनने में बड़ा आनन्द आता था। चन्दु मेनन कहानी सुनाने की कला में निपुण थे। उनमें से एक ने, जिसे अर्ल वेकनफील्ड का **हेनराईटा टेम्पल** बहुत पसन्द था, चन्दु मेनन से आग्रह कर उसका मलयालम में अनुवाद करने के लिए मना लिया। काम शुरू हुआ। काम थोड़ा ही आगे बढ़ पाया कि चन्दु मेनन की रुचि जाती रही। उन्हें लगने लगा कि सिर्फ शब्दों का अनुवाद करने से कोई लाभ नहीं। उसमें वह जान नहीं रहेगी। वह मजा नहीं रहेगा जो जवानी कहानी सुनाते वक्त भाव-भंगिमाओं के प्रदर्शन, बीच-बीच में अलग से फिकरे कसने और स्वर के आरोह-अवरोह में आता है। उन्होंने पाया कि सांस्कृतिक अंतर के कारण मूल अंग्रेजी के प्रणय-वर्णनों को मलयालम में उसी रूप में अनूदित करने पर वे भारतीय वातावरण के लिए उपपुक्त नहीं प्रतीत होते। इसलिए उन्होंने अनुवाद का काम बन्द कर दिया। लेकिन उन्हें उनकी 'प्रिय अत्याचारिणी' से भी तो निबटना था। उन्होने श्रीमती चन्दु मेनन को वायदा किया कि वह शीघ्र ही उनके लिए अंग्रेजी शैली के आधार पर ही एक मलयालम उपन्यास लिखेंगे। यह जनवरी १८८६ की बात है। लेकिन वह वायदे को तब तक टालते रहे जब तक उनकी पत्नी ने जबरदस्ती उन्हें लिखने के लिए बाध्य कर दिया। तब एक दिन, ग्यारह जून को उन्होने लिखना शुरू किया और नौ सप्ताह में **इन्दुलेखा** को पूरा कर डाला। चन्दु मेनन के साथ न्याय करने के लिए यह कहना जरूरी होगा कि वह पेशेवर या अनुभवी लेखक नहीं थे और वह उनका पहला ही उपन्यास था जिसे उन्होंने रोजाना दफ्तर का काम निपटाने के बाद लिखा। और फिर उनके पास ऐसे दोस्त नहीं थे जिनसे इसके बारे में बातचीत करके मदद ली जा सके या फिर उसे सुधारा जा

सके। वह बस लिखते गए। लोगों के बारे में, उन लोगों के बारे में जिनसे उनकी हर रोज मुलाकात होती। उन्होंने ऐसे शब्दों में लिखा जिनका प्रयोग लोग और वह स्वयं घर में प्रयोग करते थे। सीधी-सादी सरल भाषा और अपने-से पात्रों ने पाठकों को मुग्ध कर दिया। वे पात्र कई सौ वर्ष पहले के न होकर ऐसे थे जिन्हें पाठक हर रोज अपने आस-पास देखते। न तो पाठक और न ही लेखक के पास ऐसा कुछ था जिसे छुपाया जा सके। **मार्त्ताण्ड वर्मा** और **अकबर** में पुरानी व्यवस्था के प्रति एक मोह की भावना देखी जा सकती है। **मार्त्तण्ड वर्मा** में मुखिया लोगों और राजाओं के नाम अथवा जान-माल की रक्षा हेतु वफादारी और बलिदान का नगाड़ा बार-बार बज उठता है। दूसरी ओर चन्दु मेनन की किताबों में ऐसी शक्तियों का आवास है जो उन कुछेक अवांछनीय तत्वों को ललकारती हैं जिनसे **मरूमक्कत्तायम तरवाड** की एकता और समृद्धि को खतरा हो सकता था।

उन्होंने इस पहलू को सोच-विचार कर रखा, इसके बारे में निश्चित कुछ नहीं कहा जा सकता लेकिन हां उनके कुछ दूसरे उद्देश्य जरूर थे जिनका जिक्र उन्होंने विलियम ड्यूमर्ग को **इन्दुलेखा** की प्रति के साथ भेजे एक पत्र में किया। प्रथम, वह अपनी पत्नी की ऐसा एक उपन्यास पढ़ने की इच्छा को पूरा करना चाहते थे और "दूसरे मेरी अपनी इच्छा थी कि मैं अंग्रेजी न जानने वाले मलयाली पाठकों में अंग्रेजी उपन्यासों जैसे उत्तम साहित्य के प्रति एक रुचि पैदा कर सकूँ जिसके बारे में वे एकदम अनभिज्ञ हैं (चूंकि अभी तक वे मलयालम में ऐसा कथा-साहित्य पढ़ते आए हैं जिसमें अप्राकृतिक घटनाओं और स्थितियों का उनकी अपनी मिट्टी से कोई वास्ता नहीं होता और वे अक्सर बेतुकी और असम्भव तो होती ही हैं, और में देखना चाहता था कि किन्हीं खास परिस्थितियों में उनके अपने घरों में घटने वाली घटनाओं एवं तथ्यों से बना साहित्य उनकी प्रशंसा का पात्र बन सकता है अथवा नहीं; ताकि मैं अपने मलयाली भाइयों को समझा सकूँ कि नायर महिलाओं में प्राकृतिक सौन्दर्य और बुद्धिमता तो है ही यदि उन्हें अंग्रेजी शिक्षा दी जाए तो समाज में वे प्रतिष्ठा, सत्ता और प्रभुता प्राप्त कर सकती हैं; और अन्ततः मैं मलयालम साहित्य में अपना छोटा-सा योगदान देना चाहता था जिसके बारे में मुझे यह कहते हुए अफसोस होता है कि वह कु-प्रयोग एवं अ-प्रयोग के कारण तेजी से सूखता जा रहा है।"

ड्यूमर्ग को लिखे पत्र की अन्तिम पंक्ति में उन्होंने कहा है कि "इसे (**इन्दु-लेखा**) लिखने की प्रेरणा मुझे सिर्फ अपने यहां की औरतों की प्रतिष्ठा में सुधार लाने की इच्छा से ही मिली।"

कहानी लिखते समय उन्हें काफी निराशाजनक आलोचना का सामना करना पड़ा। "अगर आप किताब लिख रहे हैं तो विज्ञान के बारे में लिखो। यहां मलाबार के लोगों को और कुछ नहीं चाहिए," एक दोस्त ने सलाह दी। किसी ने संक्षिप्त रूप से कहानी सुनने के बाद कहा कि इस सबका कोई अर्थ नहीं क्योंकि घटनाएं तो सभी काल्पनिक हैं और कभी नहीं घटीं। कुछ को लगा कि चूंकि कहानी सिर्फ मलयाली जन-जीवन की आम घटनाओं से ही सम्बन्ध रखती है, इसलिए पाठकों में रुचि पैदा करने में अक्षम है। उनका मत था कि पाठकों में रुचि पैदा करने के लिए कहानी में लोकातीत तत्वों का होना अत्यावश्यक है। इन सब टीका-टिप्पणियों के बावजूद चन्दु मेनन अपने इस विश्वास पर दृढ़ रहे कि कहानी अगर सही ढंग से लिखी जाए तो वह प्रसिद्ध होगी ही, चाहे उसकी घटनाएं प्राकृतिक हों अथवा अप्राकृतिक, साधारण हों अथवा असाधारण। उन्होंने सिर्फ सही प्रस्तुतीकरण पर बल दिया और जहां तक **इन्दुलेखा** का सवाल है, उनकी बात एकदम सही थी। यह उपन्यास न केवल प्रसिद्ध ही हुआ बल्कि इसने एक सनसनी पैदा कर दी। इसका पहला संस्करण तीन महीने से भी कम अवधि में बिक गया और १८९० और १९५६ के बीच इसके ५३ संस्करण निकले।

१८९२ में अर्थात **इन्दुलेखा** के प्रकाशन के दो वर्ष बाद चन्दु मेनन के दूसरे उपन्यास का प्रथम भाग प्रकाशित हुआ। इन दो वर्षों में उन्होंने वह सारी सामग्री एकत्रित की जो **शारदा** जैसा उपन्यास लिखने के लिए चाहिए थी। यह कहानी एक मुकदमे के सम्बन्ध में है जिसमें एक व्यक्ति **मरूमक्काथायम तरवाड** में अपने प्रवेश और मान्यता पाने के लिए दावा करता है और सदाशयता सिद्ध करने के लिए संघर्ष करता है। इन दो वर्षों के अन्तराल में उन्होंने एक न्यायिक अधिकारी जैसे जिम्मेदार ओहदे पर रहकर अनुभव प्राप्त किया। इससे भी कहीं अधिक उपयोगी सिद्ध हुआ उनका 'मलाबार विवाह आयोग' का सदस्य होना, जहां वह मलाबार के परिवारों के इतिहास के बारे में काफी विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सके—विभिन्न घरेलू विन्यासों, परिवार के सदस्यों की विभिन्न रुचियों के बारे में; और मतभेदों को हवा देकर झगड़ों में बदलने वाले बाहरी

तत्वों तथा विनाश अथवा पुनरुत्थान लाने वाले जटिल एवं लम्बे मुकदमों के बारे में भी उन्होंने जानकारी हासिल की। आयोग द्वारा की गई छानबीन से कई ऐसी घटनाएँ एवं पात्र सामने आए जो उनके सोचे हुए उपन्यास के लिए एकदम उपयुक्त थे। जून से अगस्त १८८६ तक कचहरी में काम से लौटने के बाद का सारा समय उन्होंने **इन्दुलेखा** लिखने में खर्च किया। जब से उन्होंने अपनी 'अत्याचारिणी' को उपन्यास लिखने का वायदा किया था अर्थात जनवरी १८८६ से लेकर १५ जून तक (यानी जब उन्होंने उसे लिखना आरम्भ किया) वह इसकी तैयारी में लगे रहे। **इन्दुलेखा** के दूसरे संस्करण की भूमिका में उन्होंने कहा है, "जून से कुछ अर्सा पहले ही मैंने इस कहानी के बारे में सोचना शुरू कर दिया था और समय-समय पर जरूरत पड़ने पर अपने विचारों को लिखकर रख लिया।" यह काम वह अपने दफ्तर के कामों के बीच भी करते रहे। अपने प्रथम उपन्यास की लोकप्रियता से प्रेरणा और विश्वास पाकर इसी प्रकार १८६० और १८६२ के बीच भी कचहरी के मुकदमों की सुनवाई के वक्त या 'आयोग' के कार्य हेतु कई तरवाडों के सदस्यों के वार्तालाप के दौरान वह **शारदा** के लिए सामग्री एकत्रित करते रहे। 'आयोग' की रिपोर्ट प्रकाशित होने के एक वर्ष बाद १८६२ में उन्होंने हमें **शारदा** का पहला भाग दिया। १६ अगस्त १८६२ तारीख की अपनी इस पुस्तक की भूमिका में उन्होंने सिर्फ यह कहा कि "आजकल जबकि मलयालम भाषा में उपन्यासों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती ही रही है, ऐसी स्थिति में अपनी इस दूसरी पुस्तक के प्रकाशन के समय मुझे विशेष कुछ नहीं कहना है।"

यह भूमिका बीस पंक्तियों से भी कम की थी। **इन्दुलेखा** की भूमिका करीब पांच पन्नों की है क्योंकि यह न केवल उनका पहला उपयास था बल्कि अपने ढंग का भी पहला ही था। उन्होंने लोगों को ऐसे उपन्यास की रचना के प्रेरणा स्रोत और वजहों से अवगत कराना जरूरी समझा। **शारदा** के बारे में उन्होंने केवल इतना कहा कि उनके कुछ मित्रों के आग्रह से पहले भाग का प्रकाशन अग्रिम किया जा रहा है तथा दूसरा एवं तीसरा भाग वर्ष की समाप्ति से पहले ही प्रकाशित होने की आशा है। लेकिन मृत्यु उन्हें उनके समय से पहले ले गई। न्यायपालिका तथा मलयालम साहित्य के लिए यह बहुत बड़ा नुकसान था। मलयालम साहित्य को हुई हानि की पूर्ति असम्भव है।

इन्दुलेखा

"हर मनुष्य किसी न किसी से प्रेम करता है"···एमर्सन।

इन्दुलेखा एक प्रेम-कथा है जिसमें कुछ समय के लिए प्रेमी बिछुड़ते हैं, दुःख सहते हैं लेकिन अन्त में मिलन होता है। यह बस कहानी की रूपरेखा मात्र है।

चन्दु मेनन ने स्वयं ड्यूमर्ग की जानकारी के लिए सारांश[1] तैयार किया था। लगता है कि इस सारांश में उन्होंने उन सब महत्वपूर्ण पक्षों पर बल दिया जो उपन्यास विशिष्टता है तथा जिनकी ओर वह ड्यूमर्ग (और अन्य पाठकों) का ध्यान आकर्षित कराना चाहते थे। वह सारांश इस प्रकार है :

"आप देखेंगे कि इस कहानी की शुरुआत उपन्यास के नायक माधवन और उसके सम्बन्धियों (जो सब एक नायर तरवाड के सदस्य हैं) के बीच वार्तालाप से होती है जिसका कारण है उस तरवाड के एक तरुण सदस्य की शिक्षा को लेकर माधवन और कारणवन (घर के मुखिया) के बीच हो रहा झगड़ा। घटनाएँ हमारे ही समय में कहीं दक्षिण मलाबार में घटी हैं। कहानी की मुख्य घटनाओं का स्थान रियासत कोचीन से ज्यादा दूर न माना जाए।

उपन्यास के मुख्य पात्रों की सूची इस प्रकार है :

१. पंचु मेनन, कारणवन या चंभाकियोन्तु पुवल्ली परिवार का मुखिया।
२. पंचु मेनन का छोटा भाई शंकर मेनन।
३. पंचु मेनन की सगी बहन की बेटी पार्वती अम्मा।
४. पार्वती अम्मा का बेटा माधवन, बी० ए०, बी० एल०
५. पंचु मेनन की दादी की बहन की पोती कुम्मिणि अम्मा।
६. कुम्मिणि अम्मा का पुत्र चात्तर मेनन।
७. कुम्मिणि अम्मा का पुत्र गोपालन।
८. कुम्मिणि अम्मा की बेटी कल्याणि कुट्टी।
९. कुम्मिणि अम्मा का पुत्र शिन्नन (उम्र नौ या दस वर्ष)।

१. पृ० xvii

१०. पंचु मेनन की पत्नी कुंजि कुट्टी अम्मा।
११. पंचु मेनन की पुत्री लक्ष्मी कुट्टी अम्मा।
१२. पंचु मेनन का पुत्र गोविन्दन कुट्टी मेनन।
१३. लक्ष्मी कुट्टी अम्मा की पुत्री तथा पंचु मेनन की नातिन इन्दुलेखा।
१४. केशवन नम्बूदरी, लक्ष्मी कुट्टी अम्मा का दूसरा पति। लक्ष्मी का पहला विवाह किलि मानूर राजा (अब स्वर्गवासी), इन्दुलेखा के पिता से हुआ था।
१५. माधवन के पिता गोविन्द पणिक्कर।

जैसा कि ऊपर कहा गया है, प्रथम अध्याय की शुरुआत माधवन और चात्तर मेनन के बीच हो रहे वार्तालाप से होती है। अंग्रेजी ज्ञान से रहित चात्तर मेनन समझदार एवं विवेकपूर्ण नौजवान है हालांकि माधवन चात्तर मेनन के सगे भाई की भलाई के लिए ही बहस कर रहा था फिर भी चात्तर मेनन माधवन द्वारा कारणवन से कही बातों का वह समर्थन नहीं करता। झगड़े का कारण इस प्रकार था :

माधवन चाहता था कि उसका कारणवन पंचु मेनन तरुण शिन्नन को शिक्षा दिलाए, किन्तु संकीर्ण विचारों वाले सत्तर वर्षीय पंचु मेनन को माधवन के विचारों से सहमति नहीं थी और उन्होंने लड़के का स्कूल का खर्च उठाने से इन्कार कर दिया। इस पर बूढ़े कारणवन और नौजवान स्नातक के बीच कड़े शब्दों का आदान-प्रदान हुआ। कारणवन माधवन की इस कथित धृष्टता पर बेहद क्रुद्ध हो गए। माधवन भी पंचु मेनन के इस व्यवहार पर बहुत उत्तेजित हो गया, क्योंकि माधवन को जो एक ईमानदार और बहादुर नौजवान था, अपने कारणवन द्वारा उनके ही परिवार के छोटे सदस्य (अनन्तरवन) के साथ हो रहा पक्षपात एकदम असह्य था। यदि शिन्नन माधवन की तरह पंचु मेनन का प्रत्यक्ष अनन्तरवन होता तो वे उसकी शिक्षा पर जितना भी खर्च होता उठाते लेकिन उस लड़के से उनका दूर का रिश्ता था इसलिए जैसा कि आम तौर पर प्रत्येक तरवाड में होता है, ये बूढ़े, अपढ़ और जिद्दी प्रवृत्ति के कारणवन सिर्फ अपने सगे भानजों को ही शिक्षा दिलाते हैं और अपने दूर के रिश्ते वालों को भी तरवाड़ में नौकर अथवा कृषक के रूप में ही पनपने का अवसर देते हैं। हालांकि सच तो यह है कि माधवन या अन्य किसी भी तरवाड सदस्य की भांति शिन्नन को यह अधिकार है कि वह **तरवाड** के खर्चे पर शिक्षा ग्रहण कर सके। अत्यन्त उत्साही एवं

ईमानदार नौजवान माधवन की नजर में कारणवन का व्यवहार अत्यन्त निन्दनीय तथा शर्मनाक लगा। यही वजह थी कि उसने पंचु मेनन के ऊंचे ओहदे की परवाह किए बिना अपनी बात को कड़े शब्दों में रखा। इस अध्याय का अन्त भी माधवन, उसके छोटे चाचा शंकर मेनन और मां पार्वती अम्मा के बीच इसी विषय पर आगे वार्तालाप से होता है। इसी अध्याय में माधवन के शारीरिक रूप-रंग तथा उसकी बौद्धिक उपलब्धियों का भी विस्तृत विवरण दिया गया है।

माधवन कला एवं कानून दोनों का स्नातक है। देखने में बेहद खूबसूरत और असाधारण रूप से बुद्धिमान और संस्कृत का अच्छा ज्ञानी है। उसने खेल-कूद तथा अंग्रेजी खेलों, जैसे क्रिकेट और लान टेनिस में भी विशिष्टता दर्शायी।

दूसरा अध्याय (इन्दुलेखा) नायिका के बारे में है। इसके शुरू में स्त्री सुन्दरता के आपेक्षिक वर्णन पर ध्यान दिया गया है तथा बाद में इन्दुलेखा के व्यक्तिगत आकर्षण, उसकी बुद्धिमता, शिक्षा, व्यवहार तथा पहनावे आदि का और अन्त में माधवन और इन्दुलेखा के मिलन-प्रसंग का विवरण है।

यहां उल्लेखनीय बात यह है कि मेरी कहानी की शुरुआत उनके इस सच्चाई से प्रतिबद्ध होने के कुछ माह पश्चात से होनी है जबकि दूसरे अध्याय में मैंने माधवन तथा इन्दुलेखा के मिलन प्रसंग की उन घटनाओं का वर्णन किया है जो हमारी कहानी शुरू होने से पहले ही घट चुकी हैं। जैसा कि मैं शुरू में ही कह चुका हूं कि मेरा उद्देश्य अंग्रेजी ढंग का उपन्यास लिखना है। यह तो साफ ही है कि कोई भी मलयाली युवती इस प्रकार की कहानी में नायिका का स्थान नहीं ले सकती अतः मेरी इन्दुलेखा कोई साधारण मलयाली युवती नहीं है। उसे अंग्रेजी, संस्कृत और संगीत वगैरह का ज्ञान है तथा जब हमारी कहानी शुरू होती है तब वह एक बेहद खूबसूरत, नौजवान, सुसंस्कृत, सत्रह वर्षीय कन्या है। मेरे कुछ पाठकों को इस बात से आपत्ति हो सकती है कि मलाबार में इन्दुलेखा के समान बुद्धिसम्पन्न नायर युवती का होना असम्भव है। तो मेरा जवाब है कि जो लोग ऐसा कहते हैं, वे मलावार में रह रही इतनी पढ़ी-लिखी स्त्रियों के बारे में नहीं जानते। मैं स्वयं ऐसी दो-तीन सम्भ्रान्त नायर युवतियों को जानता हूं जो अभी जीवित हैं और जो बुद्धिमत्ता (हां, वे अंग्रेजी भाषा नहीं जानतीं) चरित्र की दृढ़ता और सामान्य ज्ञान में इन्दुलेखा की कसौटी पर खरी उतरती हैं। जहां तक व्यक्तिगत सुन्दरता, आकर्षक शक्ति, सम्भ्रान्त व्यावहारिकता, सादगी, वार्तालाप करने की क्षमता, हाजिर जवाबी. हास्य प्रतिभा का सवाल है तो मैं

सामान्य नायर **तरवाड** की ऐसी सैकड़ों युवतियां दिखला सकता हूं जिन्हें इन्दु-लेखा के स्तर से कहीं कम नहीं कहा जा सकता।

हां, इन्दुलेखा के अंग्रेजी भाषा को लेकर पाठकों की आपत्ति युक्तिसंगत लग सकती है, लेकिन चूंकि इस पुस्तक लिखने का एक उद्देश्य यह दिखलाना भी है कि यदि किसी मलयाली युवती के पास उसके स्वभाविक व्यक्तिगत गुणों तथा बुद्धिमत्ता के अतिरिक्त अंग्रेजी का ज्ञान भी हो तो वह अपने सर्वोपरि हितों, जैसे विवाह के लिए साथी का चुनाव, आदि के लिए क्या-क्या कदम उठाएगी। अतः मैंने महसूस किया कि इन्दुलेखा का दुनिया की सबसे अधिक समृद्ध भाषा का ज्ञान अत्यावश्यक है।

आप देखेंगे कि मैंने उन घटनाओं का भी वर्णन किया है जिनमें इन्दुलेखा ने अंग्रेजी भाषा का अध्ययन किया तथा अन्य विशिष्टताओं का उपादान हुआ। इस विवरण में असम्भाव्यता की सम्भावना का निर्णय में जरूर पाठक के हाथों सौंपता हूं।

जहाँ तक माधवन की प्रेम कहानी तथा इसी अध्याय में दिए गये उसके मिलन-प्रसंग का प्रश्न है तो मेरी विनम्र राय में उनके प्रेमालाप एवं बातचीत के ढंग को पढ़े-लिखे नायर वर्ग की किसी जोड़ी के स्तर अनुसार बनावटी नहीं कहा जा सकता। मलाबार में ऐसी कई युवतियां हैं जो इन्दुलेखा की भांति ही अपने प्रेमियों से बात करती हैं और जहाँ तक उनकी सगाई कराने के ढंग का प्रश्न है, मेरे विचार में इसमें कोई अजीब या असाधारण बात नहीं है। मेरे पास ऐसे कई उदाहरण हैं। सम्मान्य **तरवाड** परिवारों की कई पढ़ी लिखी एवं सुसंस्कृत युवतियों ने प्यार की खातिर अपने कारणवनों की अवज्ञा करते हुए विवाह किया। भारत हो अथवा इंगलैण्ड, प्यार एक ही है। विवाह के मामले में मलाबार की सभी युवतियों को कारणवनों के अत्याचारों का सामना करना पड़ता है; फिर भी भारत में ऐसी कोई युवती नहीं जिसे अपना पति चुनने के लिए मलाबार की नायर युवतियों से अधिक स्वतंत्रता है। मलाबार पर पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव की शुरुआत से पहले भी यहाँ कई ऐसी युवतियाँ हुई हैं जो संस्कृत की विद्वान थीं, जो संस्कृत में कविताएँ लिखा करती थीं तथा जिन्हें संगीत का अच्छा ज्ञान था। बीस साल बाद मलाबार में ऐसी सैकड़ों युवतियाँ होंगी जो सिर्फ सच्चे और प्यार के आधार पर अपने पति का चुनाव स्वयं कर पाएँगी। अपनी इस कहानी में माधवन के प्रणय-प्रसंग के विवरणों का उद्देश्य मलाबार की नौजवान युवतियों

को यह बताना है कि यदि उन्हें अपना जीवन साथी चुनने की स्वतंत्रता मिल जाए तो उनका जीवन कितना खुशी-भरा हो सकता है; और यह कि एक नौजवान औरत के लिए आनन्द की कोई सीमा नहीं रह जाती यदि उसे शादी की उम्र पा लेने पर माधवन जैसे निष्कलंक चरित्र वाले, खूबसूरत, पढ़े लिखे नौजवान को देखने, समझने, सराहने और प्यार करने का अवसर मिले, जो पहले साथी और फिर दोस्त बनकर उसके करीब आता चला जाए और अन्ततः उससे प्यार करने लगे; इतना प्यार करे मानो वह दुनिया भर की खुशियों का स्रोत हो, उसके बिना जीना बेमानी लगे और जिसकी खुशी के लिए वह अपना सर्वस्व न्यौछावर करने के लिए तैयार हो। केवल पवित्र, मधुर एवं पारस्परिक प्रेम से जन्मे सम्बन्धों को ही वैवाहिक रूप लेने का अधिकार है तथा मेरी गहन इच्छा है कि नायर औरतें (जिन्हें वैवाहिक मामलों में दूसरी हिन्दू स्त्रियों की अपेक्षा कहीं अधिक स्वतंत्रता है) अपने पति के चुनाव के लिए यही मार्ग अपनाएँ।

इस अध्याय का अन्त इस **अवलोकन** से होता है कि पंचु मेनन को इन्दुलेखा की माधवन से विवाह करने की इच्छा की जानकारी होने के बावजूद उस समय ऐसी शादी का विरोध करने की भावना वास्तव में नहीं रखते। आप देखेंगे कि पंचु मेनन और माधवन के बीच झगड़ा उनकी सगाई हो जाने के चन्द महीनों के बाद ही होता है। इस झगड़े के बाद ही पंचु मेनन सगाई तोड़ने का निश्चय करता है।

एक साधारण पत्र में बीस अध्यायों (छपाई के ४९८ पृष्ठ) का संक्षिप्त सारांश बेशक असम्भव ही है।

पंचु मेनन द्वारा इन्दुलेखा और माधवन का विवाह न होने देने का निर्णय लेने के बाद की घटनाएँ ऐसे हालातों में मलाबार के किसी भी नायर तरवाड में घटने वाली घटनाओं से भिन्न नहीं इसलिए उनका विशेष जिक्र करना आवश्यक नहीं। इनका उद्देश्य मलाबार के विभिन्न प्रकार के लोगों का रेखाचित्र प्रस्तुत करना है। इसमें मैं कहाँ तक सफल हुआ हूँ इसका फैसला तो बेशक पाठकगण कर सकेंगे। विभिन्न पात्रों के माध्यम से उच्च एवं निम्न प्रतिष्ठा वाले नायरों, विभिन्न श्रेणी के नम्बूदरियों, पट्टर ब्राह्मणों आदि को चित्रित किया है। इसी प्रयास में उन उच्च यूरोपीय अधिकारियों तथा उनके देश के अन्य मित्रों के आपसी सम्बन्धों (अपनी नजर में) का भी हवाला दिया गया है जो एक दूसरे को पूरी तरह से समझते हैं। इन सब विषयों का जिक्र करने हेतु कभी-कभी कहानी के क्षेत्र को

मलावार से वाहर भी ले जाया गया है।

आप देखेंगे कि पंचु मेनन को यह शक था कि केवल इन्दुलेखा ही नहीं वल्कि उसकी माँ (जो पंचु की अपनी वेटी है) भी माधवन का इन्दुलेखा से व्याह कराने की इच्छुक थी और उसने वात आगे वढ़ाने में उन दोनों की चोरी-छिपे मदद भी की। यह सव पता चलने पर वह वूढ़ा गुस्से से पागल हो जाता है और अपनी देवी माँ की कसम खाकर प्रतिज्ञा करता है कि माधवन और इन्दुलेखा का कभी विवाह न होने देगा। किन्तु संकीर्ण वुद्धि वाले कारणवन को शीघ्र अहसास हो जाता है कि वह अपनी नातिनी को माधवन का ख्याल छोड़ने के लिए मनाने में विल्कुल असमर्थ है। वह इस सम्वन्ध को तोड़ने की कई कोशिशें करता है। वह इन्दुलेखा का रिश्ता एक वहुत ही रईस एवं प्रभावशाली नम्वूदरीपाद (जो ऐसे रईस, लम्पट, फिजूलखर्च और अस्थिरचित्त नम्वूदरी का प्रतिनिधित्व करता है) के साथ इस उम्मीद से कराने की कोशिश करता है कि एक रईस होने के नाते वह इन्दुलेखा का दिल जीतने में सफल होगा। लेकिन उस नम्वूदरीपाद को इस कोशिश में वहुत शर्मनाक असफलता का सामना करना पड़ता है। फिर भी पंचु मेनन उसे खुश करने के लिए अपनी एक भानजी (एक अपढ़, असहाय कन्या) का हाथ उसी लम्पट, चरित्रहीन के हाथ में सौंप देता है जो इन्दुलेखा से प्यार करने के साथ-साथ पंचु मेनन के ही घर की अन्य स्त्रियों पर भी प्रेम न्यौछावर करने में लगा था जिनमें इन्दुलेखा की माँ भी एक थी।

पंचु मेनन की भानजी से विवाह करने के पश्चात, नम्वूदरीपाद इन्दुलेखा से वदला लेने के लिए यह अफवाह फैला देता है कि इन्दुलेखा उसकी रखैल वन गई है। नम्वूदरीपाद का एक धूर्त और शरारती कारिन्दा लोगों को इस झूठी खवर का विश्वास कराने में सफल हो जाता है। माधवन (जो अपने चाचा से झगड़े के वाद से अपना तरवाड घर छोड़ मद्रास रहने लगा था) उस वूढ़े के विरोध की परवाह न कर इन्दुलेखा से विवाह करने के लिए मद्रास से वापिस आ रहा था तो उसे यह खबर मिली कि इन्दुलेखा उस नम्वूदरीपाद की पत्नी या रखैल वन गई है। विभिन्न कारणों से, जो झूठे तो थे लेकिन ऊपर से विश्वसनीय थे, दुर्भाग्यवश माधवन को इस कहानी पर विश्वास करना पड़ा और स्वाभाविक ही है कि इसका विश्वास करने के वाद उसे इतना दुःख तथा पीड़ा होती है कि वह विना तथ्यों की जानकारी किए देश छोड़ने का फैसला कर चल देता है। यहाँ तक कि वह मलावार में अपने घर भी नहीं जाता। माधवन उत्तर भारत चला

आता है। माधवन के प्रवास के दौरान हुई घटनाओं का वर्णन किया गया है। अपने प्रेमी के प्रति वफादार इन्दुलेखा माधवन का पता लगाने के प्रयत्नों में सफल हो जाती है। माधवन को वास्तविकता का पता चलता है और वह फौरन मलावार लौटकर इन्दुलेखा से विवाह कर लेता है। बूढ़ा कारणवन, पंचु मेनन को (जो हालांकि संकीर्ण वुद्धि था किन्तु वह दिल का उतना अधिक वुरा नहीं है और जो अपनी नातिन इन्दुलेखा को वहुत चाहता था) परिस्थितियों के दवाव में आकर झुकना पड़ता है और वह धनलोलुप ब्राह्मण पुजारियों द्वारा उन दोनों के हित के लिए सुझाया गया प्रायश्चित करके अपनी शपथ वापिस लेता है और कहानी खत्म होती है।

अठारहवां अध्याय मेरे कुछ मित्रों के विशेष आग्रह पर लिखा गया था; इसके पहले हिस्से में वास्तविकता अथवा आधुनिक अ-धर्म पर मनन किया गया है जो कि पढ़े लिखे मलयाली लोगों में प्रचलित है। और दूसरा भाग 'राष्ट्रीय कांग्रेस' के लाभ एवं हानि पर एक वहस के रूप में प्रकाश डालता है। यह वार्तालाप माधवन, उसके पिता और उसके एक चचेरे भाई के वीच होता है जो कि एक स्नातक है लेकिन कांग्रेस-विरोधी तथा नास्तिक भी।

माधवन एक नरमपन्थी कांग्रेसी है लेकिन नास्तिक नहीं। माधवन के पिता कट्टर हिन्दू हैं और इस वार्तालाप में यही दिखाया गया है कि इन तीनों व्यक्तियों के धर्म के वारे में विचार क्या हैं और यह कि गोविन्दन कुट्टी को कांग्रेस से कितनी नफरत है जवकि माधवन इसका थोड़ा-वहुत समर्थक है, हालांकि उसे कांग्रेस के वर्तमान संविधान तथा गतिविधियों में कमियाँ नजर आती हैं जिसके वारे में वह कांग्रेस को सूचित करेगा ताकि उन्हें दूर किया जा सके।"

इन्दुलेखा : एक अध्ययन

इन्दुलेखा उन्नीसवीं शताब्दी के नायर तरवाडों अथवा 'मरूमक्कथायम' के संयुक्त परिवारों के जीवन की कहानी है। कुछ सामान्य घटनाओं तथा विशिष्ट पात्रों से हमारा साक्षात्कार होता है। संचालक वर्ग का चित्रण भी बहुत अच्छा है, जैसे, **तरवाड** के कारणवन, उसकी जागीर का स्वरूप, **तरवाड** की स्त्रियों तथा छोटे सदस्यों के प्रति और नियमानुसार रिश्तेदारों के प्रति उसका व्यवहार तथा उनकी प्रतिक्रियाएं। किन्हीं विशेष उद्देश्यों को ध्यान में रखकर ही चन्दु मेनन ने उपन्यासों की रचना की और निस्सन्देह पात्रों एवं घटनाओं का चुनाव तथा स्वरूप इन उद्देश्यों के अनुसार ही किया गया है। अत: **इन्दुलेखा** में पंचु मेनन तथा **शारदा** में कोप्पुण्णी अच्चन जैसे बूढ़े कारणवनों को तेज मिजाज तथा उद्धत रूप में चित्रित किया गया है। अपने नाती द्वारा तरवाड के एक तरुण सदस्य के प्रति उचित व्यवहार की मांग किए जाने पर पंचु मेनन माधवन को दण्ड देना चाहता है। वह एक अवकाश-प्राप्त तहसीलदार है, उसकी उम्र सत्तर वर्ष की है और वह "चेम्बपियोट पूवल्ली के धनी परिवार" का कारणवन है। उसका गुस्सा ऐसा था कि जिस पर काबू नहीं पाया जा सकता और वह पुरानी विचारधारा का कुलपति तो था ही। "वह ह्रस्वाकृति, बलिष्ठ शरीर और गौर-वर्ण का था और सुन्दर दीखने जैसा उसमें सिर्फ उसका चेहरा ही था। वह गंजा था और उसके तीन दांत ऊपर के तथा पांच दांत नीचे के जबड़े से नदारद थे; उसकी खूनी आंखें थीं। वह अपनी धोती के ऊपर कमर में सोंने की करधनी पहनता था। गले में सोने की माला तथा सिर पर एक ऊनी टोपी भी पहनता था और हाथ में एक चांदी की मूठ वाली छड़ी लेकर चलता था। पूवल्ली में रहने वालों का एक भी दिन ऐसा गुजरता हो जब उनके कान उसकी गाली-गलौज से बहरे न हो जाते हों इस पर यकीनन शक किया जा सकता है।" **इन्दुलेखा** में दिए गए सुन्दर शब्द-चित्रों का यह सिर्फ एक उदाहरण मात्र है।

हालांकि वह हर वक्त गुस्से से भभकता व अंगारे छोड़ता रहता है ऐसी बात भी नहीं तथा इन्दुलेखा के साथ उसके सम्बन्धों से स्नेह एवं पश्चाताप झलकता है।

सूरी नम्बूदरीपाद को एक लम्पट तथा एक वेवकूफ के रूप में दर्शाया गया है। "जब वह हंसता था तो उसका मुंह एक कान से दूसरे कान तक खिचकर फैल जाता था, उसकी नाक टेढ़ी तो नहीं थी पर उसके चेहरे पर छोटी जरूर पड़ती थी। और वह चलने की वजाय कौवे की तरह फुदकता था। उसके पास कई रखैलें थीं तथा वह अपने आपकी इस दुनिया का वास्तविक 'कामदेव' समझता था। क्या किसी मनुष्य को स्त्रियों का प्रेमपात्र बनने का-सा आनन्द कहीं और मिल सकता है? नम्बूदरीपाद पूछता था। यही उसकी दार्शनिकता थी। पात्र की रचना वहुत ही अच्छी और प्रभावशाली ढंग से की गई है। चन्दु मेनन को डर था कि कहीं इससे यह गलतफहमी न उत्पन्न हो जाए कि वह इस पूरी जाति को कलंकित करना चाहते हैं। हालांकि उपन्यास प्रकाशित होने पर इस पात्र को लेकर काफी उत्तेजना रही। चन्दु मेनन ने अपने विचार स्पष्ट करते हुए कहा, "फिर भी मलावार के किसी भी समुदाय के लिए मेरे मन में इतनी इज्जत नहीं जितनी कि नम्बूदरियों के लिए है। मेरा ऐसे कई नम्बूदरियों से परिचय है जो अपनी बुद्धि एवं क्षमताओं के लिए विख्यात हैं तथा मुझे गर्व है कि उनमें से कुछ मेरे करीव के मित्र हैं।" उन्होने इन्दुलेखा से भी कहलवाया है—वह लड़की जिसने उस प्रख्यात सूरी नम्बूदरीपाद को उसकी असलियत से पहचान करवाई—"हर जाति की तरह नम्बूदरियों में भी वहुत से दूरदर्शी लोग हैं।"[1]

तथापि चन्दु मेनन ने अपने उपन्यास में सूरी नम्बूदरीपाद के माध्यम से ही इतनी सारी हास्य सामग्री की रचना की। चरित्र चित्रण की तरह इन्दुलेखा के हास्य ने पीढ़ी-दर-पीढ़ी पाठकों को आकर्षित करने में एक शक्तिशाली चुम्बक का काम किया। उपन्यास पढ़ते वक्त प्रत्येक दृश्य में सूरी नम्बूदरीपाद के आते ही हास्य का आगमन होता है विशेष रूप से जब वह मंच पर आता है।[2] जब वह सुनहरे 'कामदेव' की तरह अपनी पालकी में से प्रकट होता है; जब वह युवतियों पर अपनी उन कथित सफलताओं की शेखी बघारता है; इन्दुलेखा से मिलते समय उसकी बातों और प्रतिक्रियाओं की ओर ध्यान जाते ही हंसी आने लगती है। वह मज़ाहिया दृश्य भी है जब इन्दुलेखा ने उसे अस्वीकृत कर दिया है और

१. पृष्ठ ९४

२. उपन्यास का नाटक में रूपान्तरण हुआ है तथा कई वार वहुत सफल रूप से मंचित भी किया गया है।

वह निर्भीक रूप से कल्याणि कुट्टी का पीछा करते हुए औरतों के स्नानगृह में जा घुसता है। कई मौकों पर मुखिया होने के नाते पंचु मेनन को जो गुस्से के दौरे आते हैं वह भी हंसने का कारण वनते हैं, जैसे गोपालन, शीनू पट्टर तथा चात्तर मेनन आदि से मिलते समय। वे चन्दु मेनन द्वारा रचित मनोरंजन के अच्छे साधन हैं-- नम्बूदरीपाद एक विदूषक की तथा पंचु मेनन वात वात पर आग उगलने वाले क्रोधी व्यक्ति की भूमिका अदा करते हैं। कुछ अन्य हास्यास्पद दृश्य भी हैं जैसे केशवन का मशीनों के प्रति अनभिज्ञता का दर्शन और उसका भय कि सूरी नम्बूदरीपाद उसकी पत्नी को भगाकर ले जाएगा।

इसके अतिरिक्त एक दूसरे ही सांचे में ढले पात्र भी हैं जैसे इन्दुलेखा, माधवन, गोविन्दन कुट्टी। माधवन तथा इन्दुलेखा आदर्श पात्र हैं। माधवन "एक वहुत ही सुन्दर, प्रतिभासम्पन्न और अद्भुत क्षमताओं वाला नौजवान था।" वह वहुत ही अच्छा विद्वान और खिलाड़ी था, "वे सभी यूरोपीय जो माधवन के सम्पर्क में आते पहली ही मुलाकात में उससे अत्यन्त प्रभावित हो जाते तत्पश्चात् उसके मित्र वन जाते थे।" चन्दु मेनन क्या आत्मकथाकार थे ?

उन्होंने इन्दुलेखा जैसे अन्य आदर्श पात्र का शब्द-चित्रण भी वहुत अच्छा किया है। सुन्दर युवतियों में "इन्दुलेखा सर्वोपरि थी।" "उसकी त्वचा का रंग कढ़ाई की हुई उसकी पोशाक से जिसे वह कमर पर वांधती थी, इतना अधिक मिलता था कि देखने पर उन दोनों में कोई अन्तर पकड़ पाना असम्भव था।" उसके वालों, उसकी आंखों वगैरह की प्रशंसा करने के वाद वे स्वीकारते हुए कहते हैं, "जिन अनगिनत आकर्षणों ने मिलकर इस अद्वितीय सुन्दरता की रचना की है उस इन्दुलेखा के साथ कोई भी लेखक न्याय कर पाए ऐसा असम्भव है।" उसे अंग्रेजी, संस्कृत और संगीत का अच्छा ज्ञान था, चित्रकारी और सुई-कारी में भी निपुण थी। उसमें प्रगतिशील एवं पारम्परिक आदतों का सुन्दर समन्वय था। उसका चरित्र मोहित कर देते वाला था। "जन्म के समय उसका नाम माधवी रखा गया था। लेकिन जव कृष्ण मेनन (उसके पिता) ने उसकी दिन प्रतिदिन वढ़ती खूवसूरती को देखते हुए उसे इन्दुलेखा अथवा चन्द्र की किरण कहना शुरू कर दिया और फिर यह नाम सदा के लिए उसका हो गया।" इन्दुलेखा की विभिन्न विशिष्टताओं का विवरण पूरे छह पृष्ठों में किया गया है तथा अन्त में चन्दु मेनन ने लिखा है, "इन्दुलेखा प्रेम का अवतार थी, मनुष्य मात्र के लिए जो प्रेम है उसका स्वरूप था अतः उसके नाना के घर में कोई भी

ऐसा व्यक्ति नहीं था जो उसकी किसी भी इच्छा अथवा रुचि को पूरा करने से मना करे। अपने परिवार में उसको किसी रानी जैसा सम्मान मिलने के बावजूद उसके किसी भी कार्यकलाप अथवा व्यवहार के प्रति किसी को कोई शिकायत नहीं हुई।[१]

इन चरित्रों के चित्रांकण से उपन्यास का एक विशेष उद्देश्य हमारे सामने आता है अर्थात मलयालियों, विशेष तौर पर युवतियों को अंग्रेजी भाषा के ज्ञान से होने वाले लाभों की महत्ता का वर्णन। कहानी के अनुसार कल्याणि कुट्टी की उम्र लगभग इन्दुलेखा के बराबर ही है किन्तु वह अंग्रेजी नहीं जानती। वह चुप-चाप "एक जीवित सूअर अथवा किसी अन्य जानवर की भांति" इस्तेमाल किए जाने के लिए अपने आपको समर्पित कर देती है। उसे "घसीट" कर उस कमरे में "ढकेल" दिया जाता है जहां चारपाई पर बैठा सूरी नम्बूदरीपाद उसकी प्रतीक्षा कर रहा है। उसके कारणवन के आदेशानुसार उसे इन्दुलेखा (जिसका विवाह नम्बूदरीपाद से होना था) के बदले अपने आपको विवाह के लिए प्रस्तुत करना ही पड़ा।

दूसरी ओर इन्दुलेखा जिसने अंग्रेजी की शिक्षा ली थी, उसने अपनी सुन्दरता से नम्बूररीपाद को चकाचौंक कर दिया किन्तु फटकारते हुए यह भी कह दिया कि वह जबरदस्ती अथवा उसकी इच्छा के विरुद्ध विवाह करने के लिए बिल्कुल तैयार नहीं होगी। जब पंचु मेनन उससे इस विषय पर बात करता है, वह अटल रहती है। यह देखकर कि वह मानने को तैयार नहीं, पंचु मेनन कहता है, "देखा तुमने? इसकी अंग्रेजी किस कदर फूट-फूटकर सामने आ रही है?" तब अठारह वर्ष की इन्दुलेखा कहती है, "बेशक! मगर नानाजी, मैं तो मलयालम में ही बात कर रही थी।" "पूवल्ली" के सर्वोपरि पैतृक मुखिया को इस जवाब ने कितना स्तम्भित कर दिया होगा इसका अन्दाज लगाया जा सकता है। फिर भी इन्दुलेखा से वह बस इतना ही कह पाता है, "ओ हां-हां क्यों नहीं। क्या मैं नहीं जानता कि तुम कितनी चालाक हो?" बाद में पंचु मेनन को मानना पड़ता है कि "मुझे दुनिया में किसी से कोई डर नहीं, लेकिन पता नही क्यों मुझे इन्दुलेखा से डर लगता है—और उसका गुस्सा मुझसे बरदाश्त नहीं होता।"[२] जब माधवन उससे

१. पृष्ठ १२
२. पृष्ठ ८६

मलावार की स्त्रियों की आलोचना करता है तो वह उसे भी फटकार देती है।

अन्त में चन्दु मेनन कहते हैं कि उन्होंने यह पुस्तक इसलिए लिखी क्योंकि "इसके माध्यम से मैं अपने साथी देशवासियों को विशेष रूप से यह वतलाना चाहता था कि यदि भारत की स्त्रियों को शिक्षा ग्रहण करने के लिए वह सव सुविधाएं दे दी जाएं जो मर्दों को प्राप्त हैं तो उससे कितना लाभ होगा।" कल्याणि कुट्टी पर हो रहे अत्याचार का हवाला देते हुए वह कहता है, "मेरे देश की प्रिय युवतियो, क्या तुम्हें इससे शर्म नहीं आती ? आप में से कुछ ने संस्कृत पढ़ी है तथा कुछ ने संगीत सीखा, लेकिन इतना ही काफी नहीं। यदि आप वास्तव में ज्ञान अर्जित करना चाहती हैं तो आपको अंग्रेजी भाषा सीखनी ही होगी। तभी आप वह सव वातें जान पाएंगी जिन्हें आज के युग में जानना बहुत जरूरी है और इसी जानकारी से आप उस सत्य को पकड़ सकती हैं कि आपकी जन्मकथा भी वही है जो मर्दों की है, आपको भी मर्दों की तरह प्रतिनिधित्व करने का हक है; और यह कि औरतें मर्दों की गुलाम नहीं हैं।"[1] कई ऐसे उद्देश्यपूर्ण उपन्यास हैं जो उच्च वर्ग के लोगों की कमियों को प्रकाश में लाते हैं तथा वड़े-वड़े उद्योग क्षेत्रों, चिकित्सा क्षेत्र, आश्रमों एक सर्वसत्तात्मक प्रशासन आदि की वुराइयों का भण्डाफोड़ करते हैं। इस उपन्यास में शिक्षा के प्रचार पर वल दिया गया है, विशेषकर भारतीय नारियों की अंग्रेजी शिक्षा पर ताकि वे अपमान तथा अत्याचार से मुक्त हो सकें।

इन्दुलेखा कोई गम्भीर नहीं वल्कि व्यापक उपन्यास है। इसमें न तो पात्रों की गहन मनोवृत्तियों की संरचना है और न ही कथानक में जटिल अन्तर्धाराएं हैं। यह सिर्फ पूरी ईमानदारी के साथ कही गई सीधी-सादी कहानी है। किसी वात को पूर्णतया स्पष्ट करने के लिए वह पाठक को विश्वास में लेते हुए वहुत ही रुचिपूर्ण ढंग से कहते हैं। कहानी में माधवन और इन्दुलेखा की मुलाकात होने से पहले ही मेनन पाठक को चुपके से यह बता देते हैं कि "उनकी अन्तर्धाराएं पहले से ही विवाह वन्धन में वंध चुकी हैं।" "दोनों के दिलों में एक-दूसरे के लिए प्यार के वीज अंकुरित हो चुके थे किन्तु किसी ने भी इसे प्रकट करने का संकेत तक नहीं दिया।" फिर भी चन्दु मेनन पाठकों को इसे स्पष्ट कर देते हैं। वह पाठकों को नम्बूदरियों के वारे में अपने विचारों का स्पष्टीकरण देते हैं ताकि वे उन्हें

१. पृष्ठ ३६८

गलत न समझ बैठें। वे पाठकों को स्पष्ट रूप से बता देते हैं कि सूरी नम्बूदरीपदा इन्दुलेखा नहीं बल्कि कल्लियानी कुट्टी पर सफल होता है। हालांकि माधवन को इसकी कोई खबर नहीं दी जाती। कोई दूसरा उपन्यासकार, अपने हिसाब से एक अधिक बेहतर उपन्यास लिखने हेतु, कहानी मे रहस्य की संरचना करता और शायद पाठकों को इस जानकारी से वंचित रखता। किन्तु **इन्दुलेखा** में सब कुछ पूर्णतया स्पष्ट है, बिल्कुल वैसे का वैसा जो अक्सर किसी **तरवाड** परिवार में होता है। अतः सगे-सम्बन्धियों और दो पीढ़ियों के बीच उत्पन्न अलग-अलग विचार हैं, वैवाहिक समस्याएं हैं तथा बाहरी तत्वों के हितकर तथा विनाशकारी प्रभाव आदि हैं। प्राचीन तरवाड जीवन में नम्बूदरी जैसे तत्व अक्सर मिल जाते हैं। चन्दु मेनन ने सिद्ध कर दिया कि ऐसे जाने-पहचाने पात्रों तथा रोजमर्रा की घटनाओं से लोकप्रिय कहानियों की रचना की जा सकती है। एक आम आदमी के लिए ऐसी कहानियों को समझ पाना एवं उनका सही मूल्यांकन कर पाना इन कहानियों की अपेक्षा कहीं अधिक आसान होता है जो अजनबी लोगों, अन-जानी जगहों एवं उनके समय से दूर के विषयों से सम्बन्ध रखती हों। यह उसके लिए बिल्कुल वैसा ही है जैसे किसी फनकार अथवा भविष्यवादी कलाकृति की अपेक्षा एक यथार्थवादी चित्र अथवा मूर्ति को अधिक बेहतर ढंग से समझ पाना तथा मूल्यांकन कर पाना।

घटनाओं तथा चरित्रों की भांति उपन्यास की भाषा भी मलयाली परिवारों की जानी-पहचानी भाषा ही है। तब ऐसी धारणा थी कि आम बोल-चाल की मलयालम भाषा का किसी सम्मानजनक स्तर की साहित्यिक कृति की रचना के लिए सन्तोषजनक प्रयोग नहीं हो सकता। इन्दुलेखा की भूमिका में चन्दु मेनन कहते हैं, "मैंने इस पुस्तक में उसी भाषा का प्रयोग किया है जो मैं साधारणतया घर में बोलता हूं। हालांकि मुझे संस्कृत भाषा का भी थोड़ा-बहुत ज्ञान है किन्तु मैंने जान-बूझकर केवल उन्हीं संस्कृत शब्दों का इस्तेमाल किया है जो हम मलयालियों की बोल-चाल की भाषा का एक अंग बन गए हैं।" चन्दु मेनन ने अपनी निपुण लेखनी से इस घरेलू भाषा का प्रयोग कर उपन्यास को अधिक पठनीय, पात्रों को अधिक सहज एवं पाठकों के बहुत करीब ला दिया है।

चरित्र-चित्रण **इन्दुलेखा** की श्रेष्ठतम विशेषताओं में से एक है। कुछ उपन्यास अपने कथानक की जटिलताओं एवं उनके सुलझाव से आकर्षित करते हैं, कुछ अपने अनूठे अलौकिक अथवा रहस्यमयी तत्वों से तथा कुछ अपनी घटनाओं एवं

पात्रों की वहुरंगी भव्यता से। किन्तु इन्दुलेखा मात्र एक प्रेम-कथा है जिसमें एक पुराने विचारों वाले झगड़ालू कारनावन के कारण सच्चे प्रेम की राह में वाधाएं उत्पन्न होती हैं लेकिन अन्त में वूढ़े का प्यार उसके पैतृक गुस्से पर विजय पाने में सफल होता है और दोनों प्रेमियों का मिलन होता है। हालांकि कथानक में विशेष कुछ भी नहीं किन्तु घरेलू किस्म के वार्तालापों, मनोहर वर्णन एवं शानदार चरित्र-चित्रण के कारण कहानी की इस कमी का आभास तक नहीं होता। चन्दु मेनन ने गुस्सैल पान्चू मेनन, लम्पट सूरी, उत्तम माधवन तथा अति संवेदनशील इन्दुलेखा को वहुत ही सुन्दर ढंग से चित्रित किया है। रेलवे स्टेशन के रेस्तरां के एक वेटर से अपराध-स्वीकरण हेतु पुलिस इंस्पेक्टर द्वारा अपनाए गए असफल प्रयासों का ढंग अत्यन्त यथार्थवादी है। कई पात्र इस हद तक सजीव हैं कि वे आजाद हो जाते हैं, अर्थात् वे कहानी समाप्त होने पर भी जीवित रहते हैं। उदाहरण के लिए, सूरी नम्वूदरीपाद और पंचु मेनन। इसका श्रेय उत्कृष्ट चरित्र-चित्रण को ही जाता है। ऐसे कई अन्य पात्र हैं शेक्सपियर के शाईलाक तथा फिाल्सस्टाफ, डिकेन्स का पिकविक तथा बोडहाऊस का जीव्ज़।

माधवन कहानी का आदर्श पुरुष पात्र है। अपने विचारों में वह युक्ति-संगत है तथा इतना जोशीला भी कि उन विचारों के बारे में तर्क वितर्क कर सके। उदाहरणतया, तरवाड के एक तरुण की शिक्षा को लेकर उसके चिड़चिड़े कारणवन से हुई वहस, तथा वाद में अंग्रेजी शिक्षा और भारत की राजनीति के वदलते प्रतिमानों के बारे में उसकी बड़े-वूढ़ों के साथ हुई वातचीत। माधवन युवा पीढ़ी का प्रवक्ता है जो मलावार के आन्तरिक एवं सामाजिक जीवन में पुराने रीति-रिवाजों के कारण होने वाले पक्षपाती रवैये पर प्रश्नचिह्न लगाता है। वह स्वतन्त्र भारत की भी कल्पना करता है। उसके और पंचु मेनन के वीच एक पीढ़ी का अन्तर है तथा वूढ़ा कुलपति एक से अधिक वार पापी जमाने तथा चरित्रहीन नौजवानों का हवाला देता है। "ये सारे के सारे भ्रष्ट हैं" युवकों के बारे में यही उसकी राय है।

अव प्रश्न यह उठता है कि वुद्धिमान एवं प्रिय माधवन, घृणा से ग्रस्त हो मलावार छोड़ने से पहले इन्दुलेखा के सूरी नम्वूदरीपाद से विवाह की अफवाह के तथ्यों की जानकारी के लिए जांच-पड़ताल क्यों नहीं करता? इन्दुलेखा स्वयं दुःखी और निराश हो जाती है। वह कहती है, "मुझे सवसे ज्यादा दुःख तो इस वात का है कि मुझे इतनी अच्छी तरह से जानने-समझने के वावजूद उन्होंने इतनी

जल्दी यह विश्वास कैसे कर लिया कि मैं इतनी नालायक हो गई हूं।" माधवन की ओर से एक ही स्पष्टीकरण है, वही पुरानी कहावत, "प्यार विवेक खो बैठता है।" वैसे भी उसका भटकना केवल थोड़े समय के लिए ही था। उसने अपने पिता को लिखा, "मैं न तो आत्महत्या करने जा रहा हूं न कोई अन्य जुर्म। इस वक्त मेरा इरादा यात्रा करने के अलावा कुछ भी नहीं, आप निश्चित रहें। मैं वापिस जरूर आऊंगा।" आदि। जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ती है, पाठक का परिचय माधवन जैसे प्रमुख पात्रों के अलावा कुछ कम प्रमुख पात्रों से भी होता है। उदाहरण के तौर पर माधवन के माता-पिता—गोविन्द पणिक्कर तथा पार्वती अम्मा जो हमेशा भलाई के लिए चिंतित रहते हैं; और इन्दुलेखा की मां लक्ष्मी कुट्टी अम्मा जिसे देखकर सूरी नम्बूदरीपाद "सिर पूरी तरह से घूम गया" इसके अतिरिक्त कुछ अन्य पात्र हैं जैसे चान्तर मेनन जो पंचु मेनन की पहली विस्फोटक आग का सामना करता है; इन्दुलेखा की नौकरानी जो सूरी नम्बूदरीपाद की सनक को थोड़ा गुदगुदाती है; तथा गोविन्दन जो अपने मालिक सूरी की कई नाजुक मौकों पर रक्षा करता है एवं उसे इन्दुलेखा के बदले कल्याणि कुट्टी (जो अंग्रेजी नहीं जानती) का नाम सुझाता है। एक अत्यन्त रुचिपूर्ण कहानी की रचना में इन सब पात्रों में से प्रत्येक का अपना एक छोटा-सा किन्तु रोचक योगदान है।

एक उपन्यास के रूप में **इन्दुलेखा** में कुछ विशेष गुण विद्यमान हैं। इस उपन्यास की अनवरत लोकप्रियता इसका प्रमाण है। इस सबके साथ इसकी एक कमी भी सामने आई है, वह है संरचनात्मक कमजोरी। कहा जाता है कि पुस्तक का अठारहवां अध्याय कहानी के लिए बिल्कुल अनावश्यक था। यह उपन्यास का सबसे लम्बा (पूरे उपन्यास के छटे भाग से कुछ अधिक) अध्याय है। इसमें अंग्रेजी पढ़ाए जाने, ईश्वर तथा धर्म, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस तथा कुछ अन्य राजनैतिक समस्याओं पर वार्तालाप किया गया है, जिसमें माधवन, उसके पिता गोविन्द पणिक्कर तथा पंचु मेनन का लड़का गोविन्दन कुट्टी मेनन भाग लेते हैं। यह वार्तालाप माधवन द्वारा बिना किसी को अपना अता-पता दिए मलाबार छोड़कर चले जाने के उपरान्त इन तीनों के बम्बई में पुनर्मिलन के शुभ अवसर के समय होता है। गोविन्द पणिक्कर और गोविन्दन कुट्टी मेनन दोनों माधवन की तलाश में निकलते हैं और बम्बई में एक मित्र के यहां उनकी माधवन से मुलाकात हो जाती है। और वे उसे बताते हैं कि किस प्रकार इन्दुलेखा उसके वियोग में घुलती जा रही

है। उन्हें अगले रोज बम्बई छोड़कर मलाबार लौटना था। रात जो सोने से पहले वे इन सब विषयों पर बातचीत करने में लग जाते हैं। समीक्षक कहते हैं कि जब माधवन इन्दुलेखा से मिलने के लिए मचल रहा है और जब पणिक्कर और मेनन के मन में भी उनके मिलन के लिए उत्साह भरा हुआ है, ऐसे समय इन विषयों पर एक लम्बे वार्तालाप में उलझना क्या स्वाभाविक है ? यह भी कहा जा सकता है कि माधवन इतने दिनों की चिन्ता भोगने के बाद यह जानकर बहुत खुश हुआ हो कि इन्दुलेखा उसकी प्रतीक्षा कर रही है। पणिक्कर एवं मेनन भी इतने दिनों माधवन के गायब हो जाने की चिन्ता से ग्रस्त होने के बाद उसे अपने सामने स्वस्थ एवं सकुशल देखकर बेहद प्रसन्न महसूस कर रहे हों। अतः वह एक ऐसी शाम थी जब भयानक तनावों को मुक्ति मिली थी और तीनों के पास करने को और कुछ भी न था अतः विभिन्न विषयों पर बातें करते हुए रात बिताना उन तीनों के लिए स्वाभाविक ही था। श्री बालकृष्णन का कहना है कि उन दिनों भारत में प्रश्न करने की बढ़ती प्रवृत्ति की ओर मलाबार की पुरानी पीढ़ी का ध्यान आकर्षित करने के लिए ही चन्दु मेनन ने यह अध्याय लिखा।

इसी समीक्षक का आगे कहना है कि टालस्टाय, दोस्तोव्स्की एवं विक्टर ह्यूगो आदि अन्य विख्यात उपन्यासकारों ने भी अपनी कुछ कथाओं में ऐसे निक्षिप्त खण्डों को स्थान दिया है। साथ ही यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि शायद मेनन को स्वयं भी इस अध्याय को रखने के बहुत ज्यादा इच्छुक नहीं थे क्योंकि उन्होंने कहा है, "अठारहवें अध्याय की रचना मैंने अपने कुछ मलयाली मित्रों के विशेष आग्रह पर की थी।"[1] उन्होंने ऐसी क्षमा-याचना की ? एक तथ्य और भी है कि अभी हाल ही में प्रकाशित **इन्दुलेखा** के एक संस्करण में इस अध्याय को एकदम हटा दिया गया है और नए पाठक को इसका पता ही नहीं चलता। सच्चे अर्थों में उपन्यासकार होने के नाते शायद चन्दु मेनन इस अध्याय को न रखना चाहते हों किन्तु उनमें उपन्यासकार होने के अलावा एक आदर्शवादी और सुधाकर होने की जो प्रवृत्ति थी उसने उन्हें अपने दोस्तों को खुश करने के लिए इस अध्याय को रख लिया। वैसे भी पूरे उपन्यास की रचना भी तो 'एक दोस्त' की खुशी के लिए ही की गई थी।

१ p xxiv

इस विवादास्पद अध्याय के अतिरिक्त इस उपन्यास के अंग्रेजी की शिक्षा का प्रतिवादक होने के नाते भी आलोचना की गई है। जैसा कि हम पहले भी कह चुके हैं कि **इन्दुलेखा** में गुजरती तथा उभरती हुई दोनों पीढ़ियों के बीच के चिर-कालीन संघर्ष की वार-वार पुनरावृत्ति देखने को मिलती है। इन पीढ़ियों के वीच उम्र का अन्तर उतना महत्वपूर्ण नहीं जितना कि अंग्रेजी की शिक्षा का है। बूढ़े तथा पुराने विचारों वाले पात्र पंचु मेनन तथा सूरी नम्बूदरीपाद अंग्रेजी नहीं जानते। चन्दु मेनन उनके मुंह से फूहड़ बातें कहलवाते हैं जैसे यह कि माधवन तर्कसंगत है, वह जूते पहनता है, अंग्रेजी शिक्षा के कारण औरतें साफ नहीं रहतीं वगैरह-वगैरह। पंचु मेनन को एक रूढ़िवादी तानाशाह के रूप में चित्रित किया गया है। वह हर किसी पर (सिवाय इन्दुलेखा के) आक्रोश दिखाता रहता है। क्योंकि अंग्रेजी की शिक्षा के अभाव में उसके मस्तिष्क का विकास नहीं हुआ।

सूरी नम्बूदरीपाद एक जोकर है। उसे अंग्रेजी भाषा का ज्ञान नहीं। देखिए कि चन्दु मेनन उन्हें इन्दुलेखा के घर जाने के लिए कैसे कपड़े पहनाते हैं।[1] 'वहां उसमें से (एक पालकी) एक सुनहरी आकृति छलांग लगाकर वाहर निकली। इसका सिर एक सुनहरे रंग की टोपी से ढंका था और उसका शरीर एक सुनहरे रंग की पोशाक में लिपटा हुआ था। इसके शरीर के वस्त्र ऊपर से नीचे तक सुनहरे रंग के थे और इसके पांवों में काठ के जूतों पर भी सोना जड़ा हुआ था। दसों अंगुलियों में सोने की अंगूठियां पहनी हुई थीं, और शायद जैसे इतना काफी नहीं था इसलिए इसने अपने ऊपर की पोशाक को सोने के रंग का लबादा ओढ़ रखा था, इसके हाथ में एक छोटा-सा सुनहरी शीशा था जिसका वार-वार प्रयोग होता रहता था।" "उसके" की वजाए "इसके" शव्द का प्रयोग ध्यान देने लायक है जो पालकी से निकली आकृति के लिए प्रयुक्त है, इस तरह नम्बूदिरि के लिए नपुंसकवाची शव्द का प्रयोग करके उसे उपन्यासकार ने निकृष्ट कोटि का दर्शाया है।) इनके विरुद्ध माधवन और इन्दुलेखा का चित्रण किया गया है जो अंग्रेजी जानते हैं और जो लगभग सम्पूर्ण मानव हैं। और फिर, माधवन के रहस्य-मयी ढंग से गायब हो जाने के वाद उसकी दुःखी मां पार्वती अम्मा इन्दुलेखा को सुझाव देते हुए कहती है, "खैर, मेरी प्यारी बच्ची, अगर तुम उसे अंग्रेजी में खत लिखकर कहो कि तुम उससे शादी करने के लिए तैयार हो, तो मेरा वेटा दो दिन

१. पृष्ठ १३२

में वापिस लौट आएगा।" पाठकों के मन में एक रोचक प्रश्न उठ सकता है वह यह कि पत्र अंग्रेजी ही में क्यों लिखा जाए। अगर इन्दुलेखा मलयालम में पत्र लिखेगी तो क्या माधवन लौटकर नहीं आएगा? भारत के वर्तमान ढांचे को देखते हुए अंग्रेजी शिक्षा का इतना जोरदार पक्ष लेना, प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से इसे उपन्यास का एक अवगुण ही कहा जाएगा। शायद उन दिनों जब मलयाली साहित्य ज्ञान के विस्तार के साथ तरक्की नहीं कर पा रहा था, सामान्य एवं तकनीकी दोनों दृष्टियों से तो चन्दु मेनन का यह कहना उचित ही था। विशेषतः युवतियों से कि "आज के जमाने में जिन चीजों की जानकारी आपको होनी ही चाहिए उसे अंग्रेजी भाषा के ज्ञान के बिना नहीं जाना जा सकता।" उन्होंने यह भी लिखा, "मैं यह नहीं कहता कि अंग्रेजी के बिना कोई ज्ञानार्जन सम्भव नहीं।"

अंग्रेजी का इतना प्रतिवाद करने वाले चन्दु मेनन को शायद आज हम रूढ़िगत साम्राज्यवादी कह सकते हैं। किन्तु उन्नीसवीं शताब्दी में जन्मे होने के कारण, एक तरह से **इन्दुलेखा** एक क्रान्तिकारी उपन्यास हो जाता है तथा चन्दु मेनन भारतीय स्त्रियों की निरक्षरता की खिलाफत करने वाले क्रान्तिकारी का रूप धारण कर लेते हैं और वह चाहते हैं कि उनमें शिक्षा का प्रसार हो, विशेषतया अंग्रेजी का।

जब हम **इन्दुलेखा** का एक उभरती पीढ़ी द्वारा एक गुजरती पीढ़ी के खिलाफ क्रान्तिपूर्ण उपन्यास के रूप में विश्लेषण करते हैं तो हमें इसकी एक घटना याद हो आती है जहां पंचु मेनन स्वयं, जब वह बच्चा था, किस प्रकार उस समय प्रचलित परम्परा को तोड़ता है जिसके अनुसार किशोरों को जूते पहनने की मनाही थी पंचु मेनन स्वयं घटना का वर्णन करता है।[१]

जब वह सैण्डिल पहने पकड़ा जाता है तो उसकी भयानक पिटाई होती है और वह बीस दिन तक बिस्तर में पड़े रहने को मजबूर हो जाता है तथा उसने चाचा के आदेशानुसार उन सैण्डिलों को जलाकर राख कर दिया जाता है। तब से वह कभी भी सैण्डिल नहीं पहनता तथा किसी दूसरे को पहने देखता तो वह बहुत भयभीत हो उठता था।

अतः पंचु मेनन की किशोर अवस्था में भी पुरानी और युवा पीढ़ी के बीच

१. पृष्ठ ३५४

संघर्ष मौजूद था। किन्तु उस समय पुरानी व्यवस्था की पकड़ अभी मजबूत थी अतः पंचु को अपने सैण्डिलों से वंचित होना पड़ा। किन्तु जब वह अपने बुढ़ापे की उम्र तक पहुंचता है तो नई पीढ़ी की पकड़ ज्यादा मजबूत हो चुकी है अतः माधवन जूते और सैण्डिल पहनना जारी रखता है। 'वह घर में भी उनका प्रयोग करता है।' अपने परिवार के एक अनन्तरवन को शिक्षा दिलाने से इन्कार करने वाले पंचु मेनन के न्याय को भी माधवन प्रश्न करता है। एक अन्य अनन्तरवन गोपालन कुछ पैतृकों द्वारा असंगत कथ्यों का विरोध करता है। पंचु मेनन के इन शब्दों से स्पष्ट होता है कि यह पुरानी पीढ़ी की पराजय की लड़ाई है, "आज सब कुछ गड़बड़ा रहा है। यह जमाने के भ्रष्ट हो जाने का संकेत है।"

जब पंचु मेनन तथा केशवन नम्बूदरी इन्दुलेखा से कहते हैं कि उसका विवाह तय करने के लिए उसकी राय लेना आवश्यक नहीं तो इन्दुलेखा जरा भी भयभीत अथवा दब्बू नहीं रह जाती।

इन्दुलेखा बोल उठी—'यह बड़ी अजीब बात है! बात ऐसी ही है तो मुझसे पूछने की क्या ज़रूरत है? मामला मुझसे पूछे बिना तय हो सकता था। लगता है, निर्णय पहले ही लिया जा चुका है।'

लेखक ने लिखा है कि पंचु मेनन इन्दुलेखा के कान्तिमय अंगों से सुस्पष्ट, कौंधा देने वाले दृढ़ निश्चय से दुबककर रह जाता है।

वह सूरी नम्बूदरीपाद की भी परवाह नहीं करती तथा उसके बांकेपन और बेवकूफी भरी बातें सुनने को तैयार नहीं। उसे पहले ही यह सलाह दे दी गई थी कि वह इस रईस विवाहार्थी के साथ श्रद्धामय ढंग से पेश आए एवं सही शब्दों का इस्तेमाल करे। जब वह कहती है कि उसे उन शब्दों का ज्ञान नहीं तो उसे अनुमति दी जाती है कि वह जैसे चाहे बात करे। "यही तो मैं करना चाहती हूं" इन्दुलेखा कहती है और वह उससे वाकई वही कहती है जो वह कहना चाहती थी। सूरी के साथ हुई दो मुलाकातों में वह उसकी फूहड बातों के कारण उसे कई बार उधेड़कर रख देती है। नई पीढ़ी की शिक्षित मलयाली लड़की अत्याचार के खिलाफ लड़ने को तैयार है। चन्दु मेनन मानते थे कि ऐसे अत्याचार का कारण स्त्रियों में शिक्षा का अभाव ही है और वे उस समय प्रचलित इस धारणा के सख्त खिलाफ थे कि स्त्रियों को अशिक्षित तथा स्कूलों से दूर ही रखना चाहिए। बंगाल के कुछ भागों में यह माना जाता था कि अगर स्त्रियां शिक्षा ग्रहण करती हैं तो वे जल्दी ही विधवा हो जाती हैं। उन दिनों अर्थात १८८२ के

आसपास आंकड़े कहते हैं कि औसतन भारत की ८०० स्त्रियों में से केवल एक स्त्री को शिक्षा मिल पाती थी।[1] उन्होंने **इन्द्रलेखा** के अन्त में लिखा है कि "भारत की स्त्रियों को समझ लेना चाहिए कि यदि वे अज्ञानी तथा अपढ़ रहती हैं तो मर्द न केवल उनसे घृणा करेंगे बल्कि अपने व्यवहार में उसे व्यक्त भी करेंगे।" इस समय के हालात देखते हुए स्त्रियों की शिक्षा का समर्थन करने वाले चन्दु मेनन को भी एक क्रान्तिकारी ही कहा जाएगा। चन्दु मेनन मलावार तथा भारत की स्त्रियों को शिक्षित होने तथा अत्याचारों से मुक्ति हासिल करने की परिकल्पना युक्त व्यक्ति थे और साथ ही भारतवासियों के विदेशी शासन से मुक्त होने के इच्छुक थे।

इन्दुलेखा की निरन्तर वढ़ती लोकप्रियता ही इसकी श्रेष्ठता का प्रमाण है। इसका पूरा श्रेय लेखक को जाता है क्योंकि उन्होंने केवल थोड़े से 'मसालों', जैसे चरित्र चित्रण, हास्य तथा घरेलू विवरण शैली आदि का प्रयोग कर इसे रचा। जैसे एक चित्रकार जिसके पास विभिन्न रंग होते हुए भी वह केवल दो या तीन रंगों का प्रयोग कर एक आलीशान चित्र वना डालता है। सभी रंगों का प्रयोग न करना चित्र के दोष का नहीं वल्कि चित्रकार की श्रेष्ठता का प्रतीक है। उसी प्रकार हालांकि उपन्यास की रचना हेतु कई 'रंग' होते हैं जैसे, कथानक, चरित्र, भाषा, अपराध, रहस्य, हास्य, विज्ञान इत्यादि। किन्तु थोड़े से 'रंगों' का प्रयोग करके जो एक श्रेष्ठ कृति की रचना करता है, निश्चय ही एक विशिष्ट प्रतिभा वाला उपन्यासकार होगा। ऐसे ही थे चन्दु मेनन।

१. स्त्री-शिक्षा पर राष्ट्रीय समिति की रिपोर्ट, १९५९।

"अभियोग तैयार है, वकीलों से राय ली जा चुकी है"—गे

कहानी रामेश्वरम के एक होटल के कमरे से शुरू होती है। रामन मेनन जो कि एक कलाकार है, अपनी पत्नी कल्याणी अम्मा और लड़की शारदा के साथ ठहरा हुआ है। शारदा की उम्र इस वक्त बारह साल की है। रामन मेनन का एक छात्र शंकरन और एक नौकर कृष्णन भी उनके साथ थे। एक दिन कल्याणी अम्मा अचानक बीमार पड़ गई और असमय चल बसीं। रामन मेनन ने जब तक यह तय न हो जाए कि आगे क्या करना है, तब तक वहीं रुकने का निश्चय किया क्योंकि ये लोग उत्तर भारत से यहाँ रामेश्वरम सिर्फ तीर्थ यात्रा के ध्येय से आए थे, उत्तर भारत में ये लोग कई बरसों से रह रहे थे। और दक्षिण भारत से इनके सम्बन्ध करीब-करीब समाप्त हो चुके थे। कुछ दिन बाद रामन मेनन ने अपनी प्रिय भोलीभाली लड़की को अपने भूतकाल की कथा सुनाई।

कल्याणी अम्मा मलाबार के एक अमीर **तरवाड** पूंचोलक्कारा ईदम घराने की लड़की थी। उसका मामा कोप्पुण्णि अच्चन उस परिवार का कारणवन अथवा मुखिया अत्यन्त उग्र व दुष्ट स्वभाव का व्यक्ति था। अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए उसने कल्याणी अम्मा की शादी उसकी इच्छा के विरुद्ध एक अमीर लेकिन बुड्ढे आदमी से कर दी। इस विवाह से सामंजस्य स्थापित न कर पाने के कारण वह काफी दुःखी रहने लगी। एक दिन निराश होकर उसने परिवार के एक परिचर व्यथि पत्तर और नौकर कृष्णन के साथ घर त्याग दिया। बनारस पहुचकर उसने वहाँ कुछ दिन रुकने का निश्चय किया। उनके इस प्रवास के दौरान उनकी मुलाकात जाने-माने उभरते हुए कलाकार रामन मेनन से हुई जो उत्तर भारत में रहकर कला का अभ्यास कर रहा था। वह मलाबार का एक पुराना सम्मानित **तरवाड** तेक्किल्लन्तु घराने का सदस्य था, लेकिन कल्याणी अम्मा के घराने जितना सम्माननीय नहीं था, न ही उतना अमीर। वह जीविकोपार्जन के लिए कोई धंधा सीखने के लिए घर छोड़कर यहाँ चला आया था। उसने चित्रकारी सीखकर उत्तर भारत में ही काम शुरू कर काफी यश और पैसा कमाया।

इस प्रकार कल्याणी अम्मा और रामन मेनन की मुलाकात हुई। कुछ ही दिनों में दोनों ने शादी कर ली। तत्पश्चात वैत्ति पट्टर, कल्याणी अम्मा को छोड़कर वापस मलावार चला गया। वह देखने से ही वदमाश लगता था और वह वाकई में वदमाश था भी। वह इस उम्मीद में कल्याणी अम्मा के साथ आया था कि कभी मौका पाकर वह उसके पैसे गहने चुराकर भाग जाएगा। लेकिन जब उसने रामन मेनन से शादी कर ली तब वह समझ गया कि अब उसकी दाल नहीं गलने वाली है। इसीलिए वह उसे छोड़कर चला गया। कल्याणी अम्मा और रामन मेनन के एक लड़की पैदा हुई जिसका नाम उन्होंने शारदा रखा। जब वहा अपनी बीवी और बच्ची के संग सुखपूर्वक जिन्दगी बसर कर रहा था, तभी उसे एक प्रकार के आंख के रोग ने आ घेरा जिसके कारण उसे चित्रकारी का पेश त्याग देना पड़ा। उसी वक्त जिस बैंक में उसका सारा पैसा जमा था, दीवालिया हो गया। इन दो विपत्तियों से दुःखी होकर रामन सपरिवार दक्षिण भारत की तीर्थयात्रा पर निकला और रामेश्वरम पहुंच गया।

शंकरन जिसकी उम्र इस वक्त इक्कीस साल है, आठ साल की उम्र से ही रामन मेनन के पास चित्रकारी सीखने के लिए आ गया था, उसके उत्तर भारत आने से पहले ही से उसके साथ था। रामन मेनन ने अपनी लड़की को बताया कि शंकरन एक विश्वासपात्र और बुद्धिमान लड़का है और जरूरत के वक्त उस पर भरोसा किया जा सकता है।

रामन मेनन को उसकी पत्नी की मृत्यु के इस तीसरे धक्के ने स्तम्भित कर दिया था और वह समझ नहीं पा रहा था कि आगे क्या करे। इसलिए वह वहीं रामेश्वरम में रुक गया ताकि जब उसका दिमाग सोचने समझने की स्थिति में आ जाए तब क्या करना है, इस बात का निर्णय किया जाएगा। एक दिन शंकरन की मुलाकात वैत्ति पट्टर से हो गई जो रामेश्वरम घूमने आया हुआ था। वैत्ति पट्टर कृष्णन से भी मिला और उससे उसने रामन मेनन और उसके परिवार के सारे हाल मालूम कर लिए। जब से वैत्ति पट्टर कल्याणी अम्मा और रामन मेनन को उत्तर भारत में छोड़कर गया था, तब से अब तक काफी साल गुजर चुके थे। जब उसे सारे समाचार मिले, उसके दिमाग ने काम करना शुरू कर दिया। वह रामन मेनन के पास गया और उसे कल्याणी अम्मा के बारे में बताया। उसके धन-दौलत के बारे में, ऊंची प्रतिष्ठा के बारे में। रामन मेनन ने उस क्रूर कारणवन कोप्पुण्णि अच्चन और तरवाड के अन्य सदस्यों के बारे में भी सुना। उसे

पता चला कि कल्याणी अम्मा की छोटी बहन लक्ष्मी की मृत्यु का कारण भी यही कोप्पुण्णि अच्चन है। असल में उसकी शादी उदयनतली एस्टेट के एक प्रभावशाली व सम्मानित जमींदार राम वर्मा तिरुमुलपाड से हुई। लेकिन कोप्पुण्णि अच्चन का उससे झगड़ा हो गया और उसने लक्ष्मी को अपने पति से मिलने से रोक दिया। इसी दुःख के कारण लक्ष्मी की मृत्यु हो गई। तरवाड में अभी एक और महिला सदस्या हैं, लेकिन शादी के कई वर्ष गुजर जाने के बाद भी वह सन्ताहीन हैं और अब उनके बच्चा होने की कोई उम्मीद भी नहीं है। इसलिए **मरुमक्कत्तायम** कानून के अनुसार, शारदा ही जायदाद की मुख्य उत्तराधिकारिणी है, क्योंकि उस **तरवाड** का नाम आगे बढ़ाने की वही एक उम्मीद है। जब रामन मेनन को अपनी बीवी के **तरवाड** के बारे में यह सब जानकारी मिली तो उसने वापस मलाबार जाने का निश्चय किया। अतः कुछ ही दिनों में यह दल रामेश्वरम छोड़कर मलाबार पहुँच गया और वैत्ति पट्टर के निमंत्रण पर कुछ दिनों के लिए उसके घर में रहना स्वीकार कर लिया।

कुछ दिन पश्चात रामन मेनन ने शंकरन को एक पत्र देकर कोप्पुण्णि अच्चन के पास भेजा। उस पत्र में उसने कल्याणी अम्मा की मृत्यु और उसकी लड़की शारदा के बारे में लिखा। उसने उनसे अपने सम्बन्धों के बारे में और अपने दुर्भाग्य के बारे में भी लिखा कि किस प्रकार वह शारदा का पालन-पोषण उसकी प्रतिष्ठा के अनुकूल करने में असमर्थ है। उसने इस बात की ओर भी संकेत किया कि शारदा आजकल किन दुर्भाग्यपूर्ण स्थितियों में जी रही है और उसका भविष्य पूरी तरह से दयालु व उदार अच्चन पर ही निर्भर करता है। अन्त में उसने अच्चन से प्रार्थना करते हुए लिखा कि अब वह स्वयं ही यह निश्चित करें कि पूंचोलक्करा जैसे प्रसिद्ध **तरवाड** की सदस्या शारदा का पालन-पोषण किस प्रकार होना चाहिए।

अपने ऊंचे पद की प्रतिष्ठा के अनुरूप कोप्पुण्णि अच्चन ने वह पत्र स्वयं न पढ़कर अपितु अपने एक क्लर्क से पढ़वाया। रामन मेनन का पत्र सुनने के बाद उसे लगा कि यह सब निरी धोखेबाजी है। वह अचम्भित था कि एक ऐसा व्यक्ति जिसका किसी ने कभी नाम भी नहीं सुना, इस प्रकार के अनर्गल दावे करे और परिवार की प्रतिष्ठा को कलंकित करे। यह और भी बदनामी की बात थी कि उस पत्र की बातें कारणवन को हमेशा घेरे रहने वाले नौकरों और दस्तंदाजों ने भी सुन ली थीं। कोप्पुण्णि अच्चन गुस्से में भड़कते हुए चिल्लाया, "पकड़ लो उस

कुत्ते को जो यह पत्र लाया है। उसे पीटो। उसकी हड्डी-पसली एक कर दो। उसने ईमानदार सम्मानित जीवन व्यतीत करने वाले सज्जनों की वेइज्जती की है।" उसकी यह आज्ञा सुन जैसे ही नौकरों ने शंकरन की खोज शुरू की वह अन्धाधुंध भाग निकला। इस दौरान अच्चन ने अनन्तरवन राघवन उण्णि से बात करके निर्णय लिया कि वैत्ति पट्टर को बुलाकर उससे सलाह ली जाए।

शंकर जब पूंचोलक्करा से बचकर भागा आ रहा था, रास्ते में उसकी मुलाकात अच्चन के अनन्तरवन के एक सन्देशवाहक कृष्णन उण्णि से हो गई। वह एक सज्जन व्यक्ति था और उसके दिल में कल्याणी अम्मा के लिए काफी सहानुभूति थी। वह शादरा से मिलना चाहता था और यह देखना चाहता था क्या वाकई में वह कल्याणी अम्मा की लड़की है और यदि है तो वह उसकी सहायता करना चाहता था। रास्ते में शंकरन की मुलाकात शंकु वारियर से भी हुई जिसकी एक बार बनारस में रामन मेनन, कल्याणी अम्मा और शारदा वगैरह से मुलाकात हो चुकी थी।

इसी दौरान, राम वर्मा तिरुमुलपाड को भी एक स्थानीय दस्तंदाज कुन्दन मेनन से यह खबर मिल गई थी कि शारदा व उसके पिता आस-पास कहीं ठहरे हुए हैं। अच्चन ने तिरुमुलपाड को कई अनावश्यक मुकदमों में फंसाया था जिनसे तिरुमुलपाड को आर्थिक तौर पर हानि और वेइज्जती सहन करनी पड़ी, क्योंकि अच्चन अपने साधनों और तिकड़मों के कारण हमेशा जीत जाता था। अच्चन झूठे मुकदमे दायर कर तिरुमुलपाड से कुछ मन्दिरों की जायदाद और रियायतें हथिया चुका था; उसके कुछ किरायेदारों को उसके खिलाफ उकसाकर उसकी कुछ जमीन से उसे वंचित कर दिया; उसने उन दो नम्बूदरियों को डराकर तिरुमलपाड के परिवार की दो स्त्रियों से होने वाले उनके वैवाहिक सम्बन्धों को तुड़वा दिया तथा अन्य और कई तरहों से तिरुमुलपाड की वेइज्जती की। उसने लगातार कई-कई तरह से तिरुमुलपाड को दुःखी व अपमानित किया। अच्चन ने तिरुमुलपाड की पत्नी अर्थात शारदा की मां की बहन को उससे अलग रखा, जो इसी दुःख से घुल-घुलकर मर गई। तिरुमुलपाड इन सभी अनुभवों को कभी भी भुला नहीं पाया और हमेशा इसी तलाश में रहता था कि कैसे कोई मौका मिले और वह कोप्पुण्णि अच्चन से अपना बदला चुकाए। कुन्दन मेनन यह जानता था और दस्तंदाजी[1] के अपने पेशे के प्रति वफादारी दिखाते हुए उसने तिरुमुलपाड

१. चन्दु मेनन ने ऐसे दस्तंदाजों का काफी अच्छा वर्णन किया है।

को सलाह दी कि अपने विरोधी को हराने का यह एक अच्छा मौका है। कुन्दन मेनन को यह भी ज्ञात था कि शारदा और उसके पिता वैत्ति पट्टर के यहां ठहरे हुए हैं। तिरुमुलपाड ने कुन्दन से वैत्ति पट्टर, शारदा और उसके पिता को अपने भवन में लाने के लिए कहा।

उधर रामन मेनन जब शारदा के कारणवन के पत्र का इन्तजार कर रहा था, वैत्ति पट्टर का शैतान दिमाग नई योजनाएं बनाने में लगा हुआ था। उसे याद था कि रामन मेनन के कारण ही वह कल्याणी अम्मा से उसके पैसे नहीं हथिया पाया था। उसे विश्वास था कि रामन मेनन के पास काफी सारे पैसे और जेवर हैं। रामन मेनन से उसके पैसे और सोना छीनने की एक योजना उसके दिमाग में तैयार हो गई थी और वह सिर्फ उपयुक्त समय और स्थान का इन्तजार कर रहा था। लेकिन जैसे-जैसे दिन बीतते गए और उसने यह महसूस किया कि जब तक वफादार शंकरन रामन मेम और शारदा के साथ है तब तक कोई भी उनका कोई नुकसान नहीं कर सकता। तब पट्टर ने और भी खतरनाक हरकत की। उसने एक जहर तैयार किया और नौकर कृष्णन के साथ ऐसा इंतजाम किया कि वह यह जहर शंकरन के दूध में मिला दे। लेकिन वह दूध रामन मेनन से मिलने आए एक नम्बूदरी ने पी लिया और उसकी मृत्यु हो गई। दरअसल वह बदकिस्मत नम्बूदरी शारदा की सुन्दरता की तारीफ सुन उसे देखने आया था। कृष्णन ने, जो कि पट्टर के हाथों का खिलौना था, तुरन्त ही सारे बर्तनों को धोकर रख दिया। वैत्ति पट्टर ने यह चिल्लाते हुए कि नम्बूदरी हैजे से मर गया है, उसके अन्तिम संस्कार करने की जल्दी मचाई। इस तरह उसने सोचा कि उसके इस घृणित अपराध के सारे सबूत खत्म हो जाएंगे।

रामन मेनन और शंकरन को शक तो नहीं हुआ, फिर भी शारदा सहित उन्होंने अपना निवासस्थान बदल लिया। वैत्ति पट्टर अभी भी उनके आस-पास रहता था, दिखावा तो ऐसा करता था मानो यह सब वह उनके भले के लिए कर रहा हो पर अन्दर ही अन्दर अपनी मनोकामना पूरी करने की योजनाएँ बनाता रहता। लेकिन उसकी ये सारी योजनाएँ तब एकाएक धूल-धूसरित हो गईं जब तिरुमुलपाड का सन्देशवाहक शारदा व अन्य सबको लेने के लिए आ गया। फिर भी वैत्ति पट्टर ने किसी तरह गिड़गिड़ाकर रामन मेनन और शारदा से कुछ पैसे और जेवर ठग लिए।

कोप्पुण्णि अच्चन को राघवन उण्णि से यह समाचार मिला कि तिरुमुलपाड

ने रामन मेनन और शारदा को शरण दी है। राघवन उण्णि के प्रतिभावान पुत्र कृष्ण मेनन ने यह सलाह दी कि रामन मेनन को एक उचित जवाब तुरन्त भेज देना चाहिए नहीं तो वह मुकदमा दायर कर सकते हैं। तुरन्त ही अच्चन ने अपने एक दूसरे दस्तंदाज त्रासन मेनन को अपने पुराने वकील कर्पूर अय्यर और सामू मेनन से सलाह लाने के लिए भेज दिया। वे लोग उस वक्त वकीलों के क्लब में बैठे थे जिसका विख्यात वर्णन इस उपन्यास में दिया है। वहां कुछ भी पूर्ण नहीं था, छतों में छेद थे, दीवारें गायब हो गई थीं, और कोई भी फर्नीचर अपने आप में पूरा नहीं था। फिर भी वहां पर कुछ वकील मौजूद थे और वे लोग साहित्य के बारे में बहस कर रहे थे। उपन्यासों और तत्कालीन साहित्यकारों द्वारा प्रयोग की जा रही संस्कृतनिष्ठ मलयालम के बारे में चन्दु मेनन अपने विचार इन वकीलों के द्वारा कहते हैं। और जहां तक रामन मेनन के पत्र के जवाब का सम्बन्ध है, कर्पूर अय्यर सलाह देते हैं कि कृष्ण मेनन द्वारा लिखा हुआ जवाब रामन मेनन को भेज दिया जाए। जवाब यह था कि रामन मेनन द्वारा लिखा हुआ पत्र झूठा है और अगर उसने और उसके सलाहकारों ने तरवाड का शोषण करने और अपमानित करने का अपना यह प्रयास नहीं छोड़ा तो फिर उन्हें इसका फल भुगतना पड़ेगा।

एक सप्ताह बाद, कोप्पुण्णि अच्चन को, राघव मेनन नामक एक वकील द्वारा भेजा हुआ एक रजिस्टर्ड पत्र मिला जिसमें लिखा था कि शारदा को पूंचोलक्कश तरवाड की एक उत्तराधिकारिणी की हैसियत से स्वीकार कर लिया जाए अन्यथा मजबूर होकर कोर्ट में मुकदमा दायर करना पड़ेगा। पत्र देखकर अच्चन को झुंझलाहट भी हुई और चिन्ता भी। उसने तुरन्त ही वैत्ति पट्टर और ज्योतिषी चात्तु पणिक्कर को बुलवा भेजा। चात्तु पणिक्कर जानता था कि उसे अच्चन को खुश करना है। कौड़ियां फेंककर और फिर गिनती करके उसने बहुत ही नाटकीय ढंग से उद्धरणों को अपने अर्थ देते हुए घोषणा की कि ग्रह अच्चन के अनुकूल हैं और मुकदमे में सफलता निश्चित है। जब तिरुमुलपाड ने यह सुना कि अच्चन ने चात्तु पणिक्कर से सलाह ली है, तब उसने भी पणिक्कर को अपने घर बुलवा भेजा। पणिक्कर जानता था कि तिरुमुलपाड क्या सुनना चाहता है। अतः वही सब मंत्र व कौड़ियों का खेल दोहराया जो उसने अच्चन के यहां दिखाया था; उसने वही सब उद्धरण वगैरह दोहराते हुए तिरुमुलपाड को यह विश्वास दिला दिया कि नक्षत्र आदि की स्थिति अच्चन के विरुद्ध है और सब कुछ उसके

ही पक्ष में है और विजय निश्चित है। जिन पाठकों ने इन ज्योतिषियों को काम करते हुए देखा होगा, वे जानते होंगे कि कैसे आसानी से ये लोग अपने जजमानों पर अपना विश्वास जमा लेते हैं।

कोप्पुण्णि अच्चन ने वैत्ति पट्टर को भी बुलवा भेजा था। वह भी अब तक समझ गया था कि रामन मेनन से जितना पैसा वह ऐंठ सकता था, ऐंठ चुका है और अब उसके प्रति वफादारी दिखाने से कोई लाभ नहीं होने का, बल्कि उसका विरोध करने से अधिक लाभ होगा। अतः वह वफादारी और खुशामद की प्रतिमूर्ति बनकर अच्चन के सम्मुख आ उपस्थित हुआ। उसने अच्चन को बताया कि नौकर कृष्णन शारदा की पूरी सच्ची कहानी जानता है। कृष्णन को बुलवाया गया और जैसा उसे पट्टर ने सिखाया था, उसने अच्चन को एक अनोखी कहानी सुनाई कि रामन मेनन वास्तव में त्रिवेंद्रम का रहने वाला रमन पिल्लै है और एक मुसलमान वेश्या के साथ उत्तर भारत में उज्जैन में रहता था और शारदा उसी वेश्या की लड़की है जो उसके रामन पिल्लै के साथ सम्बन्ध होने से पहले ही पैदा हो गई थी और शंकरन शराबी और जुआरी है। उसने कहा कि यह सब शंकरन की योजना है कि शारदा को कल्याणी अम्मा की लड़की बनाकर और पूंचोलक्कारा की उत्तराधिकारिणी बनाकर पेश किया जाए।

अच्चन अत्यन्त क्रोधित हुआ और वह चाहता था कि तिरुमुलपाड को तुरन्त एक पत्र भेजा जाए जिसमें उसे चेतावनी दी जाए कि वह अपने साथ एक मुसलमान लड़की को रखकर मन्दिर को दूषित न करे, न ही तालाबों और अपने भवन को। लेकिन कृष्ण मेनन ने सलाह दी कि जब तक इस बात के निश्चित सबूत न मिल जाएं कि शारदा एक मुसलमान लड़की है, ऐसा पत्र लिखना बहुत बड़ी बेवकूफी होगी। उसने कहा कि वह इस तरह के किसी भी पत्र का आलेख तैयार नहीं करेगा।

उसकी इस सलाह के बावजूद तिरुमुलपाड और उदयनतली के एक नम्बूदरी मठ को पत्र भेजे गए यह चेतावनी देते हुए कि उस इलाके में शारदा नाम की जो लड़की रह रही है वह मुसलमान है। इस पत्र ने हलचल मचा दी। विशेषतः उदयनतली के नम्बूदरियों में। तिरुमुलपाड ने यह पत्र रामन मेनन और शंकरन को भी दिखाया। पत्र में लिखी हुई बातें पढ़कर दोनों आश्चर्यचकित रह गये। उसकी इच्छा पर शंकरन ने एक जवाब लिखा। इस पत्र में यह लिखा गया कि रामन मेनन और शारदा भवन के अन्दर नहीं, बल्कि भवन के बाहर रहते हैं

और भवन के खर्चे पर भी नहीं रहते; और पत्र में लिखी बातें बेसिरपैर की, अफवाह फैलाने वाली हैं।

कुन्दन मेनन ने वकील राघव मेनन से शारदा के दावे के सभी पहलुओं के बारे में विचार-विमर्श किया। उसकी तरह के अन्य कई व्यक्तियों की तरह कुन्दन मेनन भी सिर्फ मलयालम जानता था, लेकिन अंग्रेजी के शब्दों को तोड़ मरोड़कर बोलता था। वह अपनी विद्वत्ता का सिक्का सब पर जमाना चाहता था, और जीत जाने के बाद भी बहस करता रहता था। उसका शब्दकोश इस प्रकार का था रिली एक्ट (रिलीफ एक्ट), एलूप्पी (एल्बि), बोनाफिट्टी (बोनाफाइड्स), लैविडैन्स (एविडेन्स), मेलप्पिट्टु (मैलाफाइड), रीस इन्द्रावालियम चूडिकेट्टु (रेस इन्टर एलाय्स एडजुडिकेट) इत्यादि। इस हास्यास्पद तोड़-मरोड़ के अलावा भी इन शब्दों का कुछ और अर्थ होता है, जिसे केवल मलयालम जानने वाले पाठक ही समझ सकते हैं। उदाहरण के लिए पिट्टु का अर्थ चावल का पकवान या सना हुआ आटा भी होता है और चूरिकेट्टु का अर्थ रस्सी का गट्ठर होता है। तिरुमुलपाड की इच्छानुसार कुन्दन मेनन ने यह मुकदमा राघव मेनन व एक अन्य काबिल वकील माधवन मेनन को सौंप दिया। इसी दौरान शंकरन ने शंकु वारियर से मुलाकात कर उसे कल्याणी अम्मा और शारदा के मामले में गवाही देने की सलाह दी। शंकु वारियर पहले पहल तो तय नहीं कर पाया कि वह किस पक्ष को चुने क्योंकि उसे कोप्पुणि अच्चन का डर भी था और सत्य से प्यार भी। शंकरन ने उस पर काफी जोर दिया और कहा कि शंकु वारियर के पिता कितने सम्मानित पण्डित थे और वह स्वयं अपनी पवित्रता और सत्य के प्रति प्रेम के लिए प्रसिद्ध है, अतः उसे बिना किसी अच्चन की परवाह किए सच्ची बात कहनी चाहिए।

दो पुराने प्रतिद्वंद्वियों के बीच का पत्र व्यवहार और वकीलों की बहस पूरे इलाके के लोगों को मालूम चल गई। दोनों के ही अनुगामियों ने अच्चन और तिरुमुलपाड के बीच की दुश्मनी को बढ़ाने में जो योगदान दे सकते थे, दिया।

चन्दु मेनन ने **शारदा के** ग्यारह अध्याय लिखे और उपन्यास को एक ऐसी जगह पहुंचा दिया जहाँ दोनों प्रतिद्वंद्वी न्याय के दरबार में फिर एक बार किसी भी तरह से एक-दूसरे को नीचा दिखाने की कोशिश में जुटे हुए हैं। हर एक प्रतिद्वंद्वी के पीछे घटनाक्रम को बढ़ावा देने वाले रिश्तेदारों और वकीलों की फौज मौजूद थी, सहानुभूति रखने वाले और मौके का फायदा उठाने वाले,

खुशामदी और कुतूहली, इन सबको चन्दु मेनन ने अपने विवाह आयोग और कोर्ट के अनुभवों से इकट्ठा किया था।

अचानक ऊपर से उनके लिए बुलावा आ गया। और हम सब अन्दाजा लगाने के लिए रह गए, शारदा, वैत्ति पट्टर और बाकी लोगों के बारे में, और पूंचोलक्करा इडम के भविष्य के बारे में।

अपनी मृत्यु से पहले वह सिर्फ कहानी का पहला भाग ही समाप्त कर पाए अर्थात निर्णायक दृश्यों के लिए मंच तैयार कर गए। अभियोग तैयार था, वकीलों ने अपने-अपने स्थान ले लिए थे। बाद में कुछ उत्साही लोगों जैसे मैमर्स सी० अन्तप्पाई, पी० गोपालकृष्ण कुरुप और हाल में ही पी० राधाकृष्ण मेनन ने इस कहानी को पूरा किया। इन लोगों की कहानी और चन्दु मेनन की कहानी में कहां तक समानता होती, यह बता पाना तो मुश्किल ही है। ऐसा कहा जाता है कि जब वह लकवे के रोग से ग्रसित पलंग पर पड़े थे तब उन्होंने उपन्यास को पूरा करने के सम्बन्ध में अपने जितने भी नोट्स तैयार किए थे उनको नष्ट कर दिया। शायद वह नहीं चाहते थे कि उन नोट्स के गलत अर्थ लगाए जाएं या गलत प्रयोग हो। खैर, साहित्य पारखियों का कहना है कि चन्दु मेनन की ऊंचाइयों तक कोई विरला ही पहुंच सकता है।

शारदा—एक अध्ययन

शारदा का विश्लेषण प्रारम्भ करते ही हम अनिश्चितता के धरातल में पहुंच जाते हैं। चन्दु मेनन पूरी कहानी का केवल तीसरा हिस्सा ही हमें दे पाए। कहना कठिन है कि इसके आगे कहानी किस प्रकार आगे बढ़ती अथवा चरित्र कैसे पेश आते। चन्दु मेनन ने हमें जो दिया हम उसकी समीक्षा कर सकते हैं किन्तु जो नहीं दिया उसका अनुमान मात्र ही लगा सकते हैं। श्री एम० पी० पाल 'नावल साहित्य' में कहते हैं कि "शारदा पर समीक्षा करने की बजाय दुःख प्रकट किया जाना चाहिए क्योंकि यह हमारा दुर्भाग्य है कि जिस कहानी को चन्दु मेनन ने इतने सुन्दर ढंग से लिखना शुरू किया था उसे वह पूरा न कर सके।"

कहानी की शुरूआत एक दुखद वातावरण से होती है अर्थात नायिका की मां की असामयिक मृत्यु। उस समय नायिका शारदा की उम्र बारह वर्ष है, उसके पिता का व्यवसाय और पूंजी डूब चुके हैं और वे दोनों रामेश्वरम में असहाय एवं अजनबी होकर रह गए थे।

जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ती है हमारा नए पात्रों से परिचय होता है, कृष्णन, शंकरन, वैत्ति पट्टर, कोप्पणि अच्चन, चात्तु पणिक्कर, कुन्दन मेनन, कृष्ण मेनन आदि। इन्दुलेखा की ही भांति चन्दु मेनन के चरित्र-चित्रण की निपुण शिल्पकारिता की झलक इस कहानी के पात्रों के शब्द-चित्रों में भी देखने को मिलती है। शारदा बस एक लड़की है किन्तु उसकी सुन्दरता और चरित्र देवतुल्य है। मेनन ने उसका विवरण कवित्वपूर्ण भाषा में किया है। पाठक को उसकी अद्वितीय सुन्दरता का विवरण उन्होंने तीन पृष्ठों में दिया है। वह सुन्दरता की खान है तथा लेखक के अनुसार वह यौवन-प्राप्ति पर और भी ज्यादा सुन्दर लगने लगेगी। लेखक कहता है, "उन आंखों को नमस्कार है जिन्हें एक कन्या की ऐसी सुन्दरता को देखने का सौभाग्य मिला जिसका कि क्षण प्रति क्षण विकास होता रहे उस वक्त तक जबकि वह इतना दीप्तिमय हो जाए कि दुनिया को चकाचौंध कर दे।"

लगता है कि लेखक द्वारा **शारदा** के कृष्ण मेनन में **इन्दुलेखा** के माधवन का प्रतिरूप प्रस्तुत करने की चेष्टा निहित है; उन्होंने कृष्ण मेनन की शारीरिक एवं बौद्धिक विशिष्टताओं का उल्लेख करने के लिए कुछ पृष्ठ लिखे हैं। उसका चरित्र अत्यन्त श्रेष्ठ है। वह उच्च शैक्षिक योग्यता सम्पन्न है तथा एक श्रेष्ठ वकील भी।

कोप्पुण्णि अच्चन पून्चोलक्करा इडम नामक एक रईस अभिजात वर्गीय **तरवाड** का एक चिड़चिड़ा, तानाशाह और धूर्त कारणवन है। क्या उसके चरित्र में उद्धारक तत्व हैं? क्या उसके दिल में **इन्दुलेखा** के पंचु मेनन की भांति उदारता है? इसके बारे में हम कोई अन्तिम निर्णय नहीं ले सकते क्योंकि कहानी अधूरी है।

वैत्ति पट्टर मात्र एक धनलोलुप एवं सधा हुआ बदमाश व्यक्ति है। चन्दु मेनन पट्टर की आकृति के माध्यम से उसकी धूर्तता का परिचय देते हुए कहते हैं, "वह दिखने में एकदम भद्दा था। स्याही के समान काला रंग। उसके सिर के पीछे सफेद रंग की छोटी-सी, पतली, लम्बी चोटी चूहे की पूंछ के समान लगती थी। बूढ़ा होते-होते उसने अपने कई दांत खो दिए थे और जो तीन या चार बचे रह गए थे, वे उसके मुंह से बाहर झांकते रहते। वह स्वयं उन्हें देख सकता था तथा उसके लिए एवं दूसरों के लिए उनमें से सांप के-से दांतों का घिनौनापन झलकता था। आंखें गढ़ों में धंसी हुई थीं किन्तु अक्सर वे एक नाग की आंखों की तरह चमक उठतीं। किसी वस्तु को व्यग्रता से देखते समय या उत्तेजित होकर बात करते वक्त, गम्भीरता से सोचने अथवा खुशी या आश्चर्य के समय उसे ऐसी ही घबराहट होती थी। तब अचानक उसकी आंखें बाहर निकल आने को होतीं, तथा बड़ी-बड़ी पुतलियां और बड़ी होकर नाक के दोनों ओर जड़ हो जातीं। आम तौर पर उसकी आंखें बेजान लगती थीं किन्तु इस घबराहट की प्रक्रिया से पट्टर का चेहरा क्रूरता एवं दहशत से सराबोर हो जाता जिसे देखकर आदमी भयभीत हो उठता। लगता जैसे कोई क्रोधित नाग अपना फन फैलाए डसने के लिए तैयार बैठा हो। उसके झुके और सिमटे हुए शरीर को देखकर किसी सूखी हुई टहनी का आभास होता था। कुल मिलाकर वह एक घृणास्पद राक्षस की तरह लगता था।" यही है खलनायक वैत्ति।

एक अन्य मजेदार पात्र है ज्योतिषी चात्तु पणिक्कर। कोप्पुण्णि अच्चन और राम वर्मा तिरुमुलपाड उसे काफी गम्भीरता से लेते हैं किन्तु चन्दु मेनन हमें

उसके दोहरे सम्बन्धों का पूरा आनन्द देते हैं। कोप्पुण्णि अच्चन तथा तिरुमुलपाड ज्योतिष विद्या में यकीन करते हैं और चात्तु पणिक्कर के अन्धविश्वासी। चात्तु पणिक्कर की भविष्यवाणियों के प्रदर्शन पर कोप्पुण्णि अच्चन और तिरुमुलपाड सम्मोहित होते हैं और पाठक हंसी से लोट-पोट हो जाते हैं। अच्चन की तिरुमुलपाड के खिलाफ दायर मुकदमे को जीतने के लिए चाहतु के पास काफी चालाकी भरे सवाल और व्याख्यान मौजूद हैं किन्तु साथ ही इसी मुकदमे में तिरुमुलपाड की जीत के लिए भी कम सामग्री नहीं। वह दोनों ही से उदारतापूर्वक दिए गए इनाम स्वीकार कर गायब हो जाता है, कम से कम **शारदा** के पहले भाग में। चन्दु मेनन उसके प्रस्थान के बाद ग्रीक कोरस की भांति उपदेश देते हुए कहते हैं, "मैं अब इस बदमाश के बारे में और कुछ नहीं लिखूंगा। जाने दो उसे और अपने विश्वासघाती पेशे से मेरे देशवासियों की जेबें लूटने दो।"

इस कहानी में चन्दु मेनन द्वारा रचित एक अन्य विशिष्ट पात्र है कुन्दन मेनन। वह एक चलती-फिरती 'न्यूज रील' के समान है तथा दस्तंदाजों की श्रेणी से सम्बन्ध रखता है। लेखक ने एक अन्य सजीव शब्द-चित्रण द्वारा उसका विस्तारपूर्ण विवरण देते हुए लिखा है, "मेरे अनुसार 'स्थानीय दस्तंदाज' नाम देने का अर्थ है एक ऐसा व्यक्ति जो कभी भी नियमित रूप से अथवा गम्भीरता से किसी भी काम में व्यस्त न रहा हो चाहे सरकारी सेवा हो या व्यापार, खेती, घर-गृहस्थी, पढ़ाना-लिखाना, दस्तकारी, शारीरिक श्रम, तीर्थ-यात्रा या भीख मांगना किन्तु जो कचहरी की मुकदमेबाजी के शौक में अपनी सारी सम्पत्ति गंवा चुका हो (अगर उसके पास कुछ रही हो), मुकदमों की कार्यवाही में अपने आपको वकीलों का सलाहकार होने का नाटक करता हो और कुछ नामों और विशेष वाक्यांशों आदि को रटकर अनजान लोगों को यह मानने पर मजबूर कर दे कि वह अर्जियां लिखने, दस्तावेज और घरेलू अनुबन्धों को तैयार करने में बेहद निपुण है। बड़े-बड़े और रईस परिवारों के सदस्यों के बीच मनमुटाव पैदा कर और उन्हें बेकार के मुकदमों में उलझाकर वह अक्सर अपनी गतिविधियों से उनको बरबाद कर डालता है।" कुन्दन मेनन ऐसा ही एक दस्तंदाज था जो अपनी पेशेवर गतिविधियों में उलझकर अपने **तरवाड** को बरबाद कर स्वयं ही निराश्रय हो गया। इसके बावजूद वह एक धुली हुई धोती लपेटे, अपने कन्धों पर एक दूसरा कपड़ा ओढ़े, एक छड़ी लिए, पुराने और फटे हुए जूते पहने और एक ऐसा रेशमी छाता लिए अक्सर बाहर खड़ा दिखाई दे जाता है जो अपनी उम्र की

वजह से तार-तार हो चुका है तथा रंग उड़ गया है। बुरे दिनों में भी उसका आचरण और भाषा में अभिमान पूर्ण होता। वह कभी भी किसी से अपनी खस्ता हालत का जिक्र नहीं करता कि कहीं उसकी इज्जत न चली जाए; अगर कहीं कोई इसकी बात छेड़ बैठता तो वह बहुत गुस्सा हो जाता।

इन्दुलेखा की तरह **शारदा** में भी चन्दु मेनन ने नम्बूदरियों का मजाक उड़ाया है। उनका एक दल बैठा इस पत्र को देखकर खुश हुआ जा रहा है जिसमें कहा गया है कि शारदा एक मुसलमान वेश्या की बेटी है। वे उस नम्बूदरी को घेर लेते हैं जो पत्र पढ़कर सुना रहा है। वे सब के सब, पूरी तरह नहीं तो लगभग नंगे जरूर हैं। उनमें से कुछ यह समाचार सुनने के लिए अपनी प्रार्थना के बीच से उठकर चले आए थे और कुछ बाथ-रूम जाते-जाते, कुछ सीधे शौच से लौटे थे और कुछ ने स्नान के लिए जाने से पहले अपने शरीर पर तेल पोत रखा था और कुछ पान चबाते चले आए थे। वे सब कुछ न कुछ टिप्पणियां देते जा रहे थे, सवाल पूछ रहे थे और उन सज्जन के इर्द-गिर्द उछल-कूद कर रहे थे जो पत्र पढ़कर सुना रहा था।

व्यक्तियों के शब्द चित्रण के अतिरिक्त कहीं-कहीं स्थानों का विवरण भी दिया गया है—**इन्दुलेखा** में भी और **शारदा** में भी। **इन्दुलेखा** में पूवल्ली **तरवाड** एवं सम्बन्धित सम्पत्ति के अलावा बम्बई की बन्दरगाह और उसके आसपास के इलाके का प्रशंसात्मक विवरण है। माधवन के जानकार कलकत्ता के सेन परिवार के निवास स्थान 'अमरावती' का भी विवरण है। **शारदा** में पूंचोलक्करा इडम के कुलीन **तरवाड** की भव्य सम्पत्ति का तथा उस घनी आबादी वाले व्यस्त शहर का भी वर्णन है जहाँ यह सम्पत्ति और तिरुमुलपाड का महल स्थित थे। बड़े-बड़े मन्दिरों, दफ्तरों और निवास स्थानों के बीच कहीं एक 'वकीलों का क्लब' था। वह जगह के नाम पर एक सूराख ही था किन्तु चन्दु मेनन के विशिष्ट वर्णन ने उसे मलयालम साहित्य में जरूर जगह दे दी है। उसका एक अनुवाद प्रस्तुत है—वह भवन जीर्णावस्था में था। पूरब की ओर की दीवार काफी अरसा पहले ही गिर चुकी थी किन्तु उसकी पुरानी ईंटें और मलबा अभी भी वहीं बिखरा पड़ा था। हवा और बारिश से दूरी बनाए रखने के लिए दीवार के स्थान पर नारियल के पेड़ के पत्तों से बनी एक चटाई टांग दी गई थी। आगन्तुकों को 'क्लब के कमरे' में प्रवेश करने के लिए उस चटाई को हटाना पड़ता था। उन दिनों उस कमरे में कहीं अधिक रोशनी रहती थी बजाय उस

वक्त के जबकि उसका निर्माण हुआ था। मेरे पाठकों को यह न समझना चाहिए कि और बड़ी खिड़कियां लगा देने के कारण ऐसा हुआ था। जी नहीं। छत की मरम्मत कराने के लिए चन्दा एकत्रित नहीं किया जा सका यही वजह थी। छत पर रखे पत्तों के सड़ जाने के कारण उनमें कई सूराख हो गए थे जिनमें से सूरज की रौशनी भरपूर मात्रा में चली आती। कमरे में विराजे वकीलों ने सूरज की तेज किरणों से बचने के लिए अपने सिरों को तौलियों से ढक रखा था। छत से फूटकर गिरती सूरज की किरणों के बावजूद और उनकी परवाह किए बिना ही लगता था कि वे किसी गम्भीर अध्ययन में लगे हैं। कमरे के बीचों-बीच एक मेज थी। उसकी सिर्फ तीन ही टांगें थीं। यह कोई नए अथवा तड़क-भड़क की डिजाइन वाली मेज नहीं थी। किसी जमाने में इसकी गणना चार टांग वाली मेजों में ही हुआ करती थी, किन्तु चौथी टांग के गायब हो जाने पर कुछ ईंटों और लकड़ी के ठप्पों ने एक दूसरे पर चढ़कर मेज को सन्तुलन प्रदान करने का जिम्मा अपने ऊपर ले लिया था। जमीन पर ढेर हुई दरवाजे की चौखट पर एक वकील विराजमान था। एक पुरानी अंगीठी की ईंटों को हटाकर एक बौनी दीवार की रचना की गई थी। चौखट इसी दीवार पर रखी थी और वकील उसी चौखट पर। एक जाने-माने वकील ने थोड़ी ज्यादा प्रतिष्ठित जगह सीट पर बैठा था। जैसा कि अंग्रेजी में कहते हैं, वह एक 'आराम कुर्सी' थी। जरा अधिक सच्चाई से कहें तो वह एक आरामकुर्सी का अंशमात्र थी। बस एक छोटा-सा अंश ही कहना चाहिए और उस पर बैठने वाले के पास आराम महसूस करने के सभी कारण नदारद थे। आराम से टांगें पसारने के लिए बनी सेज, उसके आधार स्तम्भों और उसकी पीठ का आधा हिस्सा गायब हो चुका था। बेंत की बुनाई का निशान तक न था। बैठने की जगह पर थोड़ी-सी बेंत अभी भी बाकी थी जिसपर एक व्यक्ति बस जरा मुश्किल से ही बैठ सकता था। कुर्सी की चारों टांगें अभी भी उससे जुड़ी थीं, पर हां एक टांग जरूर थोड़ी ढीली और डावांडोल हालत में थी क्योंकि उसपर बैठे सज्जन बड़ी बेचैनी से बीच-बीच में उसे गौर से देखने लगते थे। एक अन्य वकील बड़ी गम्भीरता से अखबार पढ़ रहा था किन्तु साथ ही पास की एक खिड़की को कसकर थामे था क्योंकि उसकी कुर्सी की चार मौलिक टांगों में से एक टांग कम हो गई थी और कहीं कोई दूसरी सीट न होने के कारण एक वकील साहब अंगीठी पर ही अपना तौलिया बिछाकर वहां जम गए थे और अपने आपको भट्टी पर बैठे एक वकील की संज्ञा से सम्मानित कर रहे थे।"

चूंकि वहां वकील इकट्ठा होते हैं, स्वाभाविक ही है कि वे विभिन्न विषयों पर उनकी बातचीत करने लगते हैं। एक दिन उनकी समकालीन मलयालम साहित्य पर बहस हो जाती है। वे उन कुछ लेखकों का मजाक उड़ाते हैं जो मलयालम रचनाओं में ऊंचे-ऊंचे संस्कृत शब्दों का प्रयोग करते हैं। उनका कहना है कि कुछ समीक्षक पुस्तक को पढ़े बिना, बस उसके बारे में दूसरों के विचार सुनकर ही उसकी समीक्षा कर डालते हैं। वे उस समय प्रचलित धारणा पर भी व्यंग्य करते हैं कि उपन्यास का कथानक जितना जटिल एवं उलझा हुआ होगा वह उतना ही विद्वतापूर्ण तथा प्रशंसात्मक समझा जाएगा। 'यहां तक कि लेखक भी उसे पढ़े तो उलझकर रह जाए।' एक महान उपन्यास का सबसे बड़ा गुण यही है। असल में देखा जाए तो वकील लोग उस समय की कुछ प्रचलित साहित्यिक पद्धतियों के बारे में चन्दु मेनन के विचारों को ही व्यक्त कर रहे हैं। संरचना की दृष्टि से यह विन्यास **इन्दुलेखा** से अधिक सन्तोषजनक है। अतः **शारदा** में अधिक विचारपूर्ण एवं बेहतर शिल्पकारिता दिखाई देती है।

संरचना और कथानक को लेकर कोई अन्तिम टिप्पणी नहीं दी जा सकती क्योंकि चन्दु मेनन ने हमें कहानी का प्रतिवेश मात्र ही दिया है। कहानी एक युवा कन्या के एक अमीर और कुलीन **तरवाड** द्वारा स्वीकारे जाने और सम्पोषण कराने के अधिकार को लेकर है। यह दावा मान्य होगा अथवा अमान्य? अच्चन और तिरुमुलपाड आगे कैसे बढ़ेंगे? शंकरन, कुन्दन मेनन और वैत्ति पट्टर का योगदान क्या होगा? क्या शंकु वारियर शारदा का मुख्य गवाह बनेगा? या कि चन्दु मेनन **इन्दुलेखा** में सेन परिवार के लोगों की भाँति बाद में दूसरे पात्रों को लाएँगे? वे उत्तर भारत के उस डाक्टर को ला सकते हैं जो शारदा के जन्म के समय वहीं मौजूद थी या फिर उत्तर भारत के किसी लखपति को लाते जिसके लिए रामन मेनन तस्वीरें बनाया करता था और जो रामन मेनन के परिवार को अच्छी तरह से जानता था। क्या कृष्ण मेनन मुकदमे में निर्णायक भूमिका अदा कर, बाद में शारदा से विवाह करेगा? इस सबके बारे में चन्दु मेनन ने हमें बस अनुमान लगाने के लिए छोड़ दिया है। एक अन्य सम्भाषण है। क्या बेकार की मुकदमेबाजी से बचने के लिए दोनों पक्ष संयम से काम लेते हुए सुलह कर लेंगे अथवा उनमें विद्यमान उत्तेजना के कारण आवेश में मुकदमे को आगे बढ़ाएँगे? यदि चन्दु मेनन अपने पाठकों को यह दिखाना चाहते थे कि किस प्रकार मुकदमे-बाजी के कारण सम्पन्न तरवाडों का विनाश हो रहा है तब तो मुकदमे को अपनी

प्रक्रिया पूरी करनी होगी जिससे दोनों दलों का भारी खर्चा हो। श्री एम० पी० पाल द्वारा उद्धत एक घटना से हम एक निष्कर्ष निकाल सकते हैं। चन्दु मेनन से मिलने आए एक मित्र ने देखा कि वे हंसते ही जा रहे हैं, हालाँकि वे अकेले थे। जब आगन्तुक ने कारण पूछा तो वे बोले, "मैं जिरह के वक्त कोप्पुणि अच्चन की प्रतिक्रियाओं के बारे में सोच रहा था। अतः वे जरूर **शारदा** के लिए कचहरी के दृश्य के बारे में सोच रहे होंगे और उसकी तफसील के निर्माण में लगे होंगे। उनकी प्रतिभा तिस पर उनका कचहरी का लम्बा अनुभव, वह दृश्य मलयालम कथा-साहित्य में सबसे आलीशान न सही लेकिन आलीशान दृश्यों की श्रेणी में जरूर आता। वह अध्याय नियति का अध्याय होता जहाँ उस नौजवान, मासूम शारदा के भाग्य का फैसला होता जो दो प्रमुख प्रतिद्वंद्वियों के बीच हुए जोरदार मुकदमे का तथा स्थानीय उत्तेजना का केन्द्र बनी। शायद कुछ अन्य प्रभावशाली चरित्रों के भाग्य का फैसला भी इसी अध्याय में होता, जैसे कोप्पुणि अच्चन, वैत्ति पट्टर, कृष्ण मेनन और शंकरन का। काफी सम्भावना है कि उपन्यास का यह अध्याय सबसे अधिक महत्वपूर्ण एवं लम्बा होता। **इन्दुलेखा** के सबसे लम्बे अध्याय प्रेमियों के बारे में हैं। उदाहरण के लिए जहाँ माधवन और इन्दुलेखा की मुलाकात होती है अथवा जब सूरी नम्बूदरीपाद पूवल्ली परिवार में वैवाहिक अभियान के सम्बाध में इन्दुलेखा एवं अन्य स्त्रियों से भेंट करता है। यह तो स्वाभाविक ही है। एक कहानी कानून और कचहरी की कला से सम्बन्धित है तथा दूसरी प्यार और प्रणय-निवेदन की कला से।

इन्दुलेखा और शारदा

इन्दुलेखा और **शारदा**, दोनों ही उन्नीसवीं शताब्दी के बाद के अर्द्धशतक के मलाबार की सामाजिक जिन्दगी की आकर्षक कथाएँ हैं। **इन्दुलेखा** की कहानी पूर्ण है जबकि **शारदा** की सिर्फ शुरुआत ही हमारे सामने है। ये दोनों उपन्यास भूतकाल से सम्बन्ध रखने वाले ऐतिहासिक उपन्यासों, भविष्य से सम्बन्ध रखने वाले 'फेन्टेसी' उपन्यासों से तथा अपराध कथाओं और विज्ञान कथाओं से भिन्न हैं। ये दोनों कृतियाँ समाज वैज्ञानिक उपन्यासों की श्रेणी में आती हैं तथा सौ वर्ष पहले के मलाबार के अमीर नायरों के जीवन से सम्बन्ध रखती हैं। जहाँ तानाशाह एवं अत्याचारी कारणवन, आज्ञापालन करने वाले अथवा प्रगतिशील अनन्तरवन, तथा स्त्री सदस्यों एवं कानूनी रिश्तेदारों को देखने का अवसर मिलता है। नायर परिवारों में नम्बूदरियों, पट्टरों एवं अन्य जातियों की भूमिका के बारे में जानकारी मिलती है। दोनों उपन्यास उन दिनों उन तरवाडों में उत्पन्न हुई वित्त सम्बन्धी अधिकार तथा विवाह आदि से सम्बन्धित समस्याओं की ओर ध्यान दिलाते हैं। घर और समाज में इन सबकी अच्छी अथवा बुरी प्रतिक्रियांओं को भी पाटक देख सकता है। सच्चे रूप में समाजवैज्ञानिक उपन्यास होने के नाते, इन कृतियों के माध्यम से एक सतर्क पाटक को उस समय के जीवन के कई आकर्षक चित्र प्राप्त होते हैं। उदाहरण के रूप में कुछ का वर्णन यहाँ किया जा सकता है।

तरवाडों के पास परिवार के सदस्यों, रसोइयों और बैठक आदि विभिन्न प्रयोगों के लिए चार खण्डों वाले दुमंजिले या तिमंजिले निवास स्थान होते थे। 'अतिथि-गृह प्रवेश द्वार के ऊपर होता था'--समृद्ध तरवाडों के यहाँ ब्राह्मणों को मुफ्त खाना खिलाने के लिए भोजनालय एवं विश्राम-गृह भी होते थे। परिवार के लिए मन्दिर होते थे। इन्दुलेखा प्रतिदिन मन्दिर जाया करती थी। पंचु मेनन ने उस देवी की कसम खाई थी जिसकी वह पूजा करता था। कोप्पुण्णि अच्चन भी प्रतिदिन मन्दिर में पूजा किया करता था। जिस प्रकार शंकर शास्त्री पूवल्ली में रामायण पढ़ा करता था उसी तरह विद्वान लोग **तरवाड** घरानों में प्रतिदिन

धार्मिक व्याख्यान दिया करते थे। घरेलू वाचनालयों का होना कोई असाधारण बात नहीं थी जिनमें किताबें और पत्तों पर लिखी पाण्डुलिपियाँ रहती थीं। अन्धेरे में प्रयोग के लिए वनस्पति तेल से जलने वाले विशेष प्रकार के लैम्प होते थे। यात्रा के लिए सूरी नम्बूदरीपाद जैसे महत्वपूर्ण लोग पालकी का प्रयोग करते थे तथा उससे नीचे के लोग डोली का। 'पूवल्ली' तरवाड में पाँच या छः पालकियाँ थीं।

तरवाड में इन्दुलेखा से विवाह के लिए पालकी में बैठकर उसे देखने आए। सूरी नम्बूदरीपाद के आगमन जैसी रोचक घटना का विवरण चन्दु मेनन ने इस प्रकार किया है :[1]

"इसके पश्चात वातावरण में जो उत्तेजना फैली वह इस वर्णन के प्रयत्न को भी विफल होने से रोक नहीं पा रही। आठ आदमी पालकी उठाए हुए थे तथा छः डोली को। जबकि बारी-बारी से उन्हें छुट्टी दिलाने वाले बाकी लोग उनके साथ-साथ ही दौड़ रहे थे। उन सबको हुक्म था कि वे कोरस में गुनगुनाते हुए चलें। चौदह लोगों में सभी को एक ही स्वर में बार-बार प्रतिध्वनि करते रहना होता था जबकि आगे-आगे चल रहे तीन या चार लोग "हे-हो, हे-हो" की रट लगाए थे। यह विशेष गुणगान नम्बूदरीपाद की एक विशिष्टता समझी जाती थी। इस प्रकार शोर-ओ-गुल के साथ पालकी ने घर के अहाते में प्रवेश किया। चेरूशेरी नम्बूदरी प्रवेश द्वार पर ही कूदकर अपनी बिचाली से बाहर निकला किन्तु पालकी उठाने वाले चिल्ला-चिल्लाकर इस बात पर जोर देते रहे कि वे उसे अन्दर अहाते में ले जाएंगे। इन्दुलेखा और गोविन्दन कुट्टी मेनन को छोड़कर घर के सभी प्राणी, जवान व बूढ़े, पंचु मेनन की परिवार की कोठी और निजी निवास स्थान से लोगों के झुण्ड के झुण्ड ऐसे बाहर निकल आए थे जैसे किसी लड़ाई में जा रहे हों और उन्होंने जहाँ तहाँ एक अच्छा-सा मोर्चा अपने लिए तैयार कर लिया था और नवागन्तुकों को लगातार घूरे जा रहे थे। खिड़कियों और छज्जों पर औरतों के झुण्ड प्रकट हो गए और उनके 'मालिकों' और 'राजाओं' ने अपने दोपहर के भोजन को ताक पर रखकर पंचु मेनन को अपना अगुवा बनाकर आदरणीय मेहमान से मुलाकात के लिए अपने आपको आंगन की भीड़ में शामिल कर लिया था। केशवन नम्बूदरी मेहमान का स्वागत करने और

१. पृष्ठ १३३

उसे पालकी से बाहर निकालने में उसकी मदद करने हेतु अहाते तक चले आए थे। अहाता भी जागीर के संचालकों और नौकरों के जमघट से भर गया था। रसोइए और नौकर आदि रसोई-घरों की खिड़कियों और दरवाजों में बने छोटे-छोटे आलों में से झांक रहे थे और नौकरानियां केले के पेड़ों और बगीचे की झाड़ियों के पीछे छिपीं इस शानदार समारोह की एक झलक लेने की जी तोड़ कोशिश में लगी थीं।

यात्रा से लौटे हुए कुछ ब्राह्मण भोजन कर लेने के बाद विश्राम कक्ष में आराम कर रहे थे वे इस शोर-गुल और चीख-पुकार को सुनकर हड़बड़ाकर उठ बैठे। वे अपनी चोटियों को बांधते हुए तेजी से दौड़कर बाहर निकल आए और उस घने जनसमूह में जहाँ भी जगह मिली वहीं जम गए। तालाब के किनारों और सीढ़ियों तक को भी नहीं छोड़ा। वे चिल्ला रहे थे—'अरे भई ! क्या है यह ? भई यह कौन है ? क्या कोई भूचाल आने वाला है ?' जबकि सच तो यह है कि अगर वाकई भूचाल भी आ गया होता तो चेम्माकियोट और पूवल्ली के लोगों में इस पागलपन की हद तक की खलबली न मची होती।

बहुत ही जल्दी में सम्पन्न एक विवाह के समारोह का भी वर्णन किया गया है।[1] पंचु मेनन के निमन्त्रण पर 'नम्बूदरीपाद चेरूशेरी और केशवन नम्बूदरी अपने परिजनों को लेकर पूवल्ली के लिए रवाना हो गए। रीति के अनुसार नम्बूदरीपाद ने घर के प्रवेश द्वार पर खड़ें होकर अपने पैर धोए, समारोह के लिए सजाए गए कमरे में पहुंचकर चारपाई पर लेट गया जिसपर रेशम की कीमती चादर बिछी थी। कमरे का पूर्वी दरवाजा बन्द था, और फिर घर की सभी औरतों की एक भीड़ ने पश्चिमी द्वार को ठसाठस भर दिया। वे कल्याणी कुट्टी को भी साथ घसीट लाई थी और उसे ऐसे घेरे खड़ी थीं जैसे वह कोई जीवित सूअर अथवा कोई अन्य जानवर हो। और उसे लाकर उन्होंने कमरे में फेंक दिया। फिर वे तेजी से पश्चिमी द्वार की ओर से निकल भागीं। विवाह सम्पन्न हो चुका था।'' 'मरुमक्कत्तायम' परिवार में विवाह की रस्म इसी तरह निभाई जाती हो ऐसी बात नहीं थी। इन्दुलेखा के विवाह के विवरण में भी रस्मों आदि का कोई उल्लेख नहीं मिलता। उन्होंने बस इतना ही लिखा है कि ''माधवन की वापसी के बाद, सातवें दिन इन्दुलेखा ने अपना हाथ माधवन को विवाह में दे

१. पृष्ठ २४६

दिया।" यदि इन उदाहरणों से नायर परिवारों में विवाह आदि समारोहों की अनियमितता (यदि अभद्रता नहीं) की ही झलक मिलती है तो पाठक को चाहिए कि वह चन्दु मेनन द्वारा ही दिए गए नायर परिवार के विवाह समारोहों अथवा सम्बन्धम के विस्तृत विवरणों को पढ़े। इन्हें 'पुडमुरी' भी कहा जाता है। 'मलाबार विवाह आयोग' की रिपोर्ट के साथ संलग्न अपनी असहमति की 'विसम्मत टिप्पणी' में मेनन ने नायर विवाहों का विश्लेषण किया है जिसमें कहा गया है कि 'मरुमक्कत्तायम विवाह पद्धति अनियमितितापूर्ण नहीं है अपितु इसमें पुराने स्थानीय रीति रिवाजों की बहुत-सी रस्मों का समन्वय होता है।

हमें इन उपन्यासों से रोजमर्रा के जीवन के बारे में भी विस्तृत जानकारी मिलती है—मर्दों और औरतों के बारे में, उनके स्नानादि, पहनावे, गहनों इत्यादि के बारे में। पंचु मेनन अपने गले में एक सोने की जंजीर पहनता था और कोप्पुण्णि अच्चन रूद्राक्ष हार। दोनों ही एक सोने का कमरबन्द भी पहनते थे। माधवन लम्बी चोटी रखता था और कानों में सोने के बने हीरों से जड़ित झुमके पहनता था। अठारह वर्ष की इन्दुलेखा कानों में सोने की बालियां पहनती थी और तन्जौर के कंकण तथा गले में हार पहनती थी जिनमें से एक में हीरे, पन्ने और लाल जड़े थे एवं उंगलियों में अंगूठियां भी पहनती थी। ग्यारह वर्षीय शारदा कानों के लिए सोने के झुमके, एक मोती जड़ा हार जिसकी तीन लड़ें थीं, एक जोड़ी अंगूठी और कमर पर एक सोने की पेटी बांधती थी। औरतों के पिछलग्गू सूरी नम्बूदरीपाद के संग्रह में भी ऐसी कई आकर्षक वस्तुएं देखने को मिलती हैं।[1] "एक दर्जन या अधिक कीमती पोशाकें जिनपर सोने और चांदी की किनारियां लगी थीं, रेशम की किनारी वाले कपड़े, विभिन्न प्रकार की कई अंगूठियां, असली चांदी का बना एक अनमोल फूलदान जिसके अन्दर सोने की तह लगी थी, पान रखने के लिए एक छोटी-सी सोने की डिबिया, चांदी का बना एक कलश और इसी धातु के बने कुछ दीये, चांदी का एक सुपारीदान, गले में हार की तरह पहनी जाने वाली चेन सहित एक सोने की घड़ी, सोने और सिल्क की कढ़ाई वाले मखमल के कुछ कपड़े, एक चांदी की डिबिया जिसमें पवित्र जाति-चिह्न के रूप में चन्दन रखा था, सोने के फ्रेम वाला एक शीशा, सोने की एक शीशी जिसमें छिड़काव के लिए गुलाबजल भरा रहता, तथा दूसरे गुलाबों के इत्र की कई

१. पृष्ठ १२२

शीशियां और अन्य कई ऐसी वस्तुएं अस्त-व्यस्त-सी मेज पर बिखरी पड़ी थीं।"

वेशक उसके दुनियावी मोह अनगिनत थे किन्तु वह भी और लोगों की तरह अन्धविश्वासी था। उसे विश्वास था कि उसके मुकदमा में हारने की वजह यही है कि उसने शिकायत की अर्जी शनिवार के दिन दी थी। उसके अन्य धारणाएं थीं जैसे कि लैम्प की रौशनी में हजामत नहीं बनानी चाहिए, हजामत करने के बाद स्नान करने के बाद ही काम शुरू करना चाहिए। पंचु मेनन का विश्वास था कि यदि भगवान को और ब्राह्मणों को दान-दक्षिणा दी जाए तो वह तीनों ऋणों से मुक्त हो जाएगा। वे लोग जो अपने आपको ज्योतिषी कहलाते थे, उनके अमीर एवं गरीब कई ग्राहक थे।

केवल थोड़े से उदाहरण ही ऊपर दिए गए हैं हालांकि प्रत्येक पन्ने पर अन्य कई विषयों के बारे में कई टिप्पणियां दी गई हैं, जैसे विधवा के दूसरे विवाह, बड़ों और छोटों के बीच अथवा अलग-अलग जातियों के बीच के शिष्टाचार, कथकली, पान के प्रयोग, मन्दिर आदि पर और इस प्रकार इस सूची को आगे बढ़ाया जा सकता है। थोड़े में कहें तो दोनों उपन्यास ऐसी एल्बम हैं जिसमें उन्नीसवीं शताब्दी के मलाबार के सामाजिक जीवन के अनेकों चित्र लगे हुए हैं।

डब्ल्यू० ड्यूमर्ग, जिन्होंने इन्दुलेखा का अनुवाद किया, को लिखे एक पत्र में चन्दु मेनन ने उन्हें इन उपन्यासों की रचना के कारणों का उल्लेख किया है। उन सब उद्देश्यों के अलावा इन पुस्तकों द्वारा अन्य महत्वपूर्ण विषयों और उनसे सम्बन्धित उन सभी समस्याओं को नंगा करने में भी सफलता मिली है जो पुराने अमीर नायर **तरवाड़ों** की असीम शक्ति को दबाने में लगी थी। उदाहरण के लिए कारणवनों की निरंकुशता, उनकी रूढ़िवादिता, पक्षपात तथा मौजमस्ती की तलाश में घूमने वाले लापरवाह नम्बूदरियों के साथ के वैवाहिक सम्बन्धों एवं अक्सर होने वाले मुकदमों जिनसे बच पाना असम्भव था, आदि का उद्देश्यपूर्ण प्रयोग किया गया। विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए चन्दु मेनन ने उपन्यासों में विभिन्न तथा उपयुक्त पात्रों का समावेश किया। जैसे चीखने-चिल्लाने वाले तानाशाह कारणवनों—पंचु मेनन और कोप्पुण्णि अच्चन; खलनायक वैत्ति पट्टर; दस्तंदाज कुन्दन मेनन, अनपढ़ लोग तथा अंग्रेजी के ज्ञाता जैसे माधवन, कृष्ण मेनन, इन्दुलेखा और कल्याणि कुट्टी।

इन्दुलेखा में दिखाया गया है कि किस प्रकार पंचु मेनन के मनमानेपन से माधवन और इन्दुलेखा भड़क उठते हैं। नम्बूदरियों के साथ अजीबोगरीब सम्बन्धों

से किस प्रकार परेशानियां और अपमानजनक स्थितियां उत्पन्न हो जाती हैं। विवाह और प्रेम **इन्दुलेखा** की प्रमुख विषयवस्तु है। विवादास्पद अठारहवें अध्याय के अतिरिक्त उपन्यास के सबसे बड़े अध्याय वही हैं जिनमें माधवन इन्दुलेखा से मिलता है और अपने वैवाहिक अभियान के दौरान नम्बूदरीपाद इन्दुलेखा और अन्य स्त्रियों से मिलता है। कहानी में कई स्त्री पात्र हैं। शायद आधे तो स्त्री पात्र ही हैं। इन्दुलेखा के अतिरिक्त पार्वती अम्मा, लक्ष्मी कुट्टी अम्मा, कुम्मिणि अम्मा, कल्याणि कुट्टी और कुछ अन्य नौकरानियां आदि भी हैं। यहाँ प्रेम रोगग्रस्त लोगों की तकलीफें भी दर्शायी हैं जिनका कि एक रोमांचकारी उपन्यास में होना स्वाभाविक ही है।

शारदा की स्थितियां कुछ अलग ही हैं। उपन्यास का अधिकांश भाग कानूनी दिमागों के षड्यन्त्रों से भरा पड़ा है। **शारदा** के पात्र अच्छे और बुरे दोनों ही, **इन्दुलेखा** के पात्रों से कहीं अधिक परिपक्वता एवं गम्भीरता लिए हैं। कोप्पुण्णि अच्चन में पंचु मेनन की अपेक्षा कहीं ज्यादा जिद्दी और निन्दात्मक प्रवृत्ति है। कुछ भी हो पंचु मेनन के मन में इन्दुलेखा के प्रति 'वास्तव में सच्चा और उदार दिल है'। केवल खुशामदी लोगों ने ही **शारदा** के कोप्पुण्णि मेनन के बारे में इतना कुछ कहा है। उसमें क्रूरता, धूर्तता और बदला लेने की भावना भरी पड़ी है। **इन्दुलेखा** के शीनू पट्टर का **शारदा** के वैत्ति पट्टर से कोई मुकाबला नहीं। शीनू तो बुद्धू है। उसके पास कम से कम पूवल्ली **तरवाड** की एक स्त्री का पति होने का सम्मान तो है जबकि वैत्ति पट्टर पूंचोलक्करा **तरवाड** की एक स्त्री को उड़ाने के चक्कर में था। हम शीनू पट्टर को इस माने में तो इन्सान की संज्ञा दे ही सकते हैं कि वह देखने में एक इन्सान ही लगता था। किन्तु वैत्ति पट्टर? इसके बाहर की ओर निकले दांत और नाग की-सी दृष्टि किसी राक्षस के समान थे। वह दुष्टता की जीती जागती मूर्ति था।

चन्दु मेनन **इन्दुलेखा** के अंग्रेजी अनुवाद में माधवन के आविर्भाव और उपलब्धियों की समापन प्रक्रिया दो पृष्ठों में उसकी प्रशंसा से करते हैं। उन्हें **शारदा** के कृष्ण मेनन के व्यक्तित्व, चरित्र-चित्रण और उच्च उपलब्धियों की चर्चा के लिए साढ़े चार पृष्ठों का सहारा लेना पड़ा। माधवन को प्रेम में डूबे एक नौजवान के रूप में चित्रित किया गया है। कृष्ण मेनन को प्रेम 'रोग' नहीं है। माधवन हमारी दया भावना को झकझोरता है; कृष्ण मेनन हमारी प्रशंसा की भावना को उकसाता है।

जहाँ तक नम्बूदरी चरित्रों का प्रश्न है, **इन्दुलेखा** का चेरूशेरी बुद्धिमान और सौम्य है। सूरी नम्बूदरीपाद में थोड़ी सभ्यता है। क्या उसे कथकली पसन्द नहीं ? वह एक जोकर और स्त्रियों के पिछलग्गू की तरह पेश आता है, फिर भी वह कहानी के दौरान कम से कम कपड़े तो पूरे पहने रहता है भले ही वे सोने की चमक से भरे हों किन्तु **शारदा** के नम्बूदरियों की टोली को देखें जरा। कुछ नंगे हैं, कुछ मैले, एक लड़की से सम्बन्धित पत्र के बारे में बकवास करते हुए, कुछ यहाँ से वहाँ उछल-कूद रहे हैं तो कुछ वहाँ से यहाँ। वे निश्चय ही जंगली सभ्यता के प्रतीक हैं।

इन्दुलेखा अति संवेदनशील है किन्तु उसकी सुन्दरता चरमबिन्दु छू गई हैं। शारदा एक फरिश्ते की तरह है। लेकिन वह अभी बच्ची ही है किन्तु उसमें कौमार्यावस्था की ओर मुखरित होने के उपरान्त और अधिक सुन्दर होने की अद्‌भुत सम्भावनाएं हैं। तब वह शायद फरिश्ता न होकर ईश्वरीय हो जाएगी। अब तक की कहानी में वह पात्र अकेली ही स्त्री पात्र है। यह दुःख की बात है। दो या तीन अन्य औरतों का जिक्र मात्र यह बताने के लिए किया गया है कि वे मर चुकी हैं। उपन्यास के प्रथम दो पृष्ठों में शारदा की मां कल्याणि अम्मा की वाणी अवश्य सुनने को मिलती है। किन्तु वह आवाज मृत्यु शय्या पर पड़ी एक औरत की बहुत ही क्षीण आवाज है और कुछ ही वाक्य बोलने के बाद वह हमेशा के लिए खामोश हो जाती है। **शारदा** में पुरुषोचित तत्व प्रमुख हैं।

शारदा के पुरुष पात्र दावेदारी, मुकदमों और कचहरियों तथा उससे सम्बन्धित मामलों में दिलचस्पी लेते हैं। वातावरण अधिकतर संगीन ही रहता है किन्तु कभी-कभी और भी अधिक भयंकर हो जाता है जैसे उस वक्त जब वैत्ति पट्टर गुण्डे करूप्पन के साथ मिलकर साजिश करता है और उससे वह जहर तैयार कराता है जो बाद में शंकरन को दिया जाने वाला है। जबकि साथी उपन्यास में एकदम अलग तरीके से व्यंग्यात्मक शैली में इन्दुलेखा के बदले कल्याणि कुट्टी को 'सूली' पर चढ़ा दिया जाता है। **शारदा** में कानूनी अधिकारों, कानून के दांव पेचों, कानूनी किताबों में निहित सन्दर्भों और लिखा-पढ़ी तथा मुकदमेबाजी की चालों आदि के बारे में की जाने वाली बातचीत को ही अधिक स्थान मिला है। **इन्दुलेखा** में कानूनी क्रिया का मात्र प्रासंगिक उल्लेख है जब सूरी नम्बूदरीपाद और उसका नौकर एक दस्तावेज के पंचीकरण के बारे में बात करते हैं। वरना पूरा वातावरण काफी रमणीय है। जहां **इन्दुलेखा** व्याकुलता

और अनुराग की उत्तेजना उत्पीड़ित करती है वहां शारदा में आशंका और प्रतिरोध की उत्तेजना उत्पीड़ित करती है।

यहां चन्दु मेनन की स्थानों एवं पात्रों (चाहे वे बड़े हों या छोटे, प्रतापी हों या विनीत) के विवरण की अद्‌भूत कला का ध्यान करना शायद आवश्यक है। अपने चित्रों से वे प्रशंसा या हंसी उजागर करने में सक्षम हैं। पात्र चाहे प्रतापी हो अथवा हास्यास्पद दोनों को ही वे सहजता से चित्रित करने में निपुण हैं। उदाहरण के लिए एक तरफ सूरी नम्बूदरीपाद का वर्णन है तो दूसरी ओर कृष्ण मेनन का; सेन परिवार के निवास स्थान का चित्र है और 'वकीलों के क्लब' का।

इन्दुलेखा की तुलना में **शारदा** अधिक परिपक्व उपन्यास है। अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के चरित्रों की रचना से अधिक बड़े पैमाने पर की गई है। **शारदा** के दुष्ट पात्र **इन्दुलेखा** के पात्रों की तुलना में और अधिक दुष्टता लिए हैं तथा अच्छे पात्र और अधिक अच्छे हो गए हैं। **इन्दुलेखा** के स्थानों की तुलना में **शारदा** के स्थान अधिक भव्य हैं। उदाहरण के लिए **इन्दुलेखा** के पूवल्ली **तरवाड** की चावल के खेतों से धान की आय अठाईस हजार 'परा' का है तथा बगीचों से दस हजार रुपए की। दूसरी ओर पूंचोलक्करा **तरवाड** की चावल के खेतों से धान की आय एक लाख 'परा' की है तथा बगीचों से पचास हजार रुपए की। पूंचोलक्करा इडम् से सम्बद्ध मन्दिर, सत्रम (धर्मशालाएँ) तथा अतिथि-गृह जगह आदि कहीं अधिक बढ़कर है। तालाब तो इतना बड़ा था कि एक किनारे से खड़े होकर दूसरे किनारे पर खड़े व्यक्ति को पहचानना असम्भव था।

पूंचोलक्करा **तरवाड** में जहां तक ब्रह्मणों के भोजन का सवाल है, वैत्ति पट्टर रामन मेनन से कहता है, "जनाब चार भोजनालयों में ब्राह्मणों को मुफ्त भोजन कराया जाता है।" पूवल्ली **तरवाड** में ऐसे केवल दो ही भोजनालय थे। तरवाड का निवास स्थान भी दूर देहाती इलाके में था। पूंचोलक्करा इडम् का निवास स्थान अधिक बड़ा और भव्य होने के साथ अधिक विकसित जगह पर स्थित था।

इन्दुलेखा की तुलना में चन्दु मेनन ने **शारदा** के लिए कहीं अधिक और विस्तृत रूप से सोचा। उन्होंने **शारदा** के लिए अधिक भव्य और बड़े स्थानों एवं अधिक प्रभावशाली पात्रों की रचना की। **इन्दुलेखा** एक सम्पूर्ण और बहुत ही अच्छी कहानी है। **शारदा** अपूर्ण और एक अधिक बेहत्तर कहानी होने का दावा करती है।

समापन

सार कथन और इस अध्याय को पहले अध्याय से जोड़ने पर हमारी यात्रा सम्पूर्ण होती है। हमने यह कहते हुए शुरुआत की थी कि चन्दु मेनन ने परम्पराओं से हटकर लिखा और मलयालम साहित्य को एक नई दिशा प्रदान की। उस समय की प्रचलित पद्धतियों और धारणाओं से अलग हटकर उन्होंने लेखनकला को एक नया दृष्टिकोण देते हुए बताया कि किस प्रकार घरेलू मलयालम भाषा का प्रयोग करते हुए मलाबार के आम लोगों के जीवन पर आधारित एक अत्यधिक लोकप्रिय उपन्यास की रचना की जा सकती है। उनकी विषय-वस्तु, पात्र और भाषा उससे पहले के एवं समसामयिक उपन्यासों से बिल्कुल भिन्न थे। **इन्दुलेखा** के अनुवादक अंग्रेज नागरिक डयूमर्ग ने अपनी भूमिका में (१८९०) उपन्यासकार की उपलब्धियों का मूल्यांकन करते हुए लिखा है, "चन्दु मेनन ने घिसे-पिटे, साहित्यिक चोरी पर आधारित मार्ग को तिलांजलि दे दी; उनके पन्नों में आधुनिक मलाबार का चित्रांकण किया गया है तथा **इन्दुलेखा** की भाषा आज की जीती-जागती मलयालम भाषा है···मैं यह कहना चाहूंगा कि हड्डियों की घाटियों (जो बहुत सूख भी चुकी हैं) में अवतरित होने के बाद अब यदि उनका पुनरुत्थान होता हैं, तो इसका श्रेय लेखक को ही जाना चाहिए, जो जन्म से ही अभिरुचि अथवा आवश्यकतावश प्राच्य साहित्य को नवजीवन प्रदान करने की अभिलाषा रखता है।"

उन दिनों मलयालम साहित्य का प्रमुख अंश कविता ही थी। मलयालम साहित्य जगत में सम्मान हासिल करने का एक ही रास्ता था कि कविता लिखी जाए; कविता का ज्ञानी होने का अर्थ किसी भी व्यक्ति के रुचिपूर्ण एवं सुसंस्कृत होने की उत्कृष्टता का परिचायक था। इसका अर्थ यह नहीं कि गद्य लेखन होता ही नहीं था। गद्य लेखन होता तो था किन्तु उसे अत्यधिक गौरवपूर्ण साहित्यक के रूप में नहीं स्वीकारा जाता था। उस समय की साहित्यिक गतिविधि का एक अन्य महत्वपूर्ण अंश था कविता एवं गद्य दोनों में ही मलयालम लेखकों द्वारा संस्कृत भाषा का उदार मिश्रण। चन्दु मेनन ने इन स्तरों और परम्पराओं से

अपने आपको अलग किया। उन्होंने साधारण मलयालम भाषा में गद्य रचना करते हुए केवल उन्हीं संस्कृत शब्दों का प्रयोग किया जो सुसंस्कृत घरों की आम बोलचाल की भाषा में आते थे। इसके बावजूद उन्होंने मलयालम लेखक के रूप में वह लोकप्रियता और प्रतिष्ठा अर्जित की जो अन्य कई कवि नहीं कर पाए थे।

हम जानते हैं कि जब वह **इन्दुलेखा** लिख रहे थे तो उनके कुछ मित्रों ने उन्हें चेतावनी दी थी कि लोग केवल विज्ञान सम्बन्धी पुस्तकें ही पढ़ते हैं जबकि कुछ अन्य मित्रों का कहना था कि भूतों की कहानियाँ ही लोकप्रिय हो सकती हैं। किन्तु वे इन चर्चाओं से भयभीत अथवा निरुत्साहित नहीं हुए। उन्होंने इन समीक्षाओं को नजरअन्दाज करते हुए समसामयिक मलाबार के घरेलू एवं सामाजिक जीवन पर एक कहानी लिखी। उपहास का पात्र बनने अथवा अस्वीकार किए जाने की बजाय उनकी पुस्तक ने अपने समय में एक सनसनीखेज सफलता अर्जित की और जो इतने वर्षों से अत्यधिक लोकप्रिय पुस्तकों की श्रेणी में आँकी जाती रही है।

अतः चन्दु मेनन ने वह सम्मान पाया जिसे पाने की अन्य उपन्यासकारों ने हिम्मत तक नहीं की। किसी ने भी नायर **तरवाडों** के जीवन का चित्रण करते हुए एवं उनकी ही भाषा का प्रयोग करते हुए कोई उपन्यास लिखने का प्रयास नहीं किया। संक्षेप में कहें तो किसी ने भी असली रूप में और सच्चे अर्थों में मलयालम उपन्यास नहीं लिखा था। तब चन्दु मेनन की पुस्तकों का आगमन हुआ। उनकी प्रमुख घटनाओं का स्थान था मलाबार। लगभग सभी पात्र भी मलाबार के हैं और भाषा मलयाली घरों से निकली भाषा है। उन्हें अपनी पुस्तक की सफलता को लेकर कुछ आशंकाएँ थीं। उन्होंने प्रथम संस्करण की भूमिका में इन आशंकाओं का उल्लेख किया। लेकिन उनमें उत्साह की भी कमी नहीं थी। अपनी प्रतिभा से उन्होंने सिद्ध कर दिया कि भूत-प्रेतों और राजाओं के बिना भी अत्यधिक लोकप्रिय उपन्यासों की रचना की जा सकती है; उन्होंने यह भी सिद्ध किया कि जीवन की विभिन्न प्रक्रियाओं में लगे साधारण इन्सानों को लेकर—जरूरी नहीं कि वे ईमानदार और मैत्रीपूर्ण हों—एक अच्छी कहानी लिखी जा सकती है; साथ ही यह भी कि साधारण वास्तविकता को असाधारण कथा-साहित्य के रूप में बदला जा सकता है। 'प्रभावशाली वृत्तान्त' में उनका दृढ़ विश्वास था। अपनी भूमिका में उन्होंने लिखा, "मेरे विचार में रचना की शैली और सुन्दरता का विशेष महत्व होना चाहिए। इसी विचार को दोहराते हुए उन्होंने कहा, "यदि

वास्तविक जीवन की घटनाओं पर आधारित एवं आकर्षक तथा सुन्दर ढंग से रची गई कहानियों का प्रवर्तन किया जा सके तो असम्भव व अलौकिक तत्वों से पूर्ण पुराने ढाँचे में गढ़ी गई पुस्तकों में काफी हद तक बदलाव आ सकता है और नई शैली को स्थान मिलेगा।" बेशक उन्होंने मलयाली पाठकों में इस प्रकार के साहित्य के प्रति रुचि पैदा करने हेतु इन्दुलेखा की रचना की। पुस्तक की सफलता से चन्दु मेनन ने सिद्ध कर दिया कि उनके अनुमान सही थे और यह कि पाठक इस प्रकार के कथा साहित्य का सही रूप में मूल्याँकन कर उसकी प्रशंसा करेंगे।

उनके उपन्यासों में नम्बूदरियों के अवगुणों का भी भण्डा फोड़ा गया है और उनके नायर समाज पर वैवाहिक उद्यमों के परिणामों से अवगत कराया गया है। अड़ियलपन, तानाशाही और मुकदमेबाजी से ग्रस्त कारनावनों के कारण मरुमक्कत्तायम तरवाडों की संरचना और स्थायित्व को खतरा उत्पन्न हो रहा था। चन्दु मेनन ने अपने उपन्यासों के माध्यम से इस तथ्य को उजागर किया। उनके उपन्यासों के उद्देश्यों की बात करते समय अन्य उद्देश्यपूर्ण उपन्यासकारों का ध्यान आता है जैसे ठाकरे, डिकेन्स, टाल्स्टाय। लेकिन चन्दु मेनन की ऐसे उपन्यासकारों से तुलना करते समय हमें यह न भूलना चाहिए कि वे औरों की तरह पेशेवर लेखक नहीं थे। वे न्यायपालिका विभाग के अधिकारी थे और उनका काम मुकदमे सुनना और फैसले सुनाना भर ही था एवं साहित्यिक रचनाओं से उनका सम्बन्ध न के बराबर था। उनका वक्त उनका अपना नहीं था और उपन्यास रचना हेतु उन्हें अपने राजकीय कार्यों से निपटने के बाद ही समय की व्यवस्था करनी पड़ती थी। लेकिन दूसरी ओर अन्य लोगों का पेशा ही लेखन था और वे अपने सारे समय एवं शक्ति का उपयोग केवल कथाओं को रूप देने एवं लिखने में कर सकने में समर्थ थे। उन्होंने ऐसा किया भी। कोई शक नहीं कि वे विश्वविख्यात लेखक है। फिर भी चन्दु मेनन को उनका हक मिलना ही चाहिए।

उपन्यास के गुणों को जानने का सरल और स्पष्ट तरीका है उसकी लोकप्रियता को जानना। उपन्यास चाहे इतिहास से सम्बन्ध रखता हो चाहे समाज से, भव्यता से या दुःख-दर्द से चाहे वह हास्यपूर्ण हो अथवा गम्भीर, उसमें कोई उद्देश्य निहित है अथवा नहीं, यदि वह पाठकों की बजाए सिर्फ शेल्फों पर धूल-मिट्टी आकर्षित करे तो उसे अच्छा उपन्यास नहीं कहा जा सकता, उसे तो जैसा कि हम पहले कह चुके हैं, 'मात्र उपन्यास' ही कहा जाना चाहिए। हम जानते ही हैं कि १९५६ तक इन्दुलेखा के कई संस्करण प्रकाशित हुए तथा १९५८ तक

शारदा (असम्पूर्ण होने के बावजूद) के बारह संस्करण प्रकाशित हुए। इन आँकड़ों से इन उपन्यासों के गुणों का और चन्दु मेनन की उपन्यासकार के रूप में उनकी क्षमताओं की स्पष्ट झलक मिलती है। इस क्षमता की महत्ता और भी बढ़ जाती है जब हम यह देखते हैं कि इन सफलताओं को पाने के लिए कथानक की जटिलताओं और शाही भव्यताओं का सहारा नहीं लिया गया। न तो कहीं राजाओं के चीखने-चिल्लाने की आवाजें हैं और न ही मार्च करती हुई सेनाओं की धब-धब; न कोई खून-खराबा है और न हथियारों की टकराहट। **इन्दुलेखा** में शक्ति की ललकार या जरा सी हाथापाई तक नहीं। यहाँ तक कि तेज गतिविधियों की उत्तेजना भी नहीं। केवल दो पात्रों, शीनू पट्टर और लड़का गोपालन को पंचु मेनन की 'घूमने वाली' छड़ी से बचने के लिए थोड़ी दौड़-धूप करनी पड़ती है।

उपन्यास की सफलता का एक मुख्य कारण है साधारण जन का असाधारण रूप से कलात्मक चित्रीकरण। पात्रों के ऐसे चित्रण और उनके पारस्परिक प्रभावों के सहज विवरण से **इन्दुलेखा** गौरव ग्रन्थों की श्रेणी में आ खड़ा होता है। **इन्दुलेखा** में कुछ ऐसे दृश्य हैं जो एक लम्बे समय तक याद रखे जाएँगे, जैसे वे दृश्य जिनमें पंचु मेनन, सूरी नम्बूदरीपाद, माधवन और इन्दुलेखा आते हैं। लगभग इसी प्रकार **शारदा** में याद रखने लायक कुछ दृश्य हैं जिनमें वैत्ति पट्टर और चात्तु पणिक्कर आते हैं तथा 'वकील्ज क्लब' का दृश्य। इसके अतिरिक्त तो बस हम केवल अनुमान ही लगा सकते हैं कि अगर चन्दु मेनन ने कचहरी का वह दृश्य लिखा होता जिसमें शारदा के अधिकारों का मूल्यांकन होता है तो शायद वह मलयालम साहित्य में एक हीरे की तरह चमक रहा होता। यह केवल अनुमान है किन्तु चन्दु मेनन की क्षमताओं को देखते हुए तर्कसंगत लगता है। कुछ चरित्रों का रेखांकन इतना सुन्दर किया गया है कि वे कहानी के बाहर भी सजीव हो उठे हैं। उन्हें आजाद पात्रों की संज्ञा मिल गई है। बहुत कम उपन्यास अथवा नाटककारों ने पात्रों को इस तरह सजीव कर स्वतन्त्र बना पाने में सफलता अर्जित की है।

केवल चरित्र-चित्रण की अद्भुत खूबी ही नहीं बल्कि अत्यन्त आनन्दप्रद हास्य के कारण भी **इन्दुलेखा** ने, बयासी वर्ष पुराना होने के बावजूद कई पीढ़ियों के पाठकों को आकर्षित किया है और कर रहा है। **इन्दुलेखा** का प्रफुल्ल हास्य न तो समय के साथ मुरझा सकता है और न ही परम्पराएँ उसे बासी कर सकती हैं। अधिकांश समाजवैज्ञानिक उपन्यासों में हास्य तत्व काफी मात्रा में होता है।

अतः **इन्दुलेखा** में सूरी नम्बूदरीपाद के व्यक्तिगत चित्रण में, उसके पहनावे में और दूसरे लोगों के साथ प्रतिक्रियाओं आदि में एक विशेष परिहास भरा पड़ा है। जब भी वह सामने आता है, हास्य साथ चला आता है। पंचु मेनन के साथ भी ऐसा ही है। उपन्यास में अथवा मंच पर यह पात्र अपनी जुबानी मुठभेड़ों में पूर्णतया गम्भीर रहते हैं किन्तु पाठक अथवा दर्शक के लिए ठहाकों का भरपूर मसाला **शारदा** में हालाँकि **इन्दुलेखा** से अधिक गम्भीर वातावरण है किन्तु चन्दु मेनन ने जगह-जगह हास्य के तत्वों को भी उजागर किया है। कोप्पुण्णि अच्चन, वैत्ति पट्टर और कुन्दन मेनन इसके उदाहरण हैं। कुछ हास्यास्पद दृश्य हैं जैसे वैत्ति पट्टर जब जहर देने के लिए 'शिकार' की पहचानने में भूल कर बैठता है, या चात्तु पणिक्कर जब अच्चन और तिरुमुलपाड को मूर्ख बनाता है, या जहाँ वकील मिला करते हैं, या जहाँ कुन्दन मेनन कानूनी शैली को वकील राघव मेनन पर फेंकता है। बीच-बीच में तनाव का पुट देते हुए चन्दु मेनन भावनाओं के विभिन्न तारों को जैसे हास्य, दया, घृणा आदि को इस प्रकार छूते रहते हैं कि पाठक की रुचि पूरी तरह बनी रहे।

उनकी पाठकों को अपना विश्वासपात्र बना लेने की आदत अनूठी तो है ही आनन्दकर भी है। 'नायिका के प्रति झुकाव होने के कारण मुझे अपनी कहानी के तथ्यों पर कोई प्रतिबन्ध नहीं लगाना चाहिए।' माधवन द्वारा भेजे गए पत्र को पढ़कर इन्दुलेखा द्वारा उसे तीन या चार बार चूमने की बात पाठकों के कान में डालने से पहले चन्दु मेनन कहते हैं। कई मौकों पर चन्दु मेनन पाठकों को कुछ विशेष सूचना देने के लिए उन्हें अपने साथ मिला लेते हैं। पाठकों से कुछ भी न छिपाने के लिए वे बिना किसी कृत्रिमता के लालायित रहते हैं—जैसे कोई पुराना मित्र कन्धों पर हाथ रखकर फुसफुसा रहा हो कि "सुनो, मुझे एक बात मालूम है।"

मलयालम साहित्य के निर्माताओं में चन्दु मेनन का बहुत ऊंचा स्थान है। यह सच है कि उनका योगदान केवल एक सम्पूर्ण उपन्यास एवं एक अन्य उपन्यास के तीसरे अंश तक ही सीमित है। किन्तु उनमें सुन्दर कार्य कौशल एवं मौलिकता के प्रमाण हैं। कहानियों में जिस विषयवस्तु, उसे कहने का जो ढंग और माध्यम उन्होंने प्रयोग किया है वह मलयालम उपन्यास लेखन में पहले कभी नहीं हुआ। यह एक अपरिचित ढंग जरूर था किन्तु लोकप्रिय रुचि के लिए अत्यधिक उपयुक्त। आश्चर्यजनक बात तो यह है कि उन्होंने किसी किस्म की साहित्यिक

शिक्षा या कहानी लेखन में कोई अनुभव प्राप्त किए बिना, सिर्फ समय बिताने के लिए अथवा एक 'प्यार की खातिर' **इन्दुलेखा** जैसे उपन्यास की रचना की। इसके बावजूद यह अपने समय का सबसे ज्यादा बिक्री वाला उपन्यास साबित हुआ। केवल एक उत्कृष्ट प्रतिभा को ही शायद इतनी सफलता मिल सकता है। कुछ समीक्षकों का कहना है कि **इन्दुलेखा** आज भी अपने ढंग में सर्वोपरि है तथा उसके बाद कहते हैं, "काश उन्होंने **शारदा** को पूरा किया होता।" केरल वर्मा वलिय कोयिल तम्पुरान जिन्हें उन दिनों 'साहित्य चक्रवर्ती' का सम्मान प्राप्त था, ने कहा है, "यदि अपूर्ण होने पर **शारदा** ने इतनी अधिक दीप्ति हासिल की है और अगर इसे उसका पूर्ण रूप मिल जाता तो **इन्दुलेखा** इन्दुलेखा (चन्द्र किरण) के समान चमकता होता और **शारदा** पूरे चाँद के समान भरपूर दीप्ति लिए हुए।"

इससे पहले के अध्याय में हमने चन्दु मेनन की अपने समय का चित्रण करने वाले उपन्यासों से झलकती अद्‌भुत क्षमताओं का हवाला दिया है। चन्दु मेनन ने नायर **तरवाडों** का अच्छा चित्रण प्रस्तुत किया है उनके घरों का, लोगों का, उनकी रोजाना की जिन्दगी का, उनकी पोशाकों और गहनों का, उनकी समस्याओं एवं उनके अन्तःसम्बन्धों का।

चन्दु मेनन सामयिक जीवन के एक रुचिकर इतिहासकार होने के साथ-साथ मलावार के साहित्यिक एवं सामाजिक जगत में होने वाली घटनाओं के अग्रदूत भी थे। साहित्त जगत में **इन्दुलेखा** की सनसनीखेज सफलता से यह संकेत मिलता है कि शीघ्र ही मलावार के पाठकों के बीच लोकप्रियता का गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त करने हेतु अच्छे उपन्यास कविता के खिलाफ गंभीर प्रतिद्वंद्वियों के रूप में सामने आने लगेंगे। उन्होंने मलयायम उपन्यासों को एक नई प्रतिष्ठा प्रदान की।

जहां तक समाज की बात है, उपन्यास से संकेत मिलता है कि नायर तरवाडों में नम्बूदरियों और कारनावनों का प्रभुत्व अब अप्रश्नित नहीं रह जाएगा। विशेष रूप से पढ़ी-लिखी नायर औरतें (अंग्रेजी जानने वाली औरतें जैसा कि चन्दु मेनन का कहना है) अब अपने आपको दुराचारी नम्बूदरियों के शोषण और अमानवता का शिकार होने देने के लिए चुपचाप हथियार नहीं डाल देंगी। जब सूरी नम्बूदरीपाद इन्दुलेखा का पीछा करते हुए आता है तो वह पहली बार उससे बात करते हुए कहती है, "मैं उस समय नीचे नहीं थी" बजाय परम्परानुसार यह कहने के कि "आपकी गुलाम उस समय नीचे नहीं थी।" उसके शब्दों

से यह संकेत मिलता है कि उस लड़की को ऐसे नम्बूदरियों के प्रति कोई दिल-चस्पी नहीं थी। और उनकी मुलाकातों में भी चापलूसीपूर्ण सम्बन्ध का भी कोई प्रश्न नहीं उठता। चन्दु मेनन ने लिखा, 'इन्दुलेखा द्वारा उसे पहले नाम से पुकारे जाने की धृष्टता को देखकर नम्बूदरीपाद की सांस रुक सी गई थी क्योंकि आज तक किसी नायर युवती ने इस तरह असम्माननीय ढंग से बात करने की हिम्मत तक नहीं की थी। सच, और इसके बाद अभी और भी बहुत कुछ बाकी रह गया था। जब प्रेम में पागल नम्बूदरीपाद ने 'हवा में छलांग लगाई' तो इन्दुलेखा ने उससे कहा, "अब यह बकवास यहीं खत्म करो। मैं जब तक जीवित हूं, कभी तुम्हारी पत्नी नहीं बन सकती।" यह अठारह वर्षीया इन्दुलेखा द्वारा सूरी नम्बूदरीपाद को, उन सब पढ़ी-लिखी नायर युवतियों की ओर से, ऐसे सभी कामुक नम्बूदरियों को चित्त कर देने वाले प्रहार थे।

रूढ़िवादी शासक पंचु मेनन को माधवन और इन्दुलेखा से नई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। "मैं इन्दुलेखा को इस नौजवान बदमाश (माधवन) के हाथों नहीं सौंप सकता," कहानी के शुरू में ही पंचु मेनन चीखकर कहता है। यह पुरानी पीढ़ी के तानाशाह की आवाज थी। अन्त में वह प्यार से इन्दुलेखा से कहता है, "मेरी प्यारी बेटी! तुम्हें उदास होने की कोई जरूरत नहीं। माधवन के आते ही तुम्हारा उससे विवाह कर दिया जाएगा।" पुरानी व्यवस्था की जगह नई व्यवस्था ने ले ली थी। यहां हम नौजवानों की क्रान्ति के रूप और अधिक स्वतन्त्रता की सुबह की उम्मीद देख पाते हैं।

यहां शायद एक अच्छे उपन्यासकार की विशेषताओं का वर्णन करना अधिक उपयुक्त रहेगा। हम चीजों को देखने की शक्ति से शुरुआत करें तो बेहतर होगा। इस गुण अथवा क्षमता से उपन्यासकार कहानी की विषयवस्तु प्राप्त करता है। उसके पास 'देखने वाली आंखें' जैसी बात होनी चाहिए ताकि वह बड़ी और छोटी, भौतिक एवं अभौतिक वस्तुओं को सही ढंग से देख सके जैसी कि बम्बई के विस्तृत दृश्य वाले बन्दरगाह या व्यथि पत्तर की आंखों की चंचलता, या पंचु मेनन के गोपालन के व्यंग्य से प्रति विरोध करने की भावना या बड़े-बड़े लोगों के बीच त्रासदीपूर्ण दुश्मनी, प्रेमियों की कोमलता और खलनायकों की बदमाशियों को सही ढंग से पकड़ सके।

देखने की इस शक्ति के प्रति संवेदनशीलता का होना बहुत जरूरी है ताकि जब वह किसी चीज को देखे तो एक तस्वीर की तरह उसके मस्तिष्क पर वह छा

जाए। लेखक के पास देखने वाली आंख ही नहीं बल्कि 'कैमरे की आंख' होनी चाहिए। संवेदनशीलता के बिना चीजें मानसपटल पर से बहुत जल्दी गायब हो जाती हैं। लेकिन इसके रहने पर उनका भण्डार बढ़ना ही चला जाता है और लेखक जब चाहे, जरूरत पड़ने पर, अपनी कहानी के लिए सामग्री निकाल सकता है। इस संवेदनशीलता से लेखक के मन में मनोभावी जबाव उत्पन्न होते हैं जिन्हें पाठक तक पहुंचा कर वह उपन्यास को और अधिक सजीव बना सकता है। मनोभावी अनुभव प्राप्त करने के लिए लेखक को उन घटनाओं में स्वयं भाग लेना पड़ता है और उन्हें पात्रों के साथ-साथ अनुभव करना होता है। मतलब यह कि उसमें पर्याप्त मात्रा में लगाव का होना बहुत जरूरी है।

इसके बाद एक गृह शिल्पकार की भांति उसे अपने भण्डार में से आवश्यक सामग्री चुनकर उसे उनकी सही जगह पर प्रयोग करना चाहिए ताकि एक आकर्षक संरचना का निर्माण हो सके। गृह शिल्पकार की प्रतिभा प्रत्येक कमरे और सामग्री के प्रयोग से ही नहीं आंकी जा सकती, अपितु उसके लिए पूरे भवन का सुन्दर देखना नितान्त आवश्यक है। इसी प्रकार एक महान उपन्यासकार की प्रतिभा प्रत्येक दृश्य में ही निहित न रहकर उसकी कहानी के सम्पूर्ण प्रभाव से झलकती है। सामग्री के चुनाव और ऐसे प्रयोग के लिए एक अलगाव की क्षमता का होना भी नितान्त आवश्यक है।

अतः एक अच्छे उपन्यासकार के पास अपनी सामग्री के प्रति लगाव और अलगाव का होना बहुत जरूरी है। हमारे धार्मिक गौरव ग्रन्थों जैसे कि भगवद्-गीता से हमें पता चलता है कि ईश्वर रचना के अन्दर एवं बाहर भी है। उपन्यास, उसके पात्रों और कहानी की घटनाओं के सम्बन्ध में उपन्यासकार की लगभग यही स्थिति होती है।

एक अच्छे उपन्यासकार में एक अन्य गुण जो नितान्त आवश्यक है उसमें जो वह जानता और सम्प्रेषण कर सन्तोषजनक ढंग से स्थानान्तरित करने की क्षमता होनी चाहिए। 'शब्द, शब्द, शब्द' ही भरे पड़े हैं ऐसे शब्द जो चमकते है, गुदगुदाते हैं, उत्तेजित करते हैं, जो हमारे लिए चित्र और संगीत की रचना करते हैं। और हां, हर मौके के लिए एक उपयुक्त शब्द भी होता है, ऐसा

'चुनिन्दा शब्द और नपी-तुली भाषा
आम आदमी की पहुंच से परे।'

उपयुक्त शब्द जो एक जीव, एक क्रिया अथवा एक भावना का वर्णन कर

सके। 'जान दोस पैसस' जिसे जां पाल सार्त्रे ने 'हमारे समय का महानतम लेखक' की संज्ञा दी है, ने एक बार लेखकों के उद्देश्य अथवा कार्यप्रणाली के बारे में कहा था : स्पष्ट रूप से देख पाना और जो वह देखे उसे स्पष्ट रूप से व्यक्त कर पाना, यह तो आज भी लेखक का उद्देश्य है, किन्तु दुनिया भर की विवरणात्मक कुशलता के बावजूद इसे प्राप्त कर पाना कितना कठिन है।

विवेकी पाठकगण जिन्हें चन्दु मेनन के उपन्यासों के चरित्रों, दृश्यों और कहानियों के प्रतिपादन की याद है वे इस बात से सहमत होंगे कि चन्दु मेनन में एक अच्छे उपन्यासकार की योग्यताएं प्रचुर मात्रा में विद्यमान थीं, विशेषकर जो कुछ उन्होंने देखा 'उसे स्पष्ट रूप से देख पाना' और 'स्पष्ट रूप से व्यक्त कर पाना'। उसकी प्रतिष्ठा इस हद तक व्याप्त थी कि एक जाने-माने मलयालम लेखक, 'केसरी' वेंगयिल कुंजिरामन नायनार ने चन्दु मेनन से कहा, 'तुम्हारे रहते हममें से कोई भी उपन्यास लिखने का साहस नहीं करेगा।'

केवल बावन वर्ष की अवस्था में ही चन्दु मेनन की मृत्यु हो गयी। तब से लगभग तीन चौथाई शताब्दी का समय गुजर चुका है जिस दौरान कई अप्रत्याशित प्रकृति के परिवर्तन सामने आए। इन परिवर्तनों के सामने चन्दु मेनन का नाम व यश को आंच तक नहीं आई। जिसने भी इन्दुलेखा को पढ़ा है, वह शायद उन्हें केवल एक मनोरंजक लेखक के रूप में ही नहीं बल्कि एक ऐसे व्यक्तिगत मित्र के नाते भी पसन्द करते हैं जो उनके साथ अपने परिहासों और रहस्यों का साझेदार है। ऐसे पाठक के लिए इन्दुलेखा एक यादगार है और गत समय की तरह आने वाले समय में भी कई घरों को आनन्द और हास्य से भरता रहेगा। उन्हें शोषित लोगों से अत्यधिक सहानुभूति थी, विशेषकर भारत की उन औरतों से जिन्हें पढ़ाई-लिखाई से वंचित रखा जाता था। एक उत्साही सुधारक की तरह उन्होंने हमारी काहिली और इस त्रासदी के प्रति हमारी उदासीनता को झकझोरा और आग्रह किया कि हमारी इन औरतों को शिक्षा अवश्य दी जानी चाहिए जो कि समय के अनुकूल था। उन्होंने वर्तमान को जाना समझा था और भविष्य के सपने देखे--साधारण रूप में भारत की और विशेषकर मलाबार की आजाद औरतों के सुखी भविष्य के सपने।

साहित्य पर चन्दु मेनन के प्रभाव का मूल्यांकन इस प्रकार किया जा सकता है। उन्होंने मलयालम साहित्य की प्रगति के लिए एक नई एवं उपजाऊ भूमि से साक्षात्कार कराया। उन्होंने लेखकों को यह विश्वास दिया कि केवल कविता ही

नहीं उपन्यास भी साहित्य की लोकप्रिय एवं सम्मानित विधा हो सकती है। इन लेखकों ने उनसे जाना कि यदि उनके पास विवरणात्मक प्रतिभा है तो अच्छे उपन्यास लिखने के लिए भाषा और सामग्री की कमी नहीं। ऐसी अनुकूल परिस्थितियों के रहते कई लेखकों ने इस नई भूमि पर कदम रखा और वर्ष प्रति वर्ष मलयालम उपन्यासों की भरपूर फसल होती रही जबकि **इन्दुलेखा** (१८६०) से पहले वास्तविक रूप में एक भी मलयालम उपन्यास नहीं था, वहाँ १८६२ में, चन्दु मेनन के अनुसार 'उनकी संख्या प्रतिदिन बढ़ रही' थी। जैसे-जैसे वर्ष बीतते गए, मलयालम साहित्य की अन्य किसी भी विधा की अपेक्षा उपन्यासों की संख्या लगातार बढ़ती रही, प्रतिष्ठा बढ़ी और यह विधा लोकप्रियता की कतार में सबसे आगे आ खड़ी हुई।

एक कुशल लेखक, एक शौकिया जिसने सिद्ध किया कि वह कई पेशेवर लेखकों से भी बेहतर हैं, जो मलयालम उपन्यास का जन्मदाता है, एक ऐसा अन्वेषक जिसने मलयालम में उपन्यास-लेखन हेतु नई एवं रुचिकर राहों के द्वार खोले, जिसके पास उसके देशवासियों की स्वतन्त्रता एवं ज्ञानोदय की परिकल्पनाएं थीं—मेरी दृष्टि में भारतीय साहित्य के निर्माताओं के बीच उनका ऐसा ही स्थान है।

टिप्पणियां

१. 'मलाबार विवाह आयोग' की रपट के साथ संलग्न चन्दु मेनन की ज्ञापिका का अंश :

"अब मैं सम्बन्धम अनुष्ठान में पाई जाने वाली स्थानीय विभिन्नताओं का संक्षेप में उल्लेख करूंगा, और मलाबार के सम्बन्धम के कुछ विशेष प्रकारों से सम्बन्धित घटनाओं का भी। मैं उत्तरी मलाबार में मनाई जाने वाली पुडमुरी अथवा वस्त्रदानम् की रस्म का वर्णन करूंगा, तत्पश्चात यह सम्बन्धम के अन्य प्रकारों से किस तरह भिन्न है इसका उल्लेख करूंगा। मेरे विचार से सभी प्रकार के सम्बन्धम में पुडमुरी रीति उत्तरी मलाबार की सबसे भव्य व प्रचलित रीति है। बेशक, मेरे वर्णन का आधार हमारे सम्मुख उपस्थित प्रमाण हैं। प्रत्येक पुडमुरी का प्रथम चरण एक ज्योतिषि की उपस्थिति में वर व वधू की जन्मपत्रियों का परीक्षण होता है। यह परीक्षण वधू के घर में वर व वधू के रिश्तेदारों की उपस्थिति में होता है। जन्मपत्रियां देखने के पश्चात ज्योतिषी अपनी गणना का फल एक पनई ताड़पत्र पर लिखकर कि यह जोड़ी फलेगी अथवा नहीं, वर के रिश्तेदारों को देता है। अगर जन्मपत्रियां मिल जाती हैं तो तत्काल शादी की तिथि तय कर दी जाती है। यह तिथि भी पवित्र पत्तों के दो टुकड़ों पर लिखकर एक वधू के कारणवन तथा दूसरा वर के रिश्तेदारों को दे दिया जाता है। तत्पश्चात ज्योतिषी वर पक्ष वाले वधू के घर में भोज खाते हैं, ज्योतिषी को धन या कपड़े के रूप में उपहार भी मिलते हैं; ये प्राथमिक रस्म जो कि उत्तरी मलाबार की तकरीबन सभी पुडमुरियों में मनाई जाती है, और इसे 'पुडमुरी कुरिक्कल' कहते हैं, लेकिन दक्षिण मलाबार में इसका नामोनिशान तक नहीं हैं।

पुडमुरी के लिए नियत तिथि से तीन या चार दिन पहले वर अपनी जाति के कारनावनों और बुजुर्गों से विवाह हेतु जाने के लिए औपचारिक इजाजत मांगने जाता है। ऐसे अवसरों पर वर अपने बुजुर्गों को पान व नारियल भेंट स्वरूप देता है और शादी को औपचारिक अनुमति लेता है। नियत दिन, सूर्यास्त

के पश्चात वर अपने मित्रों के साथ वधू के घर की ओर प्रस्थान करता है। यह एक तरह की बारात-सी होती है और वधू के घर के दरवाजे पर वधू के रिश्तेदार उनका स्वागत करते हैं और तेक्किनी या घर के दक्षिणी कक्ष में इनको आसनों पर बिठाया जाता है। यहां वर उपस्थित ब्राह्मणों को उपहार (दानम) या धन एपी उपहार बांटता है। इसके पश्चात सब लोग एक राजसी भोज का आनन्द उठाते हैं। अब ज्योतिषी का आगमन होता है और वह मुहूर्त का समय बताता है। निश्चित विधि-विधान द्वारा ऐसा कर और अपना हिस्सा लेकर वह चला जाता है। तत्पश्चात वर को उसका एक मित्र पदिनहत्ता अथवा घर के मुख्य कक्ष में ले जाता हे। वर पक्ष वाले भी अपने साथ खूब सारे कपड़े, पान के पत्ते और नारियल लेकर आते हैं। घर के पश्चिमी कक्ष जिसे पदिनहत्ता भी कहा जाता है, में ये कपड़े रख दिए जाते हैं, ये पदिनहत्ता में ही घर की सारी धार्मिक व महत्वपूर्ण क्रियाएं सम्पन्न की जाती हैं। इस अवसर के लिए, इस कक्ष को सजा कर सोने का कमरा बना दिया जाता है। कमरे में कई जलते हुए दीपक रखे होते हैं व अष्ट मांगल्यम भी रखा होता है, जिसमें शादी या मांगल्यम की प्रतीक आठ वस्तुएं रखी होती हैं। ये आठ चीजें हैं---चावल, धान, नारियल की पतली-पतली पत्तियां, एक बाण, एक मुंह देखने का शीशा, एक धुला हुआ कपड़ा, प्रज्वलित अग्नि तथा एक छोटा लड़की का चौकोर बक्सा जिसे 'चेप्पू' कहते हैं और जो एक खास तरीके का बना होता है। ऊपर बताए गए कमरे में जब वर प्रवेश करता है, तब ये सब वस्तुएं जमीन पर रखी होती हैं। वर अपने मित्र के साथ कक्ष के पूर्वी द्वार से प्रवेश करता है। वधू, अच्छे कपड़े और खूब सारे जेवर पहने कमरे के पश्चिमी द्वार से अपनी चाची या घर की अन्य किसी बुजुर्ग स्त्री के साथ आती है। वधू पूर्व की ओर मुंह करके खड़ी हो जाती है, और उसके सम्मुख मांगल्यम व जलते दीपक होते हैं। तत्पश्चात वर का मित्र उसे कुछ नए कपड़े देता है, जिन्हें वह वधू के हाथों में दे देता है। यह हो जाने के बाद, वधू के साथ आई स्त्री दीपकों तथा वर-वधू पर चावल छिड़कती है, और तुरन्त चली जाती हैं। वर को अभी एक काम और करना है। तेक्किनी अथवा दक्षिणी कक्ष में वह अपने रिश्तेदारों और मित्रों को मिठाइयां, पान और नारियल उपहार के तौर पर देता है। अन्य उपस्थित लोगों को भी पान और नारियल दिए जाते हैं। मेहमानों के चले जाने के बाद वर, वधू के साथ सोने के कमरे में चला जाता है।

पुडमुरी का यह एक वास्तविक विवरण है। अगले दिन सुबह केट्टिलवकेट्टु

या सल्काराम रस्म सम्पान की जाती है जिसमें वर की महिला रिश्तेदार वधू को वर के घर ले जाती हैं, जहां पर इस अवसर के उपलक्ष्य में दावत इत्यादि होती है।"

(हिस्ट्री आफ केरल, खंड iii, पृष्ठ २७०-२७२)

२. मद्रास सरकार द्वारा भारत सरकार को भेजे गए पत्र का अंश

मलाबार के विवाह के रीति-रिवाजों का इस प्रकार अवलोकन करते हुए मद्रास सरकार को पत्र लिखकर इसे कानूनी संज्ञा देने की सिफारिश की :

"ऐसा प्रतीत होता है कि सरकार के सम्मुख स्थिति को संक्षिप्त रूप में इस प्रकार रखा जाए -- उन जातियों में जो 'मरुमक्कत्तायम कानून' के अन्तर्गत परिचालित हैं, ऐसे लैंगिक सम्बन्धों में बंधती हैं जो उस समय तक स्थायी रहने के इरादे से किए जाते हैं जब तक कि दोनों पक्षों में से किसी एक की मृत्यु न हो जाए, अधिकांशतः ऐसा ही होता भी है; यह सम्बन्ध सार्वजनिक रूप में बंधते हैं जो सामाजिक दृष्टि में मान्य हैं और इनके साथ ही कुछ विशेष प्रकार की रस्में जुड़ी हैं जिनमें धार्मिक तत्व जैसा कुछ भी नहीं, किन्तु जो अन्यथा किसी भी अन्य स्थान पर की जाने वाली वैवाहिक रस्मों की तरह ही हैं और इन्हें भी उनकी तरह उतना ही सम्मान पाने का अधिकार है।"

(हिस्ट्री आफ केरल, iii, पृ० २९१-२९२)

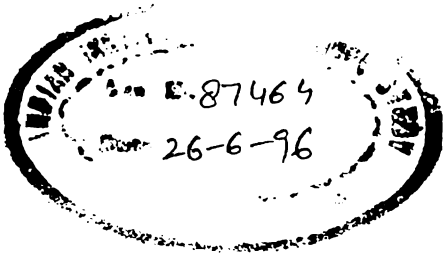

संदर्भ ग्रन्थ

मलयालम पुस्तकें	लेखक
ओय्यारत्त चन्दु मेनन	मूरकोत्तु कुमारन
नावल साहित्यम	पी० एम० पाल
मलयाल साहित्य चरित्रम्	परमेश्वरन नायर
नावल स्वरूपम	के० सुरेन्द्रन
चन्दु मेनन, ओरु पठनम्	पी० के० बालकृष्णन
इन्दुलेखा	चन्दु मेनन
शारदा	चन्दु मेनन

अंग्रेजी पुस्तकें	लेखक
इन्दुलेखा	जे० डब्ल्यू० एफ० ड्यूमर्ग
हिस्ट्री आफ केरला	के० पी० पदमनाम मेनन

I. I. A. S. LIBRARY

Acc. No.

This book was issued from the library on the date last stamped. It is due back within one month of its date of issue, if not recalled earlier.

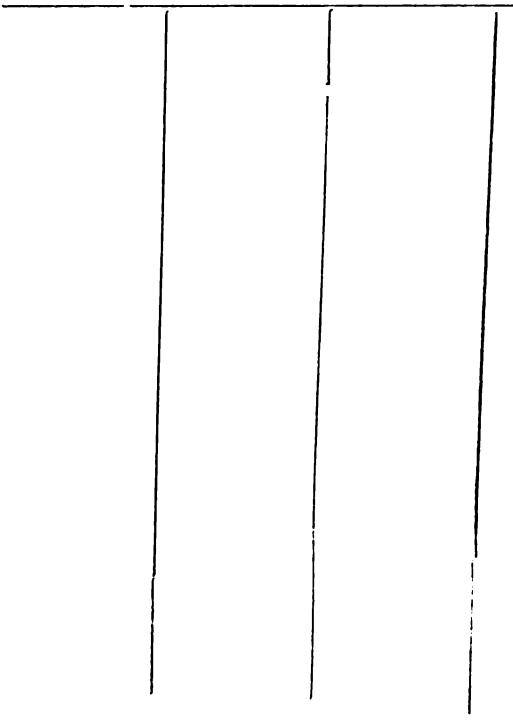

साहित्य अकादेमी भारतीय-साहित्य के विकास के लिए कार्य करने वाली राष्ट्रीय महत्त्व की स्वायत्त संस्था है जिसकी स्थापना भारत सरकार ने १९५४ में की थी। इसकी नीतियाँ एक ८२-सदस्यीय परिषद् द्वारा निर्धारित की जाती हैं जिसमें विभिन्न भारतीय भाषाओं, राज्यों और विश्वविद्यालयों के प्रतिनिधि होते हैं।

साहित्य अकादेमी का प्रमुख उद्देश्य है ऊँचे साहित्यिक प्रतिमान कायम करना, विभिन्न भारतीय भाषाओं में होने वाले साहित्यिक कार्यों को अग्रसर करना और उनका समन्वय करना तथा उनके माध्यम से देश की सांस्कृतिक एकता का उन्नयन करना।

यद्यपि भारतीय साहित्य एक है, फिर भी एक भाषा के लेखक और पाठक अपने ही देश की अन्य पड़ोसी भाषाओं की गतिविधियों से प्रायः अनभिज्ञ ही जान पड़ते हैं। भारतीय पाठक भाषा और लिपि की दीवारों को लाँघकर एक-दूसरे से अधिकाधिक परिचित होकर देश की साहित्यिक विरासत की अपार विविधता और अनेकरूपता का और अधिक रसास्वादन कर सकें, इस उद्देश्य को पूर्ति के लिए साहित्य अकादेमी ने एक विस्तृत अनुवाद-प्रकाशन योजना हाथ में ली है। इस योजना के अन्तर्गत अब तक जो ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं, उनकी वृहद् सूची साहित्य अकादेमी के विक्रय विभाग से निःशुल्क प्राप्त की जा सकती है।

इस माला में अब तक प्रकाशित हिन्दी पुस्तिकाएँ

लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ : हेम बरुआ / **बंकिमचंद्र चटर्जी :** सुबोधचंद्र सेनगुप्त / **बुद्धदेव बसु :** अलोकरंजन दासगुप्त / **चण्डीदास :** सुकुमार सेन / **ईश्वरचंद्र विद्यासागर :** हिरण्मय बनर्जी / **जीवनानन्द दास :** चिदानन्द दासगुप्त / **काजी नज़रुल इस्लाम :** गोपाल हाल्दार / **महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर :** नारायण चौधुरी / **माणिक बन्द्योपाध्याय :** सरोजमोहन मित्र / **प्रमथ चौधरी :** अरुणकुमार मुखोपाध्याय / **राजा राममोहन राय :** सौम्येन्द्रनाथ टैगोर / **ताराशंकर बन्द्योपाध्याय :** महाश्वेता देवी / **सरोजिनी नायडू :** पद्मिनी सेनगुप्त / **तरुदत्त :** पद्मिनी सेनगुप्त / **गोवर्धनराम :** रमणलाल जोशी / **मेघाणी :** वसन्तराव जटाशंकर त्रिवेदी / **नानालाल :** उमेदभाई मणियार / **नर्मदाशंकर :** गुलाबदास ब्रोकर/**भारतेन्दु हरिश्चन्द्र :** मदन गोपाल / **देवकीनंदन खत्री :** मधुरेश / **जयशंकर प्रसाद :** रमेशचन्द्र शाह / **प्रेमचन्द :** प्रकाशचन्द्र गुप्त / **राहुल सांकृत्यायन :** प्रभाकर माचवे / **रैदास :** धर्मपाल मैनी / **श्यामसुन्दरदास :** सुधाकर पाण्डेय / **बी० एम० श्रीकंठय्य :** ए० एन० मूर्तिराव / **विद्यापति :** रमानाथ झा / **ए० आर० राजराज वर्मा :** के० एम० जॉर्ज / **कुमारन् आशान :** के० एम० जॉर्ज / **महाकवि उल्लूर :** सुकुमार अषिकोड / **ज्ञानदेव :** पुरुषोत्तम यशवन्त देशपाण्डे / **हरि नारायण आपटे :** रामचन्द्र भिकाजी जोशी / **केशवसुत :** प्रभाकर माचवे / **नामदेव :** माधव गोपाल देशमुख / **नरसिंह चिंतामण केलकर :** रामचन्द्र माधव गोले / **श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर :** मनोहर लक्ष्मण वराडपांडे / **फ़कीरमोहन सेनापति :** मायाधर मानसिंह / **राधानाथ राय :** गोपीनाथ महन्ती / **सरलादास :** कृष्णचन्द्र पाणिग्राही / **सूर्यमल्ल मिश्रण :** विष्णुदत्त शर्मा / **बाणभट्ट :** के० कृष्णमूर्ति / **भवभूति :** गो० के० भट / **कल्हण :** सोमनाथ दर / **सचल सरमस्त :** कल्याण बू० आडवाणी / **शाह लतीफ़ :** कल्याण बू० आडवाणी। **भारती :** प्रेमा नन्दकुमार / **इलंगो अडिगल :** मु० वरदराजन / **कम्बन :** एस० महाराजन / **पोतन्ना :** दिवाकर्ल वेंकटावधानी। **वेदम वेंकटराय शास्त्री :** वेदम वेंकटराय शास्त्री (कनिष्ठ) / **गुरजाड :** नार्ल वेंकटेश्वर राव / **वीरेशलिंगम् :** नार्ल वेंकटेश्वर राव / **वेमना :** नार्ल वेंकटेश्वर राव / **ग़ालिब :** मुहम्मद मुजीब।